बच्चों की त्रैमासिक पत्रिका

बालप्रहरी

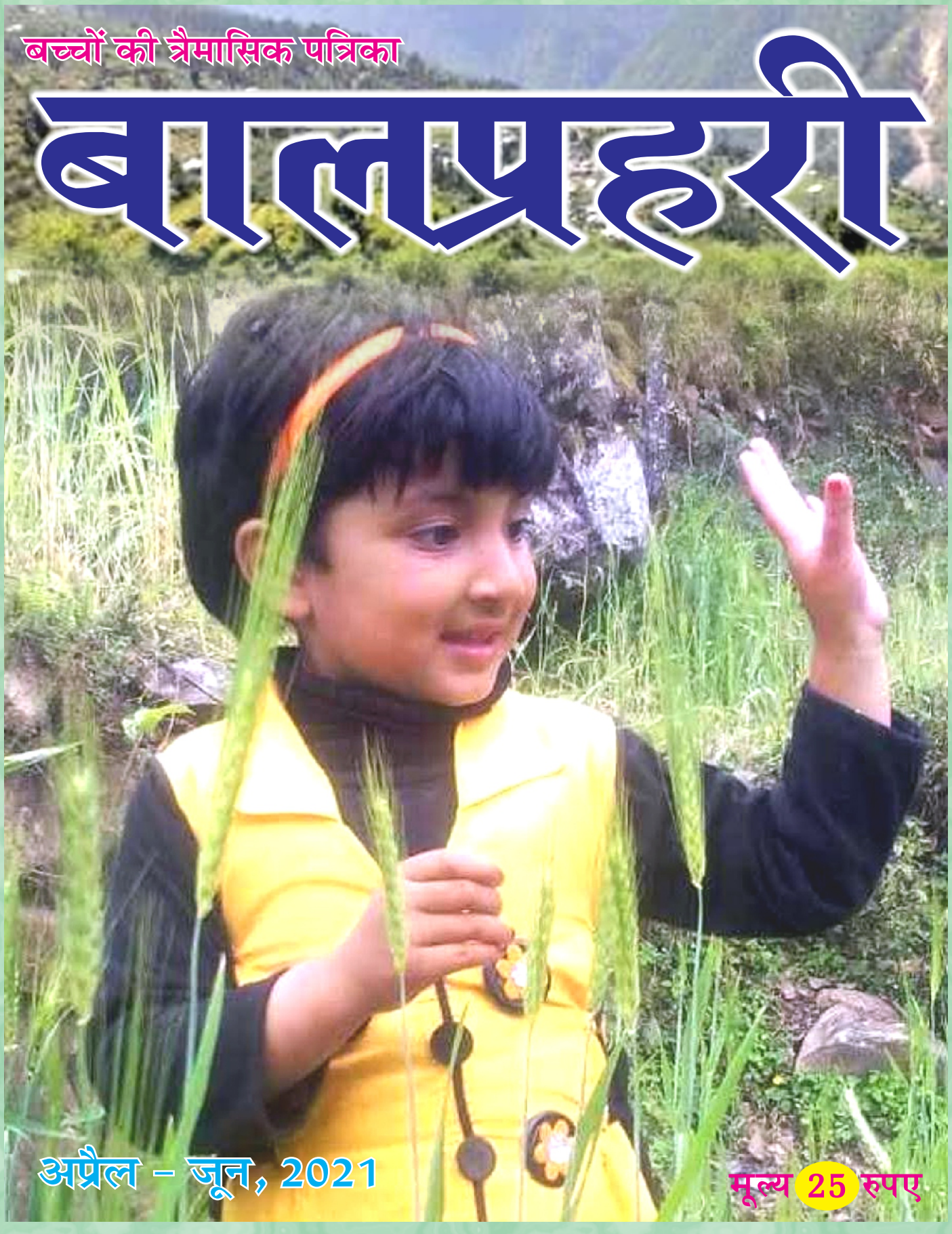

अप्रैल – जून, 2021

मूल्य 25 रुपए

उत्तराखंड का प्राचीनतम नगर : अल्मोड़ा

– उदय किरौला

कुमाऊं में कत्यूरी तथा चंद राजाओं का शासन लंबे समय तक रहा है। सन् 1560 में चंद राजाओं ने चंपावत से अपनी राजधानी अल्मोड़ा स्थानांतरित की। सन् 1560 से लगभग 1790 तक यहां चंद राजाओं ने शासन किया। सन् 1790 में गोरखाओं ने चंद राजाओं को हराकर अल्मोड़ा को अबने कब्जे में कर लिया। गोरखाओं ने सन् 1815 तक लगभग 25 वर्ष तक कुमाऊं में राज किया। सन् 1815 में अंगरेजी हुकुमत ने अपनी रणनीति से गोरखाओं से सत्ता अपने कब्जे में कर ली।

सन् 1815 में टिहरी रियासत को छोड़कर समूचा कुमाऊं व गढ़वाल क्षेत्र कुमाऊं राज्य में था। कुमाऊं जिले का मुख्यालय अल्मोड़ा में था। बाद में अंगरेजों ने 1839 में गढ़वाल जिला बनाया। जिसका मुख्यालय पौड़ी में बनाया गया। सन् 1889 में कुमाऊं जिले को दो भागों में बांटकर नैनीताल जनपद बनाया। बाद में अंगरेज कमिश्नर अल्मोड़ा के बजाय नैनीताल से प्रशासनिक कार्यों का संचालन करने लगे। तब से कुमाऊं कमिश्नरी नैनीताल में बन गई। सन् 1893 में अंगरेज आई सी एस आफीसर जेवी स्टुअर्ट को अल्मोड़ा का पहला जिला मजिस्ट्रेट नियुक्त किया गया। सन् 1947 में भारत आजाद होने के बाद सन् 1960 में कुमाऊं मंडल में अल्मोड़ा तथा नैनीताल दो ही जनपद थे। फरवरी,1960 में अल्मोड़ा जिले में पिथौरागढ़ तथा पौड़ी जनपद में चमोली तथा उत्तरकाशी नए जिले बनाए गए। अक्टूबर 1995 में नैनीताल जिले को विभाजित करके ऊधमसिंहनगर तथा सितंबर,1997 में अल्मोड़ा जिले को पुनः विभाजित कर बागेश्वर तथा पिथौरागढ़ जनपद को विभाजित कर चंपावत जनपद बनाया गया। अल्मोड़ा को उत्तराखंड का सबसे पुराना नगर माना जाता है। सांस्कृतिक,ऐतिहासिक, राजनैतिक, साहित्यिक एवं कला के क्षेत्र में अल्मोड़ा की विशिष्ट पहचान है। राजनीति के क्षेत्र में पंडित गोविंद बल्लभ पंत, कामरेड पी. सी. जोशी, डॉ. मुरलीमनोहर जोशी,साहित्य के क्षेत्र में सुमित्रानंदन पंत, शिवानी, मनोहर श्याम जोशी, इला जोशी, रमेशचंद्र साह, तथा कला के क्षेत्र में नृत्य सम्राट उदय शंकर तथा विज्ञान के क्षेत्र में अल्मोड़ा में विवेकानंद पर्वतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के संस्थापक विख्यात वैज्ञानिक वीसी सेन का यहां महत्वपूर्ण योगदान रहा है। अल्मोड़ा सांस्कृतिक गतिविधियों का केंद्र रहा है। यहां की रामलीला की अपनी अलग पहचान है। गेय पद्धति पर आधारित यहां की रामलीला में ग्रामीण कलाकार अभिनय के साथ ही अपने संवाद लय व ताल के साथ प्रस्तुत करते हैं। अल्मोड़ा का दशहरा तो विश्व प्रसिद्ध है। यहां दशहरे के दिन रावण परिवार के लगभग 2 दर्जन राक्षसों के पुतले बनते हैं। जिन्हें देखने दूर-दूर से लोग यहां आते हैं। वर्तमान में यहां गोविंदबल्लभ पंत पर्यावरण संस्थान, विवेकानंद पर्वतीय कृषि अनुसंधान संस्थान जैसे राष्ट्रीय स्तर के वैज्ञानिक संस्थान हैं। हाल ही में उत्तराखंड सरकार ने अल्मोड़ा स्थित विश्वविद्यालय परिसर को विश्वविद्यालय का दर्जा देकर उत्तराखंड के प्रथम पर्वतीय विकास मंत्री सोबनसिंह जीना के नाम पर अल्मोड़ा में सोबनसिंह जीना विश्वविद्यालय की स्थापनां की है। अल्मोड़ा की ऐतिहासिक जेल में पं.जवाहरलाल नेहरू सहित कई प्रसिद्ध क्रांतिकारियों को रखा गया। अल्मोड़ा की बाल मिठाई की भी अपनी अलग पहचान है।

जिला मुख्यालय में जहां नंदादेवी का पौराणिक मंदिर है। वहीं जागेश्वर तथा द्वाराहाट में आदिकाल के पौराणिक मंदिर देखने को मिलते हैं। अल्मोड़ा के समीप रानीखेत, कौसानी, बागेश्वर, जागेश्वर, द्वाराहाट, दूनागिरी आदि दर्शनीय एवं पर्यटक स्थल हैं। इस क्षेत्र के अधिकतर लोग 'ग्वेल ज्यू महाराज' को अपना देवता मानते हैं। अल्मोड़ा नगर से लगभग 8 किलोमीटर दूरी पर स्थित पौराणिक चितई मंदिर के दर्शन करने लोग दूर-दूर से यहां आते हैं। जिला मुख्यालय में बस स्टेशन के समीप ही गोविंदबल्लभ पंत राजकीय संग्रहालय है। जिसमें पौराणिक मूर्तियां आदि दर्शकों को देखने को मिलती हैं।

आजादी की लड़ाई में अल्मोड़ा से प्रकाशित साप्ताहिक समाचार पत्र 'अल्मोड़ा अखबार' का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। शक्ति अखबार ने प्रकाशन के 100 वर्ष पूरे कर लिए हैं। 'पुरवासी' यहां की वार्षिक साहित्यिक पत्रिका है। आजादी से पहले 1936 में अल्मोड़ा से प्रकाशित बच्चों की पत्रिका 'नटखट' ने जहां आजादी की लड़ाई में बच्चों में देश प्रेम की भावना जाग्रत की। वहीं वर्तमान में यहां से प्रकाशित बच्चों की पत्रिका 'बालप्रहरी' ने राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाई है। स्वामी विवेकानंद तथा महॉत्मा गांधी को अल्मोड़ा बहुत पसंद था। अल्मोड़ा दिल्ली, लखनऊ तथा चंडीगढ़ आदि प्रमुख स्थानों से सीधे बस सेवा से जुड़ा है। समीपवर्ती रेलवे स्टेशन काठगोदाम के लिए कोलकाता, जम्मू, दिल्ली आदि से सीधे रेल सेवा है। काठगोदाम से बस या टैक्सी से अल्मोड़ा आसानी से पहुंचा जा सकता है।

✦✦✦

RNII UTTHIN/2004/18604

वर्ष-17 अप्रैल-जून, 2021 अंक-02

संरक्षक : डॉ. सरस्वती बाली
डॉ. भैरूंलाल गर्ग
श्री नवीन पाठक
श्री विपिनचंद्र जोशी
डॉ. जे.एस. मेहता
श्रीमती मंजू पांडे 'उदिता'
श्री सुरेन्द्रसिंह नेगी
श्री मोहनलाल टम्टा
डॉ. सुनीता रतूड़ी
डॉ. आर.सी.रस्तोगी
डॉ. बी.पी. साह
श्री राजकुमार जैन 'राजन'
श्री के.पी.एस.अधिकारी
डॉ. सलमा जमाल
श्रीमती श्यामा माहेश्वरी
डॉ. दीपा कांडपाल
श्री रतनसिंह किरमोलिया
श्री नीरज पंत
श्री प्रकाश जोशी
सुश्री विनीता जोशी
श्रीमती विमला जोशी 'विभा'
डॉ. कामना सिंह
श्री महेन्द्र सिंह राणा
सुश्री प्रभा किरण जैन
सुश्री कमला मेनन
दीक्षा बिष्ट
डा.(मेजर) शक्ति राज
श्री दयानंद आर्य
श्रीमती पुष्पा पाल
श्री रविकांत खंडेलवाल
श्री संजय प्रजापति
श्री श्याम पलट पांडेय
श्री हेमचंद्र पंत
डॉ. डी. पी. चौधरी
श्री अरूण पंत
डॉ. आशा बिष्ट

संपादक : उदय किरौला
संपादकीय सहयोग: प्रमोद तिवारी, संतोष किरौला
मुख पृष्ठ : अमृता नौटियाल
कला पक्ष : मनोज विनवाल
इंटरनेट संस्करण: वेद प्रकाश

सदस्यता शुल्क

संरक्षक सदस्यता	:	5,000 रु.
आजीवन सदस्यता	:	2,000 रु.
3 वर्ष का शुल्क	:	300 रु.
एक प्रति	:	25 रु.

बालप्रहरी खाता संख्या : 0962000101357002
आई.एफ.सी कोड : पी.यू.एन.बी. 0096200
बैंक नाम : पंजाब नेशनल बैंक, अल्मोड़ा

संपर्क : संपादक बालप्रहरी : दरबारीनगर, अल्मोड़ा, उत्तराखंड-263601
मो.9412162950, 9557619107

E-mail. : balprahri@gmail.com
Web.: www.balprahri.com
Face book- udai kiroula balprahri
Whats App - 09412162950

बच्चों के नाम पाती 02
बच्चों की कलम से 04

कहानी:

प्रथम कदम	डॉ.चेतना उपाध्याय	22
सच्ची खुशी	राजेश्वरी जोशी	27
पंचर मोटर साइकिल	रघुराजसिंह 'कर्मयोगी'	28
सभी का महत्व	इंद्रा तिवारी 'इंदु'	32
पालक की करामात	सीताराम गुप्त	33
मोहब्बत की दुनिया	सुधा भार्गव	35
समुद्र में गहरी बातें	सीमा जैन 'भारत'	37
चिंटी की कहानी	निर्मला अनिल सिंह	38
बूढापे की लाठी	डॉ. महावीर रवांल्टा	39
मटके का पानी	टीकेश्वर सिन्हा 'गब्दीवाला'	41
मेला	कमलेशकुमार मिश्र	43

कविता :

निश्चित समय/अरी गिलहरी	प्रभुदयाल श्रीवास्तव/भगवतीप्रसाद द्विवेदी	19
काम महान	सुकीर्ति भटनागर	19
कुमाउनी/गढ़वाली कविता	विनीता जोशी/डॉ. उमेश चमोला	20
मामा/भालू की बारात/पौधा	सूबेदार केपी सिंह/विपिन जोशी/शशिबाला श्रीवास्तव	26
बच्चे/मैं भी उड़ती आकाश	रतनसिंह किरमोलिया/अनंतप्रसाद 'रामभरोसं'	26
मानव धम	सरोजनी कुकरेती	26
बगुला/सुंदर घर/दादी मां	डॉ. रामसहाय बरैया/राजेंद्र निशेश/शकुंतला शर्मा	29
सद्चरित्र/व्यायाम	कालिका प्रसाद सेमवाल/के.पी.पांडेय 'वृहद'	29
मच्छर	दामोदर जोशी 'देवांशु'	36
खादी और बापू जी/हमारा विश्वास	डॉ. वेदमित्र शुक्ल/डॉ. नरेंद्रनाथ लाहा	36
कोरोना को हराएंगे	नीलम शर्मा	44

जानकारी :

बालसाहित्य की थाती:जगदीश गुप्त :	डॉ. सुधा गुप्ता 'अमृता'	03
ऐसा क्यों होता है?	डॉ. घमंडीलाल अग्रवाल	21
सत्येंद्रनाथ बोस	संतोष किरौला	30
संवाद : बोलो देवीदा	देवेंद्र मेवाड़ी	31
विश्व धरोहर दिवस:18 अप्रैल	डॉ. जीवनसिंह खर्कवाल	34
बरसात में रखें अपने स्वास्थ्य का ध्यान	डॉ.महेंद्रप्रताप पांडेय 'नंद'	40
शिमला का सफर	डॉ. उमा भट्ट	47

प्रतियोगिताएं:

निबंध प्रतियोगिता-38	15	कहानी लिखो प्रतियोगिता-67	18
कविता प्रतियोगिता-67	16	सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता-66	47

अन्य :

अंतर बताओ	15	सुडोकू	16
चुटकुले/क्या आप जानते हैं?	17	पहेलियां/अनमोल वचन	19
चित्र पहेली	23	खोजबीन	30
अंक पहेली	32	रंग भरो	42
पुस्तक समीक्षा	45	पुस्तक प्राप्ति	48

बालसाहित्य संस्थान अल्मोड़ा की ओर से प्रकाशक/मुद्रक एवं संपादक उदय किरौला द्वारा प्रकाश पब्लिकेशन हल्द्वानी से मुद्रित तथा दरबारीनगर, पूर्वी पोखरखाली, अल्मोड़ा (उत्तराखंड) से प्रकाशित।
संपादक - उदय किरौला

बच्चों के नाम पाती

दोस्तो,

"लात मार के भगाओ इनको" कहते हुए कुछ लोग जोर-जोर से चिल्ला रहे थे। प्रांजल ने देखा कई लोग बच्चों को पीट रहे थे। कोई लात मार रहा था। तो कोई गाल पर चांटा मार रहा था।

बच्चों के कपड़े फटे व गंदे थे। प्रांजल ने अंदाज लगाया कि ये बच्चे बारात के तो नहीं हैं। उसने उन्हें अभी तक देखा भी नहीं था। उसने दुखी मन से अपने पापा से पूछा, "पापा! ये लोग बच्चों को क्यों पीट रहे हैं। इन बच्चों ने कोई चोरी की है क्या?"

"नहीं बेटा! इन्होंने चोरी नहीं की है। हम जिस बारात घर में आए हैं। इसके पास ही इनका घर है। ये बहुत गरीब हैं। कबाड़ बीन कर अपनी गुजर बसर करते हैं। जब भी बारात घर में बारात होती है। तब ये बारात की जूठन इकट्ठा करके खाते हैं। कुछ लोग इन्हें भोजन दे भी देते हैं। भोजन मिलने की आशा में देखो बहुत से बच्चे उधर बैठे हैं। इन बच्चों में से कुछ बच्चे हिम्मत करके बारातियों के साथ भोजन करने आ गए। इसलिए इनकी पिटाई हो रही है।" बच्चे के प्रश्न का उत्तर देते हुए प्रांजल के पापा ने कहा।

"पापा जी! हमारे साथ के बच्चे कह रहे थे। जब बारात में काफी भोजन बच जाता है। तब बारात घर वाले उस भोजन को जमीन खोदकर मिट्टी में दबा देते हैं। उस भोजन को गरीबों में क्यों नहीं बांटा जाता है?" प्रांजल ने फिर पूछा।

प्रांजल की बात का उत्तर देते हुए पापा ने कहा, "बेटा! बारात घर में रोज ही कार्यक्रम होते हैं। एक बारात का भोजन निबटाने के बाद दूसरे बारात की तैयारी करनी होती है। कभी-कभी तो अलग-अलग ठेकेदार अलग-अलग दिन आते हैं। इस कारण उन्हें अपने बरतन खाली करने की जल्दी होती है। शायद इस कारण भोजन को मिट्टी में दबा देते होंगे।"

पापा की बात सुनकर प्रांजल दुखी हुआ। बच्चों को मारते देख वह पहले ही दुखी था। उसका दिल अंदर से दहक रहा था। अचानक उसके मुख से निकला, "ठहरो! बच्चों को क्यों मार रहे हो? ये केवल खाना ही तो मांग रहे हैं न। इन बच्चों को भरपेट भोजन खिला दोगे। ये तुम्हें दुआएं देंगे।"

प्रांजल को चुप कराते हुए उसके पापा ने कहा, "बेटा! बारात वाले नाराज हो जाएंगे। कहेंगे इन्होंने हमारी शादी में झगड़ा करवा दिया है। इसलिए चुप हो जाओ न।"

शोरगुल सुनकर दुल्हन के पापा आ गए। उन्होंने प्रांजल से बात की। प्रांजल ने अपने मन की बात दुल्हन के पापा से कही। दुल्हन के पापा ने प्रांजल को गले लगाते हुए कहा, "प्रांजल! मैं तुमसे बहुत प्रभावित हूं। तुम्हारी बातें मुझे बहुत अच्छी लगी।" कहते हुए उन्होंने भोजन बनाने वाले कारीगर को बुलाकर कहा, "दीवार में बैठे सारे गरीब बच्चों और गरीब लोगों को भी भोजन करा देना।" कहकर वे विवाह की तैयारी में लग गए।

दुल्हन के पापा का आदेश मानते हुए कारीगरों ने सारे गरीब व असहाय लोगों को भोजन करवा दिया। विवाह संपन्न हुआ। बारात विदा हुई। प्रांजल के साहस की सब लोग तारीफ कर रहे थे। कोई दुल्हन के पापा की तारीफ करता। कोई बच्चों को मारने वालों की निंदा करता।

उस दिन के बाद प्रांजल को अपनी बात कहने का साहस बढ़ गया। उसकी सोच बदल गई। अब वह भोजन की बरबादी न करने व गरीबों को भोजन कराने की बात सोचता। उसने अपने पापा से कहा, "पापा! हमारे यहां समारोहों में खाते-पीते लोगों को बुलाया जाता है। जो रोज ही कोई न कोई पकवान खाते हैं। जरूरत है गरीब व असहाय लोगों को भोजन करवाने की।"

प्रांजल की बात सुन उसके पापा भी प्रभावित हुए। उन्होंने प्रांजल के जन्म दिन पर गरीब बच्चों को आमंत्रित करने का मन बनाया। आमंत्रण देने की जिम्मेदारी प्रांजल को दी गई। इस बार प्रांजल ने अपने सभी दोस्तों को जन्म दिन पर आमंत्रित किया। सबसे पहले वह झुग्गी झोपड़ी में रह रहे अपने दोस्तों के घर गया। जबकि पिछले साल तक वह कुछ ही बच्चों को बुलाता था। जन्म दिन पर आए सभी दोस्तों का उसने स्वागत किया। आज प्रांजल वास्तव में बहुत खुश था।

बालप्रहरी का यह अंक तुम्हें कैसा लगा, जरूर लिखना। बालप्रहरी की ऑनलाइन कार्यशालाओं में जुड़कर आप ऑनलाइन कविता, कहानी व त्वरित भाषण आदि में प्रतिभाग कर सकते हैं। इसके लिए आप मोबाइल नंबर 9412162950 पर संपर्क कर सकते हैं। तुम्हारे पत्र/फोन की प्रतीक्षा करूंगा।

- तुम्हारा दोस्त
उदय किरौला

बालसाहित्य की थाती :

बालसाहित्यकार : जगदीश गुप्त

बालसाहित्यकार जगदीश गुप्त जी का जन्म 4 अक्टूबर, 1946 को सागर मध्य प्रदेश में हुआ। बच्चों के लिए उन्होंने काफी रचनाएं लिखी। वे राष्ट्रीय स्तर की कई साहित्यिक संस्थाओं से जुड़े थे। कई संस्थाओं से सम्मानित जगदीश गुप्त जी 29 अप्रैल, 2021 को कोरोना महामारी से लड़ते हुए हम सबको छोड़कर चले गए। यहां उनकी कुछ बाल कविताएं दी जा रही हैं। बालप्रहरी एवं बालसाहित्य संस्थान की ओर से श्रद्धांजलि। – संपादक

आह जलेबी

आह जलेबी, वाह जलेबी,
सबके मन की चाह जलेबी।
सुबह जलेबी शाम जलेबी,
लगती ज्यों मधुमास जलेबी।
दूध जलेबी, दही जलेबी,
खाते कहते वाह जलेबी।
गरम जलेबी कड़क जलेबी,
मन भावे रसधार जलेबी।
मचल-मचल कर घी में तैरे,
तैया की मुस्कान जलेबी।
गरम चाशनी में जब डूबे,
बनती मीठी कड़क जलेबी।
और न कोई मीठा भाए,
नाश्ते की शाहकार जलेबी।
संग समोसे का मिल जाए,
फिर तो वाह वाह जलेबी।
मिल जाए तो वाह जलेबी,
नहीं मिले तो आह जलेबी।
सभी वर्ग का साथ निभाए,
समता की पहचान जलेबी।
मीठी-मीठी बातें करती,
मुंह में जाकर खास जलेबी।
हम भी मीठी वाणी बोलें,
सीख सिखाती सदा जलेबी।
अब के सब मिल बैठ के खाएं,
मीठी खुशबूदार जलेबी।

ठंड का मौसम

ठंड का मौसम,
फलों का मौसम।
बच्चों की,
सेहत का मौसम।
पालक मेथी,
चने की भाजी।
लाल टमाटर,
मटर का मौसम।
गोभी मूली,
नीबू गाजर।
सब कुछ यह,
मिलने का मौसम।
पापा मम्मी,
प्लान बनाते।
पिकनिक पर,
जाने का मौसम।
सूरज जल्दी,
डूबकर कहता।
घर में दुबका,
ठंड का मौसम।

बुंदेली बाल कविता

कैसी गरमी पड़ र भैया,
घर के बाहर कबे हम खेलें।
गुल्ली डंडा और कबड्डी,
घर के भीतर कैसे खेलें।
अबै तो दिन के दस बजत है,
आगी उगलत है जो सूरज।
कौआ चिरैया और कबूतर,
अपने प्राण बचावे फिर रए।
मारे गरमी गरो सुखात है,
हमें तो ठंडो पानी मिल जे।
इन पांखी खों प्यास लगी है,
प्रान बचाबे दो दो पर र।
अच्छो काम करें सब मिलकें,
इनके लानें पानी रख दें।
अगली बारिश में हम भी,
कछू तो पौधा रोप कें रख दें।

संकलन : सुधा गुप्ता, कटनी, मध्य प्रदेश

श्रद्धांजलि

दुखद समाचार है कि बीते दिनों बालसाहित्यकार विनोद चंद्र पांडे 'विनोद', चक्रधर नलिन, शंकर सुल्तानपुरी, अहद प्रकाश, सुरेश गौतम, जहीर कुरैशी, कमलेश द्विवेदी, विभा देवसरे, शंभुलाल शर्मा 'वसंत', बृजनंदन वर्मा, नरेंद्र कोहली, जगदीश गुप्त, सुधा जौहरी, सुरेश गौतम, शिव अवतार रस्तोगी 'सरस', दुर्गाप्रसाद शुक्ल 'आजाद', उमाशंकर उपेक्षित आदि बालसाहित्यकार तथा बालप्रहरी के संरक्षक पर्यावरणविद् डॉ. जे.एस.मेहता, सेवा निवृत्त आयकर आयुक्त वी.पी.साह, डॉ. शेरसिंह बिष्ट, जमनालाल बायती, मथुरादत्त मठपाल, अनिल पुनेठा आदि शुभचिंतक हम से बिछुड़े हैं।

दिवंगत साहित्यकारों एवं शुभचिंतकों को बालप्रहरी/बालसाहित्य संस्थान तथा साहित्य प्रेमियों की ओर से श्रद्धांजलि।

कोरोना की आत्मकथा

मैं कोरोना वायरस हूं। मैं मानव के बाल की तुलना में 100 गुना छोटा हूं। माइक्रोस्कोप से मैं क्राउन या मुकुट जैसा दिखाई देता हूं। मेरी उत्पत्ति चीन के वुहान शहर से हुई। आज तो घर-घर लोग मेरे नाम से ही डर जाते हैं। मलेरिया और दूसरी सभी बीमारियों से मेरा खौफ लोगों में ज्यादा है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने मेरा नाम COVID-19 रखा है। मेरा संबंध वायरसों के ऐसे परिवार से है। जिनके संपर्क में आते ही मनुष्य को जुकाम, बुखार, सांस लेने में परेशानी जैसे लक्षण दिखते हैं। मेरी पहुंच संसार के लगभग 185 देशों तक है। मेरी उत्पत्ति

जानवरों से हुई। मैं मनुष्य की कोशिका में आते ही सक्रिय हो जाता हूं। एक प्राणी से दूसरे प्राणी में मेरा वायरस कब चले गया। किसी को पता तक नहीं चल पाता है। मैं किसी के साथ भेदभाव नहीं करता। चाहे राजा हो या रंक, अमीर हो या गरीब। मैं ऐसा कुछ नहीं देखता। जो लोग पारंपरिक भोजन लेते हैं। जिनके शरीर में रोग निरोधक क्षमता होती है। उन तक मेरी पहुंच नहीं होती। सरकार और जागरूक लोग मास्क लगाने, सेनेटाइजर का प्रयोग करने तथा सामाजिक दूरी बनाने की बात करते हैं। जिससे मैं चला जाऊं। परंतु कुछ लोग मुझे भगाना नहीं चाहते। वे बाजारों व समारोहों में भीड़ में शामिल हो रहे हैं। इस कारण अभी कुछ दिन तक मैं यहां रहने के लिए मजबूर हूं।

अब तो अलग-अलग रूपों में आने लगा हूं। यानी मेरे साथ फंगस एवं दूसरे मेरे परिवार के सभी दोस्त अपना रूप बदलकर मानव से दोस्ती कर रहे हैं। मुझे किसी से दोस्ती करने का शौक नहीं है। आप सब चाहें तो तो कोविड नियमों का पालन करके मुझसे दूरी बना सकते हैं। आप मुझसे दूरी बनाएंगे। तब भी मैं बुरा नहीं मानूंगा। क्योंकि मेरी वजह से लोग दम तोड़ रहे हैं। सच कहूं मुझे भी अच्छा नहीं लगता है। आप थोड़ी सी सावधानी रखें। मैं इस संसार से चला जाऊंगा।

- आदित्य जोशी, कक्षा-7
जिम कार्बेट इंटरनेशनल स्कूल बागेश्वर

भारत की बेटी

पढ़ रही हूं बढ़ रही हूं नभ तक जाऊंगी,
आसमान के सारे तारे तोड़कर लाऊंगी।
वीर बनूं में धीर बनूं,कुछ कर दिखलाऊंगी,
भारत की बेटी हूं जग में नाम कमाऊंगी।
मुझको चिड़िया मत समझो, जो बंद रहे पिंजरे में,
कठपुतली न समझो जो नाचूंगी मैं उंगली में।
रंग-बिरंगी तितली हूं मैं, बस उड़ते ही जाऊंगी,
भारत की बेटी हूं मैं, जग में नाम कमाऊंगी।
चित्रकार बन चित्र बनाऊं, मैं झांसी की रानी के,
गीतकार बन गाथा गाऊं, मैं तीलू रौतेली की।
अपने मन के सब सपने, मैं सच कर दिखलाऊंगी,
भारत की बेटी हूं जग में नाम कमाऊंगी।
टीचर, डॉक्टर बनूं मैं, चाहे इंजीनियर बन जाऊं,
एस्ट्रोनट बन चांद और मंगल पर भी मैं जाऊं।
सैनिक बनी तो दुश्मन को मैं सबक सिखाऊंगी,
भारत की बेटी हूं जग में नाम कमाऊंगी।
बछेंद्री दीदी को देखो,पर्वत पर चढ़ बैठी,
ग्यारह वर्ष की राखी देखो, बाघ से भी लड़ बैठी।
निडर बनूं में अपनी रक्षा खुद कर पाऊंगी,
भारत की बेटी हूं जग में नाम कमाऊंगी।

- पूर्वांशी ध्यानी, कक्षा-8
राजकीय आदर्श इंटर कालेज धूमाकोट, पौड़ी

मेरा गांव - बगड़ी

मेरे गांव का नाम बगड़ी है। यद्यपि मेरे गांव में लगभग सभी आवश्यक सुविधाएं हैं परंतु गांव में पानी के नल तथा हैंडपंप हैं परंतु कई परिवारों को अभी तक पेयजल सुविधा नहीं मिल पा रही है। गांव में यद्यपि राजकीय प्राथमिक विद्यालय है परंतु केवल एक ही शिक्षक तैनात है। उन्हें पढ़ाई के साथ ही प्रशासनिक कार्य तथा विभागीय प्रशिक्षण एवं बैठकों में समय-समय पर जाना होता है। इस कारण अधिकतर अभिभावकों ने अपने बच्चे प्राइवेट स्कूल में भर्ती कर दिए हैं। गांव में सूंअर तथा बंदरों का आतंक है। जिस कारण फसल को काफी नुकसान होता है। गांव की सुरक्षा के लिए गांव में स्ट्रीट लाइट का होना भी जरूरी है।

- देवरक्षिता नेगी, कक्षा- 5
बाल विकास विद्या मंदिर भटकोट, चौखुटिया,अल्मोड़ा

बच्चों की कलम से :

घी त्यौहार

कुमाऊं में लगभग हर महीने कोई न कोई त्यौहार मनाया जाता है। भादो (भाद्रपद) महीने में एक गते को (अगस्त 15 के आस-पास) यहां घी संक्रांति का त्यौहार मनाया जाता है। इस त्यौहार में अनिवार्य रूप से घी खाने की परंपरा है। किवदंती है जो इस त्यौहार के दिन घी नहीं खाता है वह अगले जन्म में गनेल यानी घोंघा की योनी में जन्म लेता है। इस डर से लोग इस त्यौहार में घी का सेवन जरूरी करते हैं। जिनके पास खाने को घी नहीं होता है वे अपने सिर में घी रखकर इस परिपाटी का निर्वहन करते हैं। घी के पकवान बनाकर खाते हैं। इस दिन अरबी के बिना खिले पत्ते जिन्हें गाबा कहा जाता है। इन्हें मंदिर में चढ़ाने की परंपरा है। कुछ लोग भुट्टे, अखरोट व दूसरे फल व घर में उगने वाली सब्जियां भी मंदिरों में चढ़ाते हैं। आज तो लोग दूध, दही व घी गांवों में बेच कर अपनी आजीविका चला रहे हैं। एक जमाना था जिसके घर में दूध, दही व घी नहीं होता था। दूसरे लोग उन्हें उपलब्ध कराते थे। प्राचीनकाल में इस दिन अपने से बड़ों को घर की सब्जियां आदि उपहार देने की परंपरा थी। इस कारण इस त्यौहार को 'ओग' या 'ओगल' का त्यौहार भी कहा जाता है।

- सूरज परिहार, कक्षा-10 रा.इ.का.चौमूधार, अल्मोड़ा

काफल

काफल पाको मैंल नि चाखो,
एक चिड़िया कहती है।
जंगल में मिलता मुफ्त यह,
मेरी मां जी कहती है।
महंगा बिकता है काफल,
इसका सब रोजगार करें।
जंगल से तोड़कर लाएं,
बाजार में इसे बेचा करें।

- राखी, कक्षा-8
सरस्वती शिशु विद्या मंदिर कौसानी

काफल

पहाड़ में होता है,
खट्टा मीठा रसीला फल।
कच्चे में हरा, पक कर लाल,
इसको कहते हैं काफल।
जंगल में होता यह,
मुफ्त में मिल जाता है।
जो बेचता बाजार में इसे,
जेब खर्च वह पाता है।

- अंजली आर्या, कक्षा-10
रा.इ.का.अंडोली, अल्मोड़ा

कंप्यूटर

टीवी जैसा मेरा मॉनीटर,
की बोर्ड संग में रहता है।
फाइल निकालूं झटपट मैं,
मालिक मुझे जो कहता है।
माउस मेरा साथी है,
सर्च वहीं तो करता है।
कैसे करूं मैं उससे दोस्ती,
जो मुझसे ही डरता है।

- स्मिता कुंवर, कक्षा-9
राजकीय इंटर कालेज हरमनी,चमोली

आदत

कुछ लेना ही क्यों जानो,
कुछ देना भी तो जानो।
सवाल पूछना भी तुम सीखो,
सवाल का उत्तर भी जानो।
बड़ों से मिलेगा मान तुम्हें,
आदर देना भी जानो।
ढूंढो मत दूसरों की गलती,
अपनी गलत सुधारना जानो।
परेशानी क्या होती मत जानो,
क्यों आती तुम ये जानो।
तुम को लज्जा क्यों आती,
बिन लज्जा चलना जानो।

- रितिक कुमार, कक्षा-9
रा.इ.का.नौकुचियाताल,नैनीताल

गरमी

आया गरमी का महीना,
अपने साथ पसीना लाया।
चमकाता सूरज निज किरणें,
ढूंढ रहे सब शीतल छाया।
पानी खूब जमकर पीना,
खाओ रोज रसीले फल।
गरमी से बचकर रहना,
यही स्वास्थ्य का असली हल।

- अनामिका प्रजापति, कक्षा-10
सेमस्टार ग्लोबल स्कूल, नैनी, प्रयागराज, उ.प्र.

मां

मां जैसा इस दुनिया में,
और कोई नहीं होता है।
मां का जो करे सम्मान,
वह मां का प्यारा होता है।
मां होती है पालनहार,
जीवन हमें वह देती है।
बच्चों के सुख के लिए,
सब कुछ न्यौछावर करती है।

- शिवानी, कक्षा 7
रेनेसा नर्सरी एंड स्कूल गंगोलीहाट,पिथौरागढ़

बच्चों की कलम से :

दादी

अल्मोड़ा से दादी आई,
साथ में बाल मिठाई लाई।
एक -एक बाल सभी ने खाया,
बाल सभी को खूब भाया।
खाकर सबने मौज मनाई,
दादी आई दादी आई।

- प्रियदर्शिनी खोलिया, कक्षा-4
दीक्षांत इंटरनेशनल स्कूल हल्द्वानी

फल

फल खाने से आती ताकत,
हमें फल भी खाने हैं।
सेब अनार और नाशपति,
इन के लाभ बताने हैं।
फलों के नित सेवन से
रोग भी भाग जाते हैं।
रोग उनसे रहता दूर,
जो रोज ही फल खाते हैं।

- सौरभ चौधरी, कक्षा-8
द्रोण पब्लिक स्कूल द्वाराहाट

टमाटर

सब्जी का तुम स्वाद बढ़ाते,
टमाटर तुम लगते कमाल।
सबके संग मिल जाते हो,
गोल हो तुम लाल-लाल।
सबके संग मिल जाते तुम,
सलाद में तुम भाते हो।
मन खुश हो जाता मेरा,
जब मुझे दिख जाते हो।

- निहारिका शर्मा, कक्षा-2
शेमॉक हिल्स स्कूल देहरादून

पहाड़ की महिलाएं

पहाड़ के महिलाओं की जिंदगी पहाड़ सी है। यहां गांव की महिलाएं सुबह जल्दी उठती हैं। घर, आंगन व गौशाले की सफाई, जानवरों को चारा देना, दूध दुहना, घर व जानवरों के लिए दूर से सिर पर रखकर पानी लाना, जंगल से लकड़ी, पिरूल व चारे की व्यवस्था करना सब उसी के हिस्से में होता है। हल जोतने का काम अधिकतर पुरुष करते हैं परंतु अन्य काम अधिकतर महिलाओं को ही करने होते हैं। यहां पहाड़ के गांवों में कुछ आदमी ताश खेलकर दिन बिता देते हैं। हमारी सरकार ने गांव-गांव में शराब की दुकानें खोल दी हैं। शाम को आदमी लोग शराब पीकर घर को आते हैं। अपने बच्चों व पत्नी को पीटते हैं।

कुछ आदमी भी मेहनती होते हैं। दिन भर मेहनत करते हैं। शाम को शराब जरूर पीते हैं। बच्चों के स्कूल की फीस जमा हो या न हो शराब की लत में पैसा बरबाद करते हैं। किसी-किसी महिला का जीवन तो बिल्कुल नरक बनकर रह जाता है।

- हर्षिता आर्या, कक्षा-8
रा.क.जूनियर हाईस्कूल जैनोली, अल्मोड़ा

मां

भूख लग जाती जब मुझे,
तब खाना मुझे खिलाती मां।
भूखा रहकर खाली पेट,
हमको खूब हंसाती मां।
बच्चों को खुश रखकर,
खुश हो जाती मेरी मां।
मां को नमन करती हूं,
कितनी प्यारी मेरी मां।

- अमृता, कक्षा-10
राजकीय कन्या इंटर कालेज स्याल्दे

मेरी नानी

मां की मां है नानी,
सब बच्चों को भाती है।
बच्चों को प्यारी लगती,
कहानी रोज सुनाती है।
मेरी नानी सुंदर नानी,
नानी को मैं करूं सम्मान।
मुसीबत जब भी आती है,
नानी निकालती है समाधान।

- कोमल राणा, कक्षा-7
राजकीय इंटर कालेज कोटबांगर,
रुद्रप्रयाग

मच्छर

चिकनगुनिया और मलेरिया,
मच्छर से ये होते रोग।
साफ-सफाई का रखो ध्यान,
तभी रहेंगे सब निरोग।
साफ सफाई यदि रहेगी,
मच्छर पनप नहीं पाएगा।
जो भी लापरवाह रहेगा,
वह ही यहां पछताएगा।

- अवंतिका जोशी, कक्षा-10
जिम कार्बेट इंटरनेशनल स्कूल बागेश्वर

स्वच्छता

हम स्वच्छता के रखवाले,
भारत को स्वच्छ बनाएंगे।
अभियान चलाकर हम सब,
स्वच्छता के लाभ बताएंगे।
जागरूक हो जाएं सभी,
ये अभियान चलाना है।
कूड़ा कूड़ेदान में डालें,
सबको ये बताना है।

- कुनाल कुमार, कक्षा-8
रा.उ.प्रा.विद्यालय बिजरौली, नैनीताल

बच्चों की कलम से :

मां

बच्चा पहला शब्द बोलता,
वह प्यारा शब्द है 'मां',
उंगली पकड़कर बच्चा चलता,
वह है उसकी प्यारी मां।
सुख दुख में साथ रहती,
वह है उसकी प्यारी मां।
खुद जागकर उसे सुलाती,
वह होती है प्यारी मां।

- दिया, कक्षा-8
सावन पब्लिक स्कूल सिरसा, हरियाणा

हवा

सर्र सर्र सर्र सर्र चली हवा,
ये सबके मन को भाती है।
गरमी को दूर भगाती ये,
ताजगी का एहसास कराती है।
प्रकृति का उपहार है ये,
इससे मिलता हमको जीवन।
पर्यावरण हमारा साफ रहे,
महकाए सब घर उपवन।

- सानिया अंसारी, कक्षा-10
एम के पी इंटर कालेज देहरादून

पेड़

छाया हमको देते पेड़,
हमको देते है फल-फूल।
शुद्ध हवा हमको देते,
स्वयं ग्रहण करते हैं धूल।
उपकारी होते हैं पेड़,
हम सब भी पेड़ लगाएं।
पानी का भंडार बढ़ाते,
बात सभी को ये बताएं।

- चित्रा जोशी, कक्षा-8
सरस्वती विद्या मंदिर रामगढ़,नैनीताल

बल्ब

आविष्कार किया एडीसन ने,
उजाला सबको करता है।
अंधेरे में इसे जलाकर,
नहीं कोई अब डरता है।
जरूरत न हो जब इसकी,
बटन इसका बंद करना है।
बिजली की न हो बरबादी,
बल्ब का ये कहना है।

- सृष्टि कक्षा-8
रा.उ.प्रा.वि. देवनगर, चोपड़ा, रुद्रप्रयाग

नशे की प्रवृत्ति

युवाओं के साथ ही आजकल के बच्चे भी नशे की लत में फंसते जा रहे हैं। इसका कारण है बच्चों में सहनशीलता की कमी। बच्चा सबसे अधिक अपने आस-पास के वातावरण से सीखता है। नशे की लत नामक प्रदूषण बच्चों को अपना शिकार बना रहा है। आज का बच्चा अच्छी आदतों के बजाय बुरी आदतें जल्दी सीखता है। जिसमें नशे की प्रवृत्ति भी एक समस्या बनकर उभर रही है। बच्चों में बढ़ रही नशे की प्रवृत्ति को रोकना होगा। अन्यथा यह केवल परिवार के लिए ही नहीं समाज व देश के लिए एक अभिशाप बन जाएगा। इसके लिए अभिभावकों को बच्चों से मित्रवत व्यवहार करते हुए उनके मनोविज्ञान को समझना होगा।

- सुदर्शन सोराड़ी,कक्षा-12
पार्वती प्रेमा जगाती सरस्वती विहार, नैनीताल

कोरोना

कोरोना है खतरनाक,
ये एक महामारी है।
इससे बचकर रहना,
दुनिया इससे हारी है।
कोरोना से बचना है,
सबको मास्क लगाना है।
साबुन से धोओ हाथ,
सब को ही बताना है।
ऑनलाइन पढ़ाई करना,
कोरोना ने सिखा दिया।
हमेशा हाथ धोने हैं,
कोरोना ने बता दिया।

- गौरव पलड़िया, कक्षा-8
रा.इ.का.नौकुचियाताल, नैनीताल

प्यारी दादी

मेरी दादी प्यारी दादी,
रहती हूं मैं उनके संग।
बार-बार मुझे समझाती,
करते रहती उनको तंग।
तनिक भी न आराम करे,
कुछ न कुछ करते रहती।
जीवन में कुछ करना है तो,
पढ़ाई करो वे मुझसे कहती।

- हितैषी तिवारी, कक्षा-6
ए पी एस लामाचौड़, हल्द्वानी

बाल मिठाई

पटाल बाजार के नाम से,
अल्मोड़ा जग में छाया है।
अल्मोड़ा की बाल मिठाई ने तो,
जग में नाम कमाया है।
स्वच्छ वातावरण यहां का,
पर्यटक भी यहां आते हैं।
यहां की बाल मिठाई को,
अपने संग ले जाते हैं।

- गर्विता तिवारी, कक्षा-8
सेंट एग्नेस जू.हा. अल्मोड़ा

बच्चों की कलम से :

देश

भारत मेरा देश,
यहां मिलकर रहते भाई।
सभी भारत के निवासी,
हिंदु मुस्लिम सिख इसाई।
पहाड़ और नदियां,
ये दुनिया में न्यारा।
हम यहां के निवासी,
ये हिंदोस्तां हमारा।

- तनवी पुनेठा, कक्षा-4
विजडम नर्सरी एंड स्कूल पिथौरागढ़

कोरोना

कारोना लाया है महामारी,
इससे सबको बचना है।
अनावश्यक न निकलें घर से,
मास्क पहनकर चलना है।
हाथ न मिलाएं किसी से,
मेरे नाना कहते हैं।
सेनेटाइजर का करो प्रयोग,
घर में सब ही कहते हैं।

- लक्ष्य उन्मुख कांडपाल, कक्षा-5
यूनिवर्सल कांवेंट स्कूल हल्द्वानी

पुस्तक

पुस्तक का महत्व जाना जिसने,
वह आगे बढ़ पाया है।
ज्ञान का भंडार है पुस्तक,
स्कूल में हमें बताया है।
सच्ची दोस्त होती है पुस्तक,
हमको देती है ये ज्ञान।
पुस्तक से जो करे दोस्ती,
बन जाता है वह महान।

- मीनाक्षी रौतेला, कक्षा-8
रा.उ.प्रा.वि.छतरपुर, ऊधमसिंहनगर

पॉलीथीन

पॉलीथीन को मत जलाओ,
ये प्रदूषण फैलाता है।
कई बीमारी इससे होती,
जी का जंजाल बन जाता है।
न गलता न सड़ता है,
जमीन में इसे मत दबाओ।
पर्यावरण शुद्ध रखना है,
बात सभी को ये बताओ।
कपड़े का थैला ले जाओ,
जब भी बाजार जाना है।
पॉलीथीन को बॉय बॉय,
झोले में सामान लाना है।

- कु. आस्था बड़म्वाल, कक्षा-8
रा.इ.का.कोटबांगर, रुद्रप्रयाग

मां

रूठ जाऊं मैं अगर,
मनाना जानती है मां।
अगर मैं रोऊं तो,
हंसाना जानती है मां।
मेरी हर परेशानी,
चुटकी में हल करती है मां।
मां से बढ़कर दोस्त,
मेरी बकवास सुनती है मां।

- हर्षिता पुजारी, कक्षा-6
रा.इ.कालेज कोटाबाग, नैनीताल

ऑनलाइन पढ़ाई

कोरोना में हम सबकी,
हुई ऑनलाइन पढ़ाई।
मोबाइल भी मिला हमें,
नहीं हुई कहीं ढिलाई।
टेलीजिवन देखकर भी हमने,
सीखी पुस्तक की बातें।
मोबाइल के चक्कर में कई,
करते रहे खुरापातें।

- शीतल बुटौला कक्षा-7
रा.उ.प्रा.विद्यालय देवनर, चोपड़ा, रुद्रप्रयाग

मोबाइल

मोबाइल है दोस्त हमारा,
लॉकडाउन में सबसे प्यारा।
पढ़ने लिखने और समझने,
यही है बस एक सहारा।
समय काटने लॉकडाउन में,
खेलों ने हमें ललकारा।
फ्री फायर में जीता कोई,
तो कोई पबनी से हारा।

- रचित शक्टा, कक्षा-4
उदयन इंटरनेशनल स्कूल चंपावत

शौचालय

साफ रखना है गांव को,
शौचालय अब सभी बनाओ।
बच्चे बूढ़े सभी मान लो,
झाड़ी जंगल खेत न जाओ।
शौचालय सब घरों में होंगे,
गांव का होगा सम्मान।
जागरूक होगा गांव हमारा,
सहना नहीं होगा अपमान।

- खुशी रावत, कक्षा-8
रा.आ.उ.प्रा.वि. हरमनी, चमोली

बच्चे

हम हैं प्यारे-प्यारे बच्चे,
नन्हे मुन्ने सारे बच्चे।
मां की आंख के तारे बच्चे,
भोले-भाले सारे बच्चे।
हुड़दंग करते प्यारे बच्चे,
अपनी बात मनाते बच्चे।
नेहरू जी के प्यारे बच्चे,
मेहनत खूब करते बच्चे।

- तरूनसिंह नेगी, कक्षा-10
शारदा पब्लिक स्कूल अल्मोड़ा

बच्चों की कलम से :

कुल्फी

स्वादिष्ट व ठंडी कुल्फी,
गरमी में सबको भाती है।
अलग-अलग रंगों में यह,
नए-नए स्वाद में आती है।
खाने से पहले सोचो तुम,
इसकी शुद्धता पर मनन करो।
कैसे पानी से बनी होगी ये,
इस पर भी तुम चिंतन करो।

- चित्रांशी लोहनी कक्षा-5
माउंट कार्मल स्कूल चंपावत

सब्जी

सब्जी तेरे नाम अनेक,
सबके काम तू आती है।
घटते बढ़ते तेरे दाम,
सबकी भूख मिटाती है।
रोता हूं मैं तूझे देखकर,
फिर भी तुमको खाता हूं।
ताकत मेरी खूब बढ़ेगी,
ये अपनी सोच बनाता हूं।

- उत्कर्ष धपोला, कक्षा-7
जिम कार्बेट इंटरनेशनल स्कूल बागेश्वर

टेलीविजन

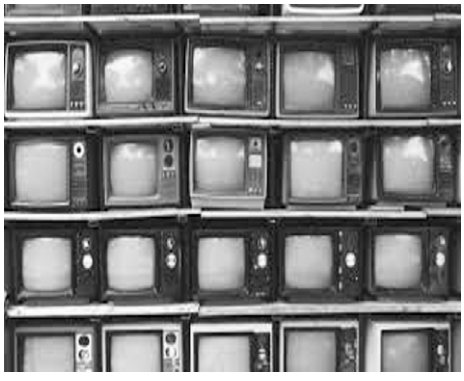

टेलीविजन सबको भाता है,
ये है ज्ञान का भंडार।
मनोरंजन हमारा करता ये,
इसमें देश दुनिया का सार।
देश विदेश की सैर कराता,
सीरियल भी हमें दिखाता है।
बच्चों के इसमें अलग सीरियल,
बच्चों को खूब भाता है।
आंखें हो जाती इससे खराब,
दूर से ही देखा करें।
सीरियल समाचार और विज्ञान,
क्या देखें ये मनन करें।

- शिवांशु रावत, कक्षा-8
रा.इ.का.कोटबांगर,रुद्रप्रयाग

वृक्ष

धरती की शोभा बढ़ाते,
वृक्ष होते हमारे मित्र।
बिना वृक्ष के हम नहीं,
दुनिया को ये करें पवित्र।
वृक्षों से होती है,
दुनिया में हरियाली।
हरे भरे वृक्षों से दिखती,
चारों ओर खुशहाली।

- राघव भट्ट, कक्षा-4
केंद्रीय विद्यालय अल्मोड़ा

मेरे पापा

मेरे पापा बड़े ही प्यारे,
करती हूं उनका सम्मान।
अच्छे काम करूंगी मैं,
तभी बढ़ेगा उनका मान।
मैं और भैया जब भी लड़ते,
प्यार से हमें समझाते हैं।
मां रहती है घर में व्यस्त,
होमवर्क हमारा कराते हैं।

- देवरक्षिता नेगी, कक्षा-4
बाल विकास विद्या मंदिर चौखुटिया,अल्मोड़ा

भारत है विविधताओं का देश

भारत विविधताओं का देश है। यहां हिंदू, मुस्लिम, सिख इसाई और दुनिया के कई धर्मो के लोग रहते हैं। आदिकाल में सत्ता हथियाने के लिए एक धर्म के राजाओं ने दूसरे धर्म के लोगों पर कई अत्याचार किए। यह इतिहास में हम सबसे छिपा नहीं है। लेकिन छोड़ो कल की बातें- कल की बात पुरानी। आज देश हित में हम सबको मिलकर एकता के साथ रहना होगा।

भारत का इतिहास गवाह है गांवों में सभी धर्मो के लोग एक साथ एक दूसरे के त्यौहार व शादी आदि कार्यक्रमों में शामिल होते हैं। बकायदा पारिवारिक रिश्ते निभाते हैं। परंतु चुनाव लड़ने वाले लोग तथा राजनैतिक दल अपने वोट के लिए जनता को जाति, धर्म, संप्रदाय, क्षेत्र व बाखली व धड़े के आधार पर बांटने की नाकामयाब कोशिश करते हैं। अपने स्वार्थ के लिए ऐसे लोग एक दूसरे जाति, धर्म व क्षेत्र के लोगों के खून के प्यासे तक हो जाते हैं। आजकल तो सोशियल मीडिया पर लोग एक दूसरे धर्म व जाति के खिलाफ माहौल बनाने की कोशिश कर रहे हैं। देश के विकास के लिए हमें सभी धर्मो के लोगों का सम्मान करना सीखना होगा। विज्ञान भी कहता है कि सभी का खून लाल होता है। खून के रिश्ते से बढ़कर हमें इंसानियत यानी मानव धर्म को मानना होगा। हम सब एकजुट होंगे तो दुश्मन देश हम पर आक्रमण करने से पहले जरूर सोचेंगे। हम बंटे होंगे तो इसका लाभ दुश्मन अपनी रणनीति से लेने का प्रयास करेगा।

- चैतन्य बिष्ट, कक्षा- 7, आर्मी पब्लिक स्कूल अल्मोड़ा

बच्चों की कलम से :

अपने घर में बनाएं पुस्तकालय

अधिकतर बच्चे जेब खर्च के लिए मिलने वाले पैसे या किसी रिश्तेदार द्वारा दिए गए पैसे को बस यूं ही खर्च कर देते हैं। जबकि कुछ बच्चे कुछ नया करने के लिए अपने पैसे का सदुपयोग करते हैं। कई बच्चे अपने अभिभावकों से पाठ्यक्रम से बाहर की पुस्तकें व पत्रिकाएं मंगवाकर अपना ज्ञान बढ़ाते हैं। पढ़ना उनकी रुचि में शामिल होता है। कुछ लोग अपनी पुरानी पुस्तकों को रद्दी में बेच देते हैं। या ऐसे ही फेंक देते हैं। जबकि वह पुस्तक कई बार कई संदर्भो के लिए हमारे काम आती है। पाठ्यक्रम से बाहर की पुस्तक या पत्रिका में भी कई ऐसी पाठ्य सामग्री होती है। जिससे उसे संग्रहीत करना जरूरी होता है।

कई लोग अपनी पढ़ी हुई पुस्तकों तथा पत्रिकाओं को अपने घर में संग्रहीत करके पुस्तकालय के तौर पर विकसित करते हैं। पढ़ने-लिखने वाले साहित्यकार, प्रतियोगी परीक्षाओं में भाग लेने वाले बच्चों एवं युवाओं के लिए भी यह महत्वपूर्ण है। पुरानी पाठ्य पुस्तकों, कहानी व कविता की पुस्तकों तथा सामान्य ज्ञान की पुस्तकों तथा पत्रिकाओं को पढ़कर हम अपने घर में एक छोटे से पुस्तकालय की शुरूआत कर सकते हैं।

- कुमारी दीपांशी रावत, कक्षा-9, राजकीय कन्या हाईस्कूल बांगीधार, अल्मोड़ा

चश्मा

मेरा चश्मा तेरा चश्मा,
इसका चश्मा उसका चश्मा।
दादी-नानी की आंखों पर,
दिन-रात रहता है चश्मा।
नीला पहनो नीला दिखेगा,
लाल पहनो लाल।
बूढ़े लोग भी पढें इससे,
चश्मे का ये है कमाल।
गांधी जी का गोल चश्मा,
नेहरू का चश्मा चौकोर।
सबको ही लगता है चश्मा,
जब पड़ता आंखों पर जोर।

- अधिश्री सिंह, कक्षा-10
केंद्रीय विद्यालय खैरागढ़, राजनांदगांव, छत्तीसगढ़

फास्ट फूड

चाउमीन, मोमो पिज्जा बर्गर,
फास्ट फूड नहीं खाना है।
शुद्ध ताजा पौष्टिक भोजन,
हम सबको अपनाना है।
फास्ट फूड खाने से बच्चे,
हो रहे हैं रोज बीमार।
कई बीमारियों की जड़ है ये,
ताजा खाओ शुद्ध आहार।

- आयुष्मान जोशी, कक्षा-10
जिम कार्बेट इंटरनेशनल स्कूल बागेश्वर

दूध

दूध से मिलती है ताकत
पूर्ण आहार ये होता है।
बचपन में मां दूध पिलाती,
बच्चा जब भी रोता है।
दूध का न करो अपमान,
हमेशा दूध पिया करो।
पोषण का है ये आधार,
ये समझ कर लिया करो।

- जिज्ञासा जोशी, कक्षा-5
कंट्रीवाइड पब्लिक स्कूल टाना, सोमेश्वर

भोजन की बरबादी

धूप व सर्दी में किसान,
खूब मेहनत करता है।
मेहनत करके किसान,
देश की सेवा करता है।
अन्न उगाने के लिए,
किसान मेहनत करता है।
जूठन छोड़ थाली में,
कौन बरबादी करता है।
जितना खाना है तुमको,
उतना ही लो थाली में।
भोजन बरबाद मत करो,
नहीं फेंको उसे नाली में।

- निकिता नेगी, कक्षा-9
रा.गांधी नवोदय वि.चौनलिया, अल्मोड़ा

आलू

सब सब्जियों का साथ निभाता,
सब को ही मैं भाता हूं।
उबालो, तल लो या भूनकर,
अलग व्यंजन बन जाता हूं।
समोसा पराठा हलुवा,
अलग-अलग मेरे पकवान।
हर मौसम में सभी जगह,
सबको बनाता हूं बलवान।

- अनुश्री सिंह, कक्षा-8
केंद्रीय विद्यालय खैरागढ़, राजनांदगांव छत्तीसगढ़

पुस्तक

ज्ञान का भंडार है पुस्तक,
हर बात हमें बताती है।
सच्ची दोस्त हमारी होती,
सही डगर ले जाती है।
नई जानकारी हमें ये देती,
अज्ञान हमारा मिटाती है।
दोस्ती जो इससे करता,
उसका ज्ञान बढ़ाती है।

- सिद्धार्थ रत्न भारद्वाज, कक्षा-5
सेंट मैरी कांवेंट सी.से.स्कूल
विकासनगर,देहरादून

बच्चों की कलम से :

विज्ञान

विज्ञान ने बदली है दुनिया,
घर-घर अब मोबाइल है।
टेलीविजन देखकर सबने,
बदली अपनी स्टाइल है।
चांद पर पहुंचा आदमी,
पर गांव से भूत नहीं गया।
बकरी मुर्गी अभी भी मांगे,
वरना खाऊंगा कह गया।
भूत के चक्कर में अभी,
रात को पूजा होती है।
स्कूल में लड़कियां अभी,
भूत के नाम पर रोती हैं।

- इधांत जोशी, कक्षा - 5
योगेश जोशी मै. शिव शक्ति पब्लिक स्कूल
देवीधूरा, चंपावत

तितली

रंग -बिरंगी तितली देखो,
सब बच्चों को भाती है।
फूलों पर मंडराती ये,
फूलों पर ही इतराती है।
बहुत चौकन्नी रहती तितली,
हाथ नहीं कभी आती है।
पकड़ना चाहूं इसे अगर तो,
झट से दूर उड़ जाती है।

- अंजली आर्या, कक्षा-5
राम गंगा वैली स्कूल मासी, अल्मोड़ा

मोबाइल और पुस्तकें

पुस्तकें मनुष्य की सच्ची मित्र होती हैं। परंतु आजकल पुस्तकों का स्थान चुपके से मोबाइल ने ले लिया है। आजकल युवा वर्ग का सबसे प्रिय दोस्त मोबाइल हो गया है। जिसे देखो मोबाइल पर ही व्यस्त है। ये भी सच है कि देर तक मोबाइल देखने से आंखें खराब हो सकती हैं। परंतु आज मोबाइल अलग-अलग कारणों से हमारे जीवन को आरामदायक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहा है। डाक, फोटो या वीडियो भेजना हो या बिजली आदि का बिल जमा करना हो तो मोबाइल हमें इस मामले में काफी मदद करता है।

मोबाइल पर कई पुस्तकें कम खर्च पर डाउनलोड कर पढ़ सकते हैं। जबकि पुस्तक को एक स्थान से दूसरे स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने में असुविधा होती है। इस कारण हम मोबाइल के नुकसानों को भूल जाते हैं। मोबाइल के कारण ही आज बच्चे ऑनलाइन पढ़ाई से जुड़ पा रहे हैं।

मैं व्यक्तिगत तौर पर पुस्तकें पढने की शौकीन हूं। मेरे पिताजी मेरे लिए घर पर बालप्रहरी तथा दूसरी पत्रिकाएं तथा कई पुस्तकें खरीदकर लाते हैं। मेरा व्यक्तिगत मानना है कि मोबाइल कभी भी पुस्तकों की जगह नहीं ले सकता है। परंतु आज कोरोना के दौर में यदि एक को बेहतर बताना हो तो आजकल की परिस्थिति में मोबाइल कई सारे लाभों के कारण निश्चित तौर पर बेहतर है।

- शिवांशी जोशी, कक्षा-6
राजकीय जूनियर हाईस्कूल मन्यूड़ा, गरूड़, बागेश्वर

कार्यशाला

कोरोना काल में बालप्रहरी ने,
शुरू की ऑनलाइन कार्यशालाएं।
कहानी कविता भाषण में ही,
निखरी बच्चों की प्रतिभाएं।
त्वरित भाषण में बच्चों ने,
तत्काल विषय पर दिया भाषण।
बच्चे बने अध्यक्ष व संचालक,
ये था मुख्य आकर्षण।
बच्चों को मंच देने को,
हुए नित नए-नए प्रयोग।
बच्चे बहुत व्यस्त रहे,
हुआ यहां समय का सदुपयोग।

- वर्धमान रतन भारद्वाज, कक्षा-10
सेंट मैरी सीनियर सेकेंडरी स्कूल
विकासनगर,देहरादून

चंदामामा

आसमान में चंदामामा,
रोज रात को आता है।
चारों दिशाओं का ये,
हमको ज्ञान कराता है।
रोता है जब छोटा बच्चा,
उसे चांद दिखाया जाता है।
चंदा मामा को देखकर,
बच्चा चुप हो जाता है।

- मेघा किरौला, कक्षा-5
रा.प्रा.विद्यालय उभ्याड़ी, कफड़ा

रेल

छुक-छुक करती आती रेल,
सरपट दौड़े जाती रेल।
गरीब अमीर सभी बैठते,
घर सबको पहुंचाती रेल।

- वेदवित ओझा, कक्षा-3
विट्टी इंटरनेशनल स्कूल भीलवाड़ा, राज.

बच्चों की कलम से :

प्रदूषण

अपने घर का कूड़ा तुम,
जब सड़क पर फैलाओगे।
लौटकर कूड़ा आएगा,
फिर तुम ये पछताओगे।
कूड़ा कूड़ेदान में डालो,
सफाई का सब रखो ध्यान।
साफ सफाई होगी जब,
स्वस्थ रहेगा इंसान।

- परवीन, कक्षा-7
रा.उ.प्रा.वि.बिझौली, नारसन, हरिद्वार

मेरी नानी

खूब पढ़ो और आगे बढ़ो,
ऐसा मुझसे कहती नानी।
अच्छी-अच्छी बात सिखाती,
रोज सुनाती नई कहानी।
जिद करने पर डांठ लगाती,
फरमाइश पूरी करती नानी।
जगह-जगह की सैर कराती,
मेरी नानी प्यारी नानी।

- दिव्यम तिवारी, कक्षा-5
आर्डन पब्लिक स्कूल लामाचौड़, हल्द्वानी

फौजी

फौज में जाऊंगी मैं,
दुश्मन को मजा चखाऊंगी।
फौज की ड्रेस पहनकर मैं,
देश का मान बढ़ाऊंगी।
लड़कियां नहीं हैं कम,
सभी को बात बताऊंगी।
रखूंगी तिरंगे का मान,
मैं देश के काम आऊंगी।

- मुस्कान, कक्षा-5
रा.प्रा.वि.लाटा, उत्तरकाशी

दही कैसे बनता है

हमारे घर गांव में लोग गाय या भेंस पालते हैं। सुबह या शाम दूध निकालते हैं। कुछ लोग दूध बेचते हैं। ऐसे में वे कुछ दूध अपने घर के उपयागे के लिए रख लेते हैं। बांकी दूध बाजार या समीपवर्ती दुकानों में बेचकर आते हैं। जो लोग दूध बेचते नहीं हैं वे दूध से दही और दही से मक्खन और घी तैयार करते हैं। कुछ लोग घी बेचते हैं। कुछ लोग इसे अपने घर में ही इस्तेमाल करते हैं।

पहाड़ में दही जमाने के लिए गुनगुने दूध को मिट्टी या लकड़ी की ठेकी में रखते हैं। जिनके घर में ठेकी नहीं होती है। वे दूध को बड़े भगौने (डेक), स्टील की बाल्टी या अन्य बरतन में रखते हैं। उस दूध में थोड़ा दही (जिसे 'जामुन' कहा जाता है) डाला जाता है। समझो 10 या 12 घंटे में दूध जमकर दही बन जाता है। गरमी के दिनों में तो 4 या 5 घंटे में भी दही तैयार हो जाता है। जाड़े के दिनों में दही जल्दी नहीं जम पाता है। इसलिए जाड़ें में दही जमाने वाले बरतन को चूल्हे के समीप या गरम स्थान पर रखा जाता है। गांव में जब 8 या 10 दिन का दही जमा होता है। तो दही को एक बड़ी बाल्टी, कनिस्तर या किसी बरतन में पलट दिया जाता है। उसके बाद दही को मथने का काम प्रारंभ किया जाता है। दही के बड़े बरतन को घर में स्थित किसी खंबे के पास रखकर उस बरतन में फिरकी (कुमाउनी में दही मथने वाली फिरकी को रियोड़ी आदि नामों से जाना जाता है) को बांधा जाता है। कुमाउनी में इस प्रक्रिया को 'छां फानना' या मट्ठा तैयार करना कहा जाता है। काफी देर तक दही को मथनी या फिरकी से चलाने पर सारा दही मट्ठे में बदल जाता है। बरतन में मट्ठे की ऊपरी परत पर मक्खन लग जाता है। इस मक्खन को एक बरतन में रखा जाता है। बाद में इस मक्खन को कढ़ाही में पिघलाकर घी तैयार किया जाता है।

दही से बना तैयार ताजा मट्टा नुकसान नहीं करता है। ऐसा कहा जाता है। गांव में अभी भी जिनके घर मट्ठा तैयार होता है। वे अपने पड़ोसियों को भी मट्ठा देते हैं। जिनकी गाय या भेंस अधिक दूध देते हैं वे लोग 2 या तीन दिन में भी मट्ठा तैयार करते हैं।

- हितेश शर्मा, कक्षा-8
रा.इ.का नौकुचियाताल, नैनीताल

स्वच्छता अभियान

खुले में शौच न जाएं,
सबको ये बताना है।
शौचालय का करो प्रयोग,
सबको ये समझाना है।
घर मोहल्ला साफ रहे,
अभियान ये चलाना है।
हम सबको मिलकर अब,
स्वच्छता अभियान चलाना है।

- राहुलसिंह डंगवाल, कक्षा-6
राजकीय जू. हाईस्कूल सीम, बासोट,अल्मोड़ा

कोरोना

जब भी निकलें घर से बाहर,
मास्क सबको लगाना है।
सेंनेटाइजर का करें प्रयोग,
सबको ये बताना है।
साबुन से हाथ धोने की,
सबको आदत बनानी है।
दो गज दूरी है जरूरी,
ये बात भी समझानी है।

- पाखी जैन, कक्षा-3
मिकांडो इंटरनेशनल स्कूल उदयपुर,राजस्थान

बच्चों की कलम से :

शिक्षिका होती

शिक्षिक या शिक्षिका किसी भी समाज की रीढ़ होती है। वे अपने छात्र-छात्राओं को जिस दिशा की ओर ले जाएंगे। बच्चे उनके मार्गदर्शन में आगे बढेंगे। अगर मैं शिक्षिका होती तो मैं सभी बच्चों के साथ एक समान व्यवहार करती। मैं विशेषकर गरीब व कमजोर बच्चों पर अधिक ध्यान देती।

यदि बच्चे सुबह देर से आते तो मैं उनसे देर में आने का कारण अवश्य पूछती। बच्चों से कारण जाने बिना उन्हें क्लास में या बाहर धूप में खड़ा रहने की सजा नहीं देती। मैं बच्चों को अनुशासित रहने को कहती। मैं बच्चों को साफ-सफाई तथा स्वास्थ्य के प्रति जागरूक रहने को कहती। मैं समय-समय पर बच्चों की विभिन्न प्रतियोगिता भी करवाती। जो बच्चे प्रतियोगिताओं में भाग नहीं लेते। उन्हें मैं प्रतियोगिताओं का महत्व समझाती। मैं केवल स्कूल की पुस्तकें पढ़ने के बजाय बच्चों से अखबार, पत्रिकाएं तथा पुस्तकें पढ़ने को कहती। पुस्तकालय के लिए मैं बच्चों में से ही किसी एक को जिम्मेदारी सौंपती। स्कूल में रहने पर मैं हमेशा क्लास को अटेंड करती।

- आकांक्षा रावत, कक्षा -10,
कस्तूरबा गांधी आ.बा.वि.खरसाड़ी, उत्तरकाशी

हमारा गांव

भोर होते पक्षी चहचहाते,
हमको ये उठाते हैं।
समय का पालन करो,
हमें ये बताते हैं।
गांव की अनुपम छटा,
हम सभी को भाती है।
शीतल मंद पवन की,
फुहार यहां आती है।

- कनक जोशी, कक्षा-11
रा.इ.का.चौरा हवलबाग,अल्मोड़ा

मोबाइल व पुस्तक

एक कागज पर गढ़े हुए कुछ शब्द समय विशेष का यथार्थ चित्रण हमारे सामने रखते हैं। एक पुस्तक के अंदर बहुत सी चीजें समाई होती हैं। पुस्तक पढ़ने के बाद पाठक पुस्तक के सार को आत्मसात करता है। पुस्तक के अंदर की दुनिया को समझता है। आज के तकीनीकी युग में हमारा पुस्तकों से नाता कमजोर पड़ता दिखाई दे रहा है। मोबाइल पुस्तकों के विकल्प के तौर पर अपना स्थान बना रहा है। जो संसार कभी हम पुस्तकों के पन्नों पर देखते थे। अब वह संसार मोबाइल फोन की स्क्रीन के ऊपर आ गया है। पुस्तकों को पढ़ते समय मानसिक एक्रागता व बुद्धि का विकास होता है। जबकि मोबाइल पर लगातार नजर गढ़ाए रखने से आंखें खराब हो जाती हैं। मोबाइल फोन ने हमारी दुनिया को काफी आसान बना दिया है परंतु आज भी पुस्तकों के महत्व को कम नहीं आंका जा सकता है। अब रोजमर्रा की जिंदगी में मोबाइल फोन एक जरूरी आवश्यकता जरूर है, लेकिन पुस्तकों का स्थान अटल है।

- प्रथम मित्तल, कक्षा-11
नानकमत्ता प. स्कूल नानकमत्ता, ऊ.सिं.नगर

पानी है अनमोल

पेड़ पानी के भंडार,
हमको पेड़ लगाने हैं।
पेड़ लगाओ पेड़ बचाओ,
पेड़ों के लाभ बताने हैं।
पेड़ हमको देते छाया,
फल भी हमको देते हैं।
सोचे समझें विचार करें,
हमें इन्हें काट क्यों देते हैं।

- उर्वशी सेमवाल, कक्षा-8
रा.इ.का.कोटबांगर,रुद्रप्रयाग

पानी है अनमोल

कोरोना जैसी महामारी से बचने के लिए जरूरी है कि हम स्वयं सावधानी बरतें। लॉकडाउन के बाद हमारे स्कूल खुले। उसके बाद भी हमने अपने बचाव के लिए सावधानी बरती। हम स्कूल मास्क लगाकर जाते। स्कूल में हम सेंनेटाइजर का इस्तेमाल करते। हमारा तापमान नापकर ही हमें कक्षा में भेजा जाता। इसलिए कि किसी को बुखार तो नहीं है। कोराना संक्रमण का दूसरा दौर शुरू हो गया है। इसलिए जरूरी है कि हम अनावश्यक रूप से घर से बाहर न निकलें। घर से बाहर जाना जरूरी हो तो मास्क लगाकर तथा दूसरों से दूरी बनाते हुए चलें।

- ऊर्जा जोशी, कक्षा- 9
विवेकानंद विद्या मंदिर इंटर कालेज चंपावत

मोबाइल

आज के युग का मोबाइल,
सबसे बात कराता है।
ज्ञान की नई-नई बातें,
मोबाइल हमें सिखलाता है।
देर तक लगातार इसे देखो,
आंखें खराब हो जाती हैं।
मोटा चश्मा लगे आंख पर,
मेरी मम्मी बताती है।

- कु.काव्यांजलि, कक्षा-8
राजकीय आदर्श जू.हा.छिताड़,चौखुटिया

बच्चों की कलम से :

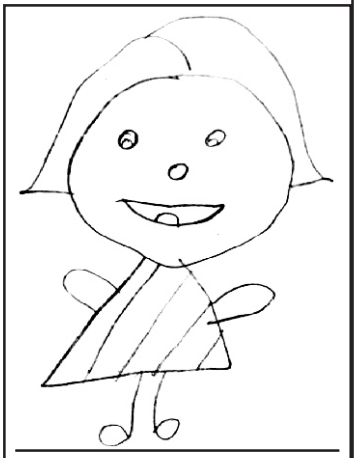

वसुधा पंत
कोलंबस पब्लिक स्कूल, रुद्रपुर

प्रियांशु, कक्षा - 5
रा.आ.प्रा.वि. बासोट, अल्मोड़ा

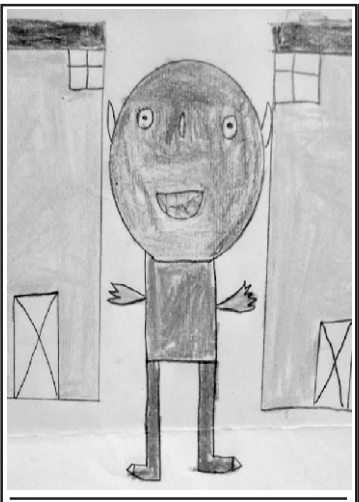

मनीष बहुगुणा कक्षा-6
रा.इ.का.नौकुचियाताल,नैनीताल

सृजन प्रजापति, कक्षा - 7
सेम स्टार ग्लोबल स्कूल, नैनी, प्रयागराज

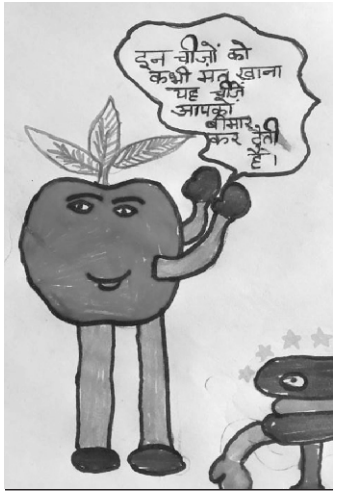

सृजन भट्ट, कक्षा - 5
केंद्रीय विद्यालय पौड़ी

प्रगति, कक्षा - 3
आलोक.उ.मा.वि. बिलाड़ा, जोधपुर (राज.)

शिव समेंदु त्रिपाठी, कक्षा - 4
युनिवर्सल कांवेंट स्कूल, द्वाराहाट, अल्मोड़ा

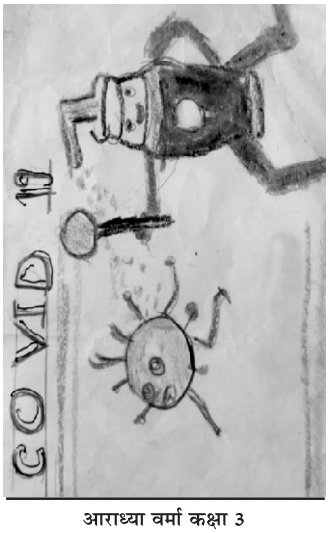

आराध्या वर्मा कक्षा 3
शंकरनगर,करमेता,जबलपुर,म.प्र.

वैष्णवी कर्नाटक, कक्षा - 5
कंट्रीवाइड पब्लिक स्कूल, गरूड़, बागेश्वर

हरि हृदयांश त्रिपाठी, कक्षा - 3
यूनिवर्सल कांवेंट स्कूल, द्वाराहाट,अल्मोड़ा

आशीष, कक्षा - 6
रा.इ.का. कोटाबांगर,रुद्रप्रयाग

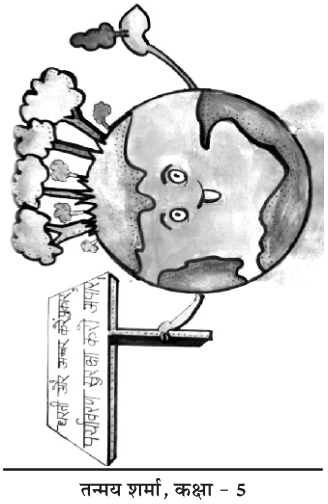

तन्मय शर्मा, कक्षा - 5
तव एकेडमी, दुगालखोला, अल्मोड़ा

निबंध प्रतियोगिता – 38

निबंध प्रतियोगिता में 14 वर्ष तक के बच्चे नि:शुल्क भाग ले सकते हैं। प्रतियोगिता के तहत 'कुछ बच्चे करते हैं मोबाइल का दुरुपयोग' विषय पर लगभग 250 शब्दों का निबंध लिखकर भेजना है। चयनित निबंध को बालसाहित्य संस्थान अल्मोड़ा के सौजन्य से 200 रुपए की पुस्तकें/पत्रिकाएं उपहार में भेजी जाएंगी। निबंध के साथ नाम/पता/कक्षा/स्कूल व घर का पूरा पता तथा टेलीफोन न. अवश्य लिखें। निबंध संपादक बालप्रहरी अल्मोड़ा, उत्तराखंड-263601 के पते पर दिनांक 15 अगस्त, 2021 तक भेजें। निबंध प्रतियोगिता-35 में निम्न निबंध चयनित हुआ है। इन्हें उपहार में पुस्तकें/पत्रिकाएं भेजी जा रही हैं। –

कोरोना काल में ऑनलाइन पढ़ाई

मार्च, 2020 से कोरोना का प्रकोप विश्व में फैल रहा है। 2019 में चीन से शुरू हुई ये बीमारी आज सारे संसार में अपने पांव पसार चुकी है। कोरोना बीमारी के कारण समूचे देश में लॉकडाउन लग गया। स्कूल कालेज बंद हो गए। कुछ समय बाद सभी स्कूलों में ऑनलाइन पढ़ाई प्रारंभ हो गई। कुछ स्कूलों में बकायदा ऑनलाइन उपस्थिति दर्ज होने लगी। दिन में बकायदा स्कूल की तरह अलग-अलग विषयों की पढ़ाई हो रही थी। बच्चों को लग रहा था जैसे कि उनका स्कूल खुला हो। दूरदर्शन पर भी बच्चों के लिए कई सीरियल एवं कार्यक्रम चल रहे थे। कई स्कूल तो केवल फीस लेने के लिए ऑनलाइन पढ़ाई कर रहे थे।

एक जमाना था जब बच्चों को मोबाइल न देने की बात कही जाती थी। बच्चों को मोबाइल से दूर रखने की बात कहीं जाती थी। कोरोना काल में ऑनलाइन पढ़ाई के बहाने ही सही अभिभावक बच्चों को स्मार्टफोन दे रहे हैं। ये अलग बात है कि कोरोना ने गरीबों का रोजगार छीन लिया। परंतु बच्चों को पढ़ाई के लिए स्मार्टफोन देना मजबूरी था। इस कारण गरीब अभिभावकों ने कर्ज लेकर मोबाइल बच्चों को दिया। कई ग्रामीण क्षेत्रों में मोबाइल का नेटवर्क ही नहीं था। इस कारण बच्चे स्मार्टफोन का लाभ नहीं उठा पाए। कोरोना काल की उपलब्धि ये रही कि अब गांव के गरीब बच्चे भी ऑनलाइन पढ़ाई से जुड रहे हैं। दूसरा पक्ष ये है कि बच्चे पढ़ाई के अतिरिक्त मोबाइल के गेम और दूसरे एप देखने में अपना समय बरबाद कर रहे हैं।

– सोनाक्षी मेहरोत्रा, कक्षा-7
दिल्ली पब्लिक स्कूल मेरठ,उ.प्र.

(इसके अतिरिक्त दक्षिता गुसाई (गैरसैण) अदिति (उत्तरकाशी), प्रियंका सोनी (चंडीगढ़) अमित सक्सेना (कानपुर), विजय गर्ग (बरेली) का निबंध भी प्रशंसनीय था। – संपादक

अंतर बताओ

एक जैसे दिखाई देने वाले इन दोनों चित्रों को ध्यान से देखकर कुल दस अंतर बताइए

कविता लिखो प्रतियोगिता–67

दाएं बने चित्र को ध्यान से देखो। चित्र को देखकर-विचारकर तुम्हें 8 पंक्ति की स्वरचित कविता 15 अगस्त, 2021 तक संपादक बालप्रहरी, अल्मोड़ा उत्तराखंड- 263601 के पते पर भेजनी है। प्रतियोगिता में 14 वर्ष तक के बच्चे नि:शुल्क प्रतिभाग कर सकते हैं। कविता के नीचे अपना नाम, पता तथा उम्र तथा फोन नंबर लिखकर हस्ताक्षर करने हैं। सबसे अच्छी कविता को बालप्रहरी में प्रकाशित किया जाएगा। ग्रामीण समाज कल्याण समिति (ग्रास) तल्ला चीनाखान, अल्मोड़ा के सौजन्य से 200 रुपए की पुस्तकें/पत्रिकाएं उपहार में भेजी जाएंगी। कविता लिखो प्रतियोगिता - 66 में निम्नलिखित कविता चयन की गई है। इन्हें पुस्तकें/पत्रिकाएं उपहार में भेजी जा रही हैं।

भारत के बच्चे

भारत के हम बच्चे,
तिरंगे का मान बढ़ाएंगे।
तिरंगा है देश की शान,
हम देश का मान बढ़ाएंगे।
एक हैं हम एक रहेंगे,
देश को आगे बढ़ाएंगे।
तिरंगे की कसम हमें,
तिरंगे का मान बढ़ाएंगे।

— विवेक कश्यप, कक्षा 9
सुभाषचंद्र बोस एकैडमी, लखनऊ, उ.प्र.

इसके अतिरिक्त सोनाक्षी मेहरोत्रा (मेरठ), अदिति (खटीमा), भावना जोशी (हल्द्वानी), सोनालिका (भोपाल), प्रिया उनियाल (देहरादून), बीरबाला (गुड़गांव), अदिति (अहमदाबाद), प्रियंका राजपूत (उदयपुर) की कविताएं भी प्रशंसनीय थी। -संपादक

अल्मोड़ा से प्रकाशित कुमाउंनी मासिक पत्रिका

पहरू

के लिए कुमाउंनी भाषा में कहानियां, कविताएं आदि रचनाएं सादर आमंत्रित हैं। आजीवन सदस्यता 1500 रुपए अथवा वार्षिक सदस्यता 200 रुपए भिजवाकर सहयोग करें।

- डॉ हयात सिंह रावत,
संपादक- पहरू
'इन्द्र सदन' सुनारीनौला, अल्मोड़ा, मोबा. 9412924897

सुडोकू

सुडोकू 9×9 यानी 81 खानों का वर्ग है। यह 3×3 खानों के 9 छोटे खानों में बंटा होता है। पहेली सुलझाने के लिए खाली स्थान पर 1 से 9 तक के अंक भरने हैं। ध्यान रखें आड़ी या खड़ी लाईन में एक संख्या केवल एक ही बार आए।

	2	6	3				4	
3					1	5	2	
4								
				4		2		9
	1		5			9		8
9		2				3		
		4	1	6				5
	5					4		7

चुटकुले

पिता- टिंकू! तुमने मेरे ब्रश से दांत मांजे क्या बदबू आ रही है?
टिंकू- पिताजी ! मैंने नहीं मांजे। मैंने कुत्ते के दांत मांजे थे।

डॉक्टर- दादा जी! आपको ऐसी दवा दूंगा कि आप जवान हो जाएंगे।
मरीज- नहीं बेटा! ऐसा मत करना। मेरी पेंशन बंद हो जाएगी।

डॉक्टर- आपके लिए खुशखबरी भी है और बुरी खबर भी। पहले क्या सुनना चाहेंगे ?
मरीज- पहले अच्छी खबर सुना दीजिएगा।
डॉक्टर - तुम्हारे सारे दांत ठीक हैं।
मरीज - तब बुरी खबर क्या है ?
डॉक्टर - आपके मसूड़े बहुत खराब हो गए हैं। इसलिए मुझे पूरे के पूरे दांत निकालने पड़ेंगे।

दादी- सोनू! तुम क्यों रो रहे हो?
बच्चा- हमारे स्कूल गुरूजी बीमार थे, कल वे.....
दादी - क्या वे मर गए? कैसे मरे?
बच्चा- दादी! वे ठीक हो गए हैं। कल से स्कूल आने वाले हैं।

डॉक्टर- बेटा! यह दवा बहुत मीठी है। दिन में चार चम्मच भर कर पीनी है।
बच्चा- पर हमारे घर में तो केवल एक ही चम्मच है।

मुर्गा (मुर्गी से)- हम मर गए थे क्या जो तुमने बाज से शादी की।
मुर्गी - मैं तो तुमसे ही प्यारी करती थी। तुमसे ही शादी करना चाहती थी। पर घर वालों को ऐसा लड़का चाहिए जो एयर फोर्स में हो।

- **राखी राजपूत कक्षा-6** रा.इ.का.नौकुचियाताल,नैनीताल
- **दिव्यांश भट्ट 'दिव्य'**, रेनबो अकादमी स्कूल हल्द्वानी
- **सरिता, कक्षा** -10 कस्तूरबा गां.आ.बा.वि. तरपालीसैण, पौड़ी
- **सोनिया, कक्षा-7**, फूलचंद नारी शिल्प ग.इं.कालेज देहरादून
- **करिश्मा, कक्षा-8** ,रा.उ.प्रा.वि. गंगानी, बड़कोट, उत्तरकाशी

क्या आप जानते हैं?

● विमला जोशी 'विभा'

आपने विभिन्न जानवरों तथा पक्षियों के पार्कों का भ्रमण किया होगा। जिन्हें चिड़ियाघर कहा जाता है। चिड़ियाघरों में पक्षियों के साथ ही दुलर्भ एवं विदेशी विशालकाय जानवरों से लेकर पक्षियों तथा कई जीवों को रखा जाता है। चिड़ियाघरों में आपने सांप तथा दूसरे रेंगने वाले जीवों को भी देखा होगा।

भारत में सांप तथा दूसरे रेंगने वाले जीवों का पार्क सर्वप्रथम 1972 में चेन्नई में बना। जिसे सांपों के पार्क के नाम से जाना जाता है। इस पार्क के संचालन के लिए मद्रास स्नेक पार्क ट्रस्ट की स्थापना की गई। सन् 1996 में मद्रास शहर का नाम बदलने पर सन् 1997 में इस पार्क का नाम बदलकर चेन्नई स्नेक पार्क रखा गया।

चेन्नई के स्नेक पार्क में सांपों की लगभग 40 से अधिक प्रजातियां संरक्षित की गई हैं। जालीदार अजगर, भारतीय रॉक, पायथन, आमक्रेट, भारतीय चूहा सांप, आम भेड़िया सांप सहित कई विदेशी प्रजाति के लगभग 500 से भी अधिक जीवित सांपों का यह संग्रहालय है। सांप के अतिरिक्त मगरमच्छ तथा कछुओं की प्रजातियों को भी यहां संरक्षित रखा गया है। सांपों की विभिन्न प्रजातियों तथा अन्य रेंगने वाले जीवों के बारे में जानकारी अंगरेजी तथा तमिल भाषा में पर्यटकों के लिए दी गई है। सांपों के प्रजनन एवं शोध केंद्र के रूप में भी संग्रहालय को विकसित किया गया है।

यह पार्क लगभग एक एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है। लगभग सात लाख देशी तथा विदेशी लोग प्रतिवर्ष इस पार्क को देखने के लिए आते हैं। ये पार्क चेन्नई में गुइंडी राजभवन में स्थित है। इसलिए इसे गुइंडी स्नेक पार्क के नाम से भी जाना जाता है। पार्क में बच्चों तथा व्यस्कों को प्रवेश शुल्क के आधार पर ही कराया जाता है।

इसके अतिरिक्त भारत में कोलकाता में पूर्वी भारत का पहला सांप पार्क बना। कन्नूर (केरल), कटराज स्नेक पार्क पूणे, बन्नेरघट्टा स्नेक पार्क बैंगलौर सहित कई राज्यों में भी अब सांप पार्क बने हैं। देहरादून (उत्तराखंड) के दून चिड़ियाघर में किंग कोबरा, वर्मीज अजगर, भारतीय नाग साहित 11 प्रजातियों के सांप पर्यटक देख सकते हैं। सांप के अतिरिक्त इगुआना प्रजाति की छिपकली भी यहां पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र होती है। चेन्नई तथा बैंगलौर स्नेक पार्क से यहां सांप की कई प्रजातियां लाई गई हैं।

- नबाबी रोड, हल्द्वानी, नैनीताल

कहानी लिखो प्रतियोगिता – 67

दाएं बने चित्र को देखकर 14 वर्ष तक के बच्चे एक कहानी बनाकर संपादक बालप्रहरी, अल्मोड़ा उत्तराखंड-263601 के पते पर 15 अगस्त, 2021 तक भेज कर प्रतियोगिता में नि:शुल्क भाग ले सकते हैं। कहानी के नीचे अपना नाम व पता तथा उम्र लिखकर हस्ताक्षर करने हैं। सबसे अच्छी कहानी को बालप्रहरी में प्रकाशित किया जाएगा तथा उपहार में 200 रुपए की पुस्तकें भारत ज्ञान विज्ञान समिति अल्मोड़ा के सौजन्य से भेजी जाएंगी। कहानी लिखो प्रतियोगिता-66 के लिए निम्न कहानी का चयन किया गया। इन्हें पुरस्कार में पुस्तकें / पत्रिकाएं भेजी जा रही हैं।

घर के कामों का बंटवारा

अक्षत और अक्षिता दोनों भाई-बहनों में बहुत प्रेम था। कभी भी किसी भी मामले पर दोनों में कहा सुनी नहीं हुई। कभी कोई ऊंची आवाज में नहीं बोला। पिताजी मुरादाबाद में पीतल के बरतन की फैक्ट्री में काम करते थे। होली, दीपावली व कभी-कभार ही उनका घर आना होता था। घर पर मां और दोनों बच्चे ही रहते थे।

दोनों बच्चे घर के कामों में मां की मदद करते थे। एक दिन मां ने कहा, "तुम दोनों घर के कोई काम मत करना। बस अपनी पढ़ाई पर ध्यान देना। मैं चाहती हूं मेरे दोनों बच्चे पढ़-लिखकर नाम कमाएं।"

मां की बात पर अक्षिता ने कहा, "भाई! मां घर के सारे काम करती है। हम दोनों भी मां के काम में हाथ बटांएगे। तो मां को भी थोड़ा आराम मिल जाएगा।"

"ठीक है" कहकर दोनों ने घर के कामों की सूची बनानी प्रारंभ कर दी। घर में झाड़ू लगाना, पोछा लगाना, बरतन धोना, चूल्हा सफाई का काम अक्षिता के नाम हो गया। नल से पानी लाना, क्यारियों में पानी देना, घर के बड़े आंगन की सफाई तथा दुकान में दूध देने का काम अक्षत के हिस्से हो गया। अचानक अक्षत ने कुछ सोचते हुए कहा, "अक्षिता! दुकान में दूध ले जाने का काम तो हम दोनों स्कूल जाते समय कर लेंगे। रविवार और छुट्टी के दिन दुकान में दूध देने मैं जाऊंगा। ऐसा करते हैं हम दोनों सारे काम मिलकर करेंगे। इससे काम जल्दी भी हो जाएगा। हमें बोरियत भी नहीं होगी।"

"ठीक है भइया!" कहकर अक्षिता ने भी बहिन की बात मान ली। अब घर के सारे काम दोनों मिलकर करने लगे। मां को भी थोड़ा आराम होने लगा। मां जब भी गांव के दूसरे लोगों को बताती कि उनके दोनों बच्चे घर के कामों में मदद करते हैं। तब सभी कहते, "तुम्हारे बच्चे कितने संस्कारी हैं।" ऐसा सुनकर मां बहुत खुश हो जाती।

कभी-कभी तो अक्षत अकेले ही झाड़ू पोछा लगाने का काम कर देता। एक दिन क्यारी में पानी देते हुए अक्षिता दीवार से नीचे गिर गई। उसके सिर पर घाव हो गया। मां और अक्षत उसे डॉक्टर के पास ले गए। मरहम पट्टी के बाद तीनों घर को आ गए। मां ने दोनों को समझाते हुए कहा, "तुम दोनों घर के काम मत करो। मैं कर लूंगी।"

"नहीं मां! सारे काम तो आप ही करती हो। हम तो छोटे-छोटे काम करते हैं।" कहकर अक्षत ने मां को गले से लगा लिया। अक्षत ने अक्षिता से कुछ दिन आराम करने को कहा। घर के सारे काम स्वयं ही करने लगा। अब वह बहिन को बिस्तर पर अकेले छोड़कर भी नहीं जाता। उसके साथ ही रहता। वह घर पर रहकर ही अपनी पुस्तक पढ़ते रहता।

— विकास शर्मा, कक्षा-8

सन साइन पब्लिक स्कूल रायपुर, छत्तीसगढ़

(इसके अतिरिक्त विवेक बिष्ट (बरेली), अंशिका कुशवाहा (रायपुर), खुशी रावत (चमोली), भगवत बिष्ट (चंडीगढ़) तान्या अवस्थी (शाहजहांपुर), गुंजन शर्मा (अल्मोड़ा) सजल जैन (आगरा), अमित सक्सेना (कानपुर) की कहानी भी प्रशंसनीय रही। - संपादक

अनमोल वचन

- *असफलता को सफलता का विलोम न समझें। वह तो सफलता का ही हिस्सा है।* – बिली ग्रेहम
- *यदि तुम कुछ प्राप्त करना चाहते हो, तो अर्पित करना सीखो।* – सुभाषचंद्र बोस
- *धैर्य के द्वारा पर्वतों को भी पार किया जा सकता है।* – टॉलस्टाय
- *आप कितने ही साल जिए यह अहं नहीं है, बल्कि इन सालों में आपने कितनी जिंदगी जी, यह मायने रखता है।* – *अब्राहम लिंकन*

संकलन :जी.आर.एस.यादव भाई, 28 प्रधानमंत्री सचिवालय अपार्टमेंट विकासपुरी, नई दिल्ली- 11 00 28

पहेलियां

● योगेशकुमार जीनगर,भीलवाड़ा, राजस्थान

1. तीन अक्षर का मेरा नाम, उल्टा सीधा एक समान,
रिश्ते मैं बतलाता हूं, अब तो रख लो मेरा मान।
2. शुरू कटे तो नमक बने, मध्य कटे तो कान,
अंत कटे तो काना बने, नाम बताओ श्रीमान।
3. घर का ही हूं पर नहीं हूं पहरेदार,
घर की रक्षा करता हूं, देखो मुझको बारंबार।
4. पतली सी हूं घर को मैं महकाती हूं,
सुबह शाम हर समय, पूजा के काम आती हूं।

उत्तर: 1.जीजाजी 2.काजल 3.ताला 4.अगरबत्ती

निश्चित समय

● प्रभुदयाल श्रीवास्तव

हार्न बजाकर बस का आना,
निश्चित समय, सात रोजाना।
चौराहे पर ड्रेस लगाए,
सारे बच्चे आंख गड़ाए।
नजर सड़क पर टिकी हुई है,
किसी तरह से बस आ जाए।
जब आई तो मिला खजाना,
निश्चित समय, सात रोजाना।
सात बजे सूरज आ जाता,
छत, आंगन से चोंच लड़ाता।
कहे पवन से नाचो गाओ,
मंदिर में घंटा बजवाता।
कभी न छोड़े हुक्म बजाना,
निश्चित समय, सात रोजाना।
सात बजे आ जाता ग्वाला,
दूध, नापता पानी वाला।
मम्मी पापा पूछा करते,
रस्ते में मिलता क्या नाला?
ना-ना करते सिर मटकाना,
निश्चित समय, सात रोजाना।
सात बजे दादा उठ जाते,
'भेजो चाय' यही चिल्लाते।
यदि समय पर नहीं मिली तो,
सारे घर को नाच नचाते।
बहुत कठिन है, उन्हें मनाना,
निश्चित समय, सात रोजाना।

– 12 शिवम सुंदरम नगर, छिंदवाड़ा,म.प्र.

अरी गिलहरी

●भगवतीप्रसाद द्विवेदी

अरी गिलहरी, जरा ठहर!
आंगन में चल बातें कर!
रोएंदार बदन तेरा,
धारी वाला तन तेरा।
इत्ती सी दुम झबरीली
है तू न्यारी, नखरीली।
अरी चुलबुली, तनिक न डर!
आंगन में चल, बातें कर!
फुदक-फुदक कर पेड़ों पर,
छज्जों और मुंडेरों पर।
कुतर-कुतर तेरा खाना।
बतियाना छुप-छुप गाना।
फुर्तीलापन बढ़-चढ़कर,
अरी गिलहरी जरा ठहर।
तू मासूम लगे हमको
अफलातून लगे हमको।
आंखें तेरी बोल रही,
बचपन में रस घोल रही।
छुटकी अपना दिखा हुनर,
आंगन में चल, बातें कर।

– पोस्ट बॉक्स 115, पटना, बिहार- 800001 मोबाइल-9430600958

काम महान

●सुकीर्ति भटनागर

पुस्तक खोले मुन्ना प्यारा,
करता याद पहाड़े था।
कंबल में दुबका बैठा था,
मौसम था वह जोड़े का।
उकताया पढ़ते-पढ़ते वह,
लगा खेलने लेट कर।
सहसा चौंक उठ कर बैठा,
छत पर चिड़िया देख कर।
लगा देखने चुपके-चुपके,
भाई वह उसके मन को।
रंग-बिरंगी चूं-चूं करती,
महकाती घर आंगन को।
मां मेरे भी पंख लगा दो,
दूर गगन तक जाऊंगा।
ढले सांझ उससे पहले ही,
घर वापिस आ जाऊंगा।
सूरज, चांद, सितारे सारे,
कितने प्यारे-प्यारे हैं।
धरती के सारे बच्चों को,
मैं आ कर बतलाऊंगा।
बेटा तुम ही चांद-सितारे,
जग में उजाला नाम करो।
माता हो बलिहारी तुम पर,
ऐसे काम महान करो।

– 432, अरबन एस्टेट, फेज-1, पटियाला (पंजाब) मोबाइल- 8146733444

कुमाउनी कविता :

पुतई

विनीता जोशी

हाजरी फूल में नाचणौ पुतई,
अहा रे अहा आगणौ पुतई।
को गौं बै ऐरै, को छू देस,
रंगीलो - चंगीलो के सुंदर भेष।
बोली न चोली छू न्यारी पुतई,
नानतिनों की प्यारी पुतई।
धरती मैत अगास सौरास,
यो पुतई छू सबनै आस।
दाड़िमै फूलै साई पुतई,
क्वे सफेद क्वे काई पुतई।

तिवारीखोला, पूर्वी पोखरखाली, अल्मोड़ा
मोबाइल-9411096830

गढ़वाली कविता :

घुघुती

डॉ. उमेश चमोल

मोल्यार मा घुघुती
डालौ डालौ औंदी,
हौर ऋतु मा घुघुती,
मुखिड़ि कख लुकौंदी?
कख बटिन पाइ त्वेन
मिठी मिठी भौण?
गीत गैक कै उदास
जिकुड़ि तैं बुथ्योंण,
कैन पैराई होलि
तेरा गला जंजीर ?
ज्यू मा कैन दीनि
होलि यति गैरि पीर।

- एस.सी.ई.आर.टी.उत्तराखंड,
राजीव गांधी नवोदय विद्यालय भवन नालापानी, रायपुर देहरादून
मो - 7895316807

पहाड़ा ननां हाल-चाल

मितुरो,

पहाड़ा सरकारि स्कूलों नान पैली बटी बगैर ट्यूशन पढ़ियै बोर्डा इम्तिहान में जादे नंबर ल्यूंछी। आब पहाड़ा नान रतै ब्याल ट्यूशन जाण रयीं। गरीब ईज-बौज्यू लै आब नना कैं ट्यूशन भेजण रयीं। पर सब ननां ध्यान पढ़ण-लिखण में नहां।

ट्यूशना नाम पर नान घर बटी न्है जानी। क्वे आपुण दगड़ियां दगाड़ खेल करनी। क्वे तो बुर व्यसन में फंसि जानी। महैंण में ट्युशन फीस घर बटी लिजानी। क्वे मास्टर हूं ट्यूशन पढ़नी। पढ़नी या नि पढ़न य बात ईज-बौज्यू कैं पत्त नि हुन। क्वे तो ट्यूशना डबलौल आपुण मोबाइल में रिचार्ज करण रयीं।

स्कूली नान बर्‌यात में बरेती पिठा डबल जम करि बे आपुण शौक पुर करण रयीं। क्वे बजार बटी सुंघड़ी दवाई लिबेर मस्त है जाणीं। व्यसन करणौ खतरनाक आदत ननां में हैगे। ईज-बौज्यू कैं ननां तरफ ध्यान दिणै जरूरत छू। बांकि फिर लेखूल।

तुमर मितुर,
प. गुसाईराम आचार्य

पहाड़ के बच्चों के हाल-चाल

दोस्तो,

पहाड़ के सरकारी स्कूलों के बच्चे पहले बगैर ट्यूशन पढ़े बोर्ड परीक्षाओं में अधिक नंबर लाते थे। अब पहाड़ के बच्चे सुबह शाम ट्यूशन जा रहे हैं। गरीब माता-पिता भी अब बच्चों को ट्यूशन भेज रहे हैं। परंतु सब बच्चों का ध्यान पढ़ने-लिखने में नहीं है।

ट्यूशन के नाम पर बच्चे घर से चले जाते हैं। कुछ अपने दोस्तों के साथ खेल करते हैं। कोई तो बुरे व्यसन में फंस जाते हैं। महीने में घर से ट्युशन फीस ले जाते हैं। किस शिक्षक से ट्युशन पढ़ते हैं। पढ़ते हैं या नहीं पढ़ते हैं यह बात माता-पिता को पता नहीं होती है। कुछ तो ट्यूशन के पैसों से अपना मोबाइल रिचार्ज कर रहे हैं।

स्कूल के बच्चे विवाह में मिलने वाले बाराती उपहार के पैसे जमा कर अपना शौक पूरा कर रहे हैं। कुछ बाजार से सूंघने वाली दवा लेकर मस्त हो जा रहे हैं। व्यसन करने की खतरनाक आदत बच्चों में हो गई है। माता-पिता को बच्चों की ओर ध्यान देने की आवश्यकता है। बांकी फिर लिखूंगा।

तुम्हारा दोस्त,
प. गुसाईराम आचार्य

जानकारी:

ऐसा क्यों होता है?

● घमंडीलाल अग्रवाल

विज्ञान की तीन शाखाएं हैं - भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान एवं जीवन विज्ञान। विज्ञान की इन्हीं शाखाओं से संबंधित कुछ रोचक प्रश्नोत्तर नीचे दिए जा रहे हैं जो तुम्हारा ज्ञानवर्धन करेंगे।

● बहुत देर तक गोलाई में घूमने पर चक्कर क्यों आने लगते हैं?

शरीर का संतुलन कान के अंदर स्थित तीन अर्धवृत्ताकार नलिकाओं द्वारा किया जाता है। इनकी दीवारों पर रोम होते हैं, जिनमें द्रव भरा रहता है। सामान्य तौर पर यह द्रव स्थिर होता है। किंतु जब तुम लगातार गोलाई में घूमने लगते हो तो उसमें गति आ जाने से वह गतिशील हो जाता है। अब यह गति नलिकाओं की भीतरी सतह पर स्थित रोमों के माध्यम से मस्तिष्क तक पहुंचती है जिससे चक्कर आने लगते हैं।

● कुछ लोगों की स्मरण शक्ति कमजोर क्यों होती है?

स्मरण शक्ति कमजोर होने के कई कारण होते हैं। नशीले पदार्थों का सेवन स्मरण शक्ति को क्षीण कर देता है। स्मरण शक्ति पर आयु का प्रभाव भी पड़ता है। शारीरिक एवं मानसिक बीमारी भी स्मरण शक्ति घटाती है। इसके अतिरिक्त क्रोध, घबराहट, तनाव व चिंता के कारण भी स्मरण शक्ति कमजोर हो सकती है।

● कद पूरी उम्र क्यों नहीं बढ़ता है?

जन्म के बाद बच्चा तेजी से बढ़ता है परंतु कुछ समय के बाद वृद्धि की दर धीमी पड़ जाती है। 12 वर्ष की उम्र तक कद लगभग 1.7 मीटर हो जाता है। कुछ बच्चे 20 वर्ष के बाद भी बढ़ते रहते हैं और सही क्रम 35 या 40 वर्ष की आयु के बीच तक हो पाता है। यह शरीर की ग्रंथियों के सिस्टम (तंत्र) पर निर्भर करता है।

● फल पकने के बाद वृक्ष से टूटकर क्यों गिर जाते हैं?

पका हुआ अंडाशय ही 'फल' कहलाता है। जिस स्थान से वह डंठल (वृत्त) से जुड़ा रहता है, वहां एक विलगन-परत का विकास होने लगता है। इसी परत के कारण पोषक तत्वों का फलों में पहुंचना धीरे-धीर कम होने लगता है और अंत में बिल्कुल बंद हो जाता है। यह प्रक्रिया पूरी होते ही फल वृक्ष से टूटकर नीचे जमीन पर गिर जाता है।

● मिर्च खाने के बाद पानी पीने से राहत क्यों मिलती है?

जीभ में कुछ ऐसी संवेदनशील स्वाद ग्रंथियां होती हैं जो मुख्य रूप से मीठे, खट्टे और कड़वे स्वादों को भली भांति पहचानती हैं जिससे जीभ में भी जलन का अनुभव होता है। पानी पीने से यह जलन पैदा करने वाले रसायन पानी के साथ बह जाते हैं और राहत मिलती है।

● धूप में पेड़ की पत्तियां गर्म क्यों नहीं होती हैं?

पौधों की पत्तियों में प्राय: 55 से 85 प्रतिशत तक पानी होता है। वाष्पीकरण की क्रिया से यह पानी वाष्पीकृत होता रहता है। इस क्रिया को प्रस्वेदन कहते हैं। धूप जितनी तेज होती है, प्रस्वेदन की क्रिया उतनी ही अधिक होती रहती है। परिणामस्वरूप पेड़ की पत्तियां धूप में गर्म नहीं होने पाती हैं।

● धूप में कुछ देर बैठने पर आलस क्यों आता है?

धूप में कुछ देर बैठने पर शरीर से पसीना निकलने लगता है जिससे शरीर ढीला पड़ जाता है और आलस घेर लेता है। खाना खाकर भी धूप में बैठने से आलस आ जाता है। दरअसल खाना खाने के बाद शरीर का रक्त भोजन को पचाने का काम शुरू कर देता है। साथ ही मस्तिष्क को भेजा जाने वाला रक्त भी इसी कार्य में जुट जाता है। इस कारण आलस आता है।

● अंडा उबालने पर ठोस क्यों हो जाता है?

कच्चे अंडे का आंतरिक भाग तरल होता है। अंडा उबालने पर ठोस हो जाता है। जानते हो क्यों? दरअसल, अंडे के भीतरी भाग में एक प्रकार का प्रोटीन होता है जो सामान्य ताप पर तरल रहता है। परंतु गर्म करने पर यह प्रोटीन रासायनिक क्रिया के फलस्वरूप विखंडित होकर ठोस में बदल जाता है।

● नाखून काटने से दर्द क्यों नहीं होता है?

शरीर के अंगों की त्वचा दो प्रकार की कोशिकाओं से बनी होती है- जीवित कोशिकाएं और मृत कोशिकाएं। नाखूनों की संरचना मृत कोशिकाओं से होती है। यही कारण है कि नाखूनों में रक्त कोशिकाएं नहीं मिलती हैं। अत: नाखून काटने से दर्द नहीं होता है।

● रात्रि को पेड़ों के नीचे सोना हानिकारक क्यों है?

पेड़ ऑक्सीजन देते हैं और अशुद्ध वायु कार्बन डाई ऑक्साइड लेते हैं। पेड़ प्रकाश संश्लेषण की क्रिया के दौरान ही ऑक्सीजन छोड़ते हैं व कार्बनडाई आक्साइड गैस लेते हैं। यह क्रिया केवल दिन के समय ही होती है। रात्रि को यह क्रिया नहीं होती क्योंकि रात्रि को सूर्य का प्रकाश नहीं रहता है। रात्रि को पेड़ कार्बनडाईआक्साइड छोड़ते हैं और ऑक्सीजन गैस लेते हैं। अत: रात्रि के समय पेड़ों के नीचे सोना हानिकारक होता है।

- 785/8, अशोक विहार, गुरुग्राम (हरियाणा)
मोबाइल-9210456666

कहानी :

प्रथम कदम

● डॉ. चेतना उपाध्याय

मम्मी आज आप भी मेरे साथ स्कूल चलो, हमारा रिजल्ट आने वाला है। तुम ले आओ..... मैं ? आने पर ही देख लूंगी.... नहीं मम्मी! आपको फायदा होगा चलने से। पता है सातवीं कक्षा तो लोकल होती है देखना मैं ही कक्षा में प्रथम आऊंगी। मेरी मेम भी आपको बता देंगी हमारी प्रिंसिपल मेम भी बता देंगी। आप सबसे अच्छे से बात करना। इससे आपको भी आभास हो जाएगा।

आभास किस बात का? प्रतीक की मम्मी ने चौंक कर पूछा। ''अरे मम्मा! अभी सातवीं है। केवल हमारे स्कूल की मेम से ही बात करनी है। अगले साल मैं आठवीं बोर्ड में जिले में प्रथम आऊंगी तो आपको हमारे जिला शिक्षा अधिकारी से भी बात करनी होगी। फिर उनसे भी और उनके साथ और भी बड़े लोग होंगे उन सबसे बात करना पड़ेगी। अच्छा है न आपको आभास हो जाएगा। फिर बड़े-बड़े लोगों से बात करने में आपको डर भी नहीं लगेगा।''

तेरे मुंह में घी शक्कर, चल चलती हूं देहाती हूं मैं भी। इतनी बड़ी-बड़ी डींगें ही हांक रहा है। तेरी बातों में सच्चाई है।

''अरे मम्मा! मुझ पर विश्वास रखो और चलो मेरे साथ।'' तब वे दोनों मां बेटे स्कूल पहुंचे। परीक्षा परिणाम घोषित हुआ और सातवीं कक्षा में प्रथम स्थान प्रतीक को ही प्राप्त हुआ। उसने अंक तालिका लेते ही अपनी मेम के पैर छूए। फिर दौड़ता हुआ अपनी मम्मी के पैर छू कर आशीर्वाद लिया। फिर मम्मी का हाथ पकड़ कर प्रधानाचार्य के सामने ले जाकर उनके पैर छूते हुए बोला,''सर! मेरी मम्मी साथ आई है।''

''अरे वाह! बहुत बहुत बधाई आपको। आपका बेटा अपनी कक्षा में प्रथम आया है। ''

उसकी मम्मी भी फूल कर कुप्पा हो रही थी। कमर तक झुककर अभिवादन करते हुए उन्होंने भी मेम का धन्यवाद कहा। फिर थोड़ी सी बातें की। कई अध्यापिकाएं भी बोली कि आपका बच्चा प्रतीक बड़ा होनहार है। गणित में तो इसके पूरे में से पूरे नंबर आए हैं। पर अगले बोर्ड एग्जाम है थोड़ा विशेष ध्यान देना पड़ेगा। इस पर मेम ने अपने चिर परिचित अंदाज में कहा। मम्मी बोली, ''जी हां! मैं पूरा ध्यान रखूंगी।'' कहकर वे दोनों अपने घर को चल दिए। रास्ते में प्रतीक की मम्मी बोली, '' आज तो मैं देशी घी का हलुआ बनाकर ठाकुर जी को भोग लगाऊंगी।'' अरे ! वाह मम्मा बहुत दिन हो गए। हलुआ छः महीने पहले नवरात्रों में बना था। ''हां बेटा! तुझे याद है।'' हां मम्मा! और बताऊं अगले वर्ष आठवीं बोर्ड में जिले में भी प्रथम आऊंगा। अरे वाह यह तो बहुत अच्छी बात है। तब तो मैं लड्डू बनाऊंगी और देवी जी के मंदिर पर जाकर चढ़ाऊगी। वो टेकरी वाला मंदिर ? हां वहीं चलें पर तू जिले में प्रथम आ तो सही। अरे मेरी मां मैं प्रथम ही आऊंगा। मुझे अपनी मेहनत पर पूरा विश्वास हो गया है। मुझे यह भी समझ आ गया है कि पढ़ाई कैसे करनी चाहिए।

''चल ज्यादा डींकें मत हांक। सारा दिन तो ऊधम चौकड़ी मचाता डोलता-कूदता रहता है।'' मां ने हंसते हुए उसे ढाल जमा दी। अरे मेरी माताश्री पढ़ाई की जगह पढ़ाई, खेल की जगह खेल और खाने की जगह खाना अपन ने तो अपना ऊसूल बना लिया है।'' प्रतीक बडे ही आत्म विश्वास के साथ बोला।

आपको याद है पिछली बार अभिभावक बैठक में एक सर ने आपको कहा था कि इसे गणित की ट्यूशन लगवा दो। नही तो ये फेल हो जाएगा। और अंगरेजी वाली मेम ने भी ट्यूशन के लिए कहा था। मुझे पता है ट्यूशन लगाने में पैसे लगते हैं। आपके पास इतने पैसे हैं भी नहीं।

''हां बेटा! सच्चाई तो यही है।'' कहते हुए मां की आंखों में आंसू आ गए। ''अच्छा छोड़ो उस दिन को... .पता है एक दिन हमारी कक्षा में बाहर से एक मेम आई थी। उन्होंने हमसे हमारी समस्या पूछी। हमारी कक्षा में क्या-क्या होता है कैसे होता है पूछा। उसे समझा फिर हमें समझाया। उन्होंने कहा कि हम एक दिन पहले घर पर अगले पढ़ाने वाले पाठ को पढ़ें। पाठ को पढ़ कर समझने की कोशिश करें। फिर उसमें जो कुछ समझ ना आए, उसे अपनी कापी में

लिख लें। अगले दिन कक्षा में पाठ पढ़ाने के बाद संबंधित पाठ से वे बिंदु जो आपको समझ नहीं आ रहे हैं उनको पूछें। विनम्रता से निवेदन करें समझाने को और वादा करें कि यह समझते ही हम अपना लिखा कार्य पूरा कर के आप से चैक करवा लें। शिक्षक को भी महत्वपूर्ण बिंदु समझाने हों तो उन्हें काम.... पढ़ाने का काम भी कम करना पड़ेगा। वे आपका लिखित कार्य देखेंगे तो उन्हें भी सुविधा होगी और आपकी कक्षा में स्वतः ही अच्छी पढ़ाई होने लगेगी। कोई भी शिक्षक किसी विद्यार्थी द्वारा प्रश्न पूछने पर उसका उत्तर देता ही है।

जब हम स्वयं कुछ नहीं पढ़ते तो वे हमारे ढेर सारे प्रश्नों में हमें ही उलझा देते हैं। स्वयं भी उलझ जाते हैं। उन्हें पढ़ाने के अलावा दूसरे विभागीय कार्य भी करने होते हैं। हालांकि आजकल शिक्षकों को भी गतिविधि आधारित शिक्षा प्रक्रियाओं के प्रशिक्षण प्राप्त हो रहे हैं। आपको उन शिविरों में पढ़ने की जिज्ञासा भी जगानी होगी। सवेरे सवेरे स्कूल आने से पहले जो भी पाठ पढ़ना है। उसे कई बार दोहरा कर पढ़ लो। हमको प्रथम आना है तो प्रथम कदम हमें ही उठाना है।

बस मुझे यह अच्छा लगा। मैं घर पर पहले पढ़ा करता हूं। जो कुछ भी शब्द/सवाल समझ आता है उसे लिखता हूं फिर जो समझ नहीं आता उसे अगले पृष्ठ पर लिख लेता हूं। स्कूल में शिक्षक से पूछ लेता हूं। कई बार कोई पाठ समझ नहीं आया तो दोबारा पूछ लेता हूं। फिर इसे भी लिख कर दोहरा देता हूं। शिक्षक जब कक्षा में पाठ को पढ़ाते हैं तो मुझे भी पढ़ने में मजा आता है। घर आकर खाना खाकर थोड़ी देर मैं खेलता हूं। उसके बाद अपना बस्ता खोलकर पढ़ने लिखने का काम जो भी मुझे स्कूल में दिया जाता है। उसे पूरा करता हूं। शाम को फिर किताब खोलता हूं। फिर एक-एक पाठ को पढ़ता हूं। टी.वी. भी मेरा निश्चित है। एक घंटा देखता हूं। सवेरे भी सुबह चार बजे उठकर दो घंटे पढ़ाई करता हूं।

मैंने अपना टाइम टेबल खुद बना लिया है। मैं खुद ही उसका पालन करता हूं। इससे मुझे अपने आप पर विश्वास हो रहा है। मैं ही प्रथम आऊंगा। मेरे दोस्त भी मेरे जैसा अपना टाइम टेबल बना लें तो हो सकता है हम सभी प्रथम स्थान पर लंबी लाइन बना लें। खूब सारा हलुआ लड्डू और खूब मजे करें। बड़े होकर बड़ा अधिकारी भी तो मुझे बनना है। फिर लो आपको प्रतीक की मम्मी की जगह बड़े साहब की मम्मी बोलें। आपको कितनी खुशी मिलेगी। हां बेटा! काश ऐसा ही हो भगवान तुझ पर कृपा बनाएं रखें।

- गोपाल पथ विहार, कुंदननगर, अजमेर (राजस्थान)
मोबा.: 9828186706

चित्र पहेली

श्याम सिंह के सामने से चिड़ियों का एक झुंड उड़ता हुआ निकला, उस झुंड में कितनी चिड़िया थी? गिनकर उनकी संख्या बताइए।

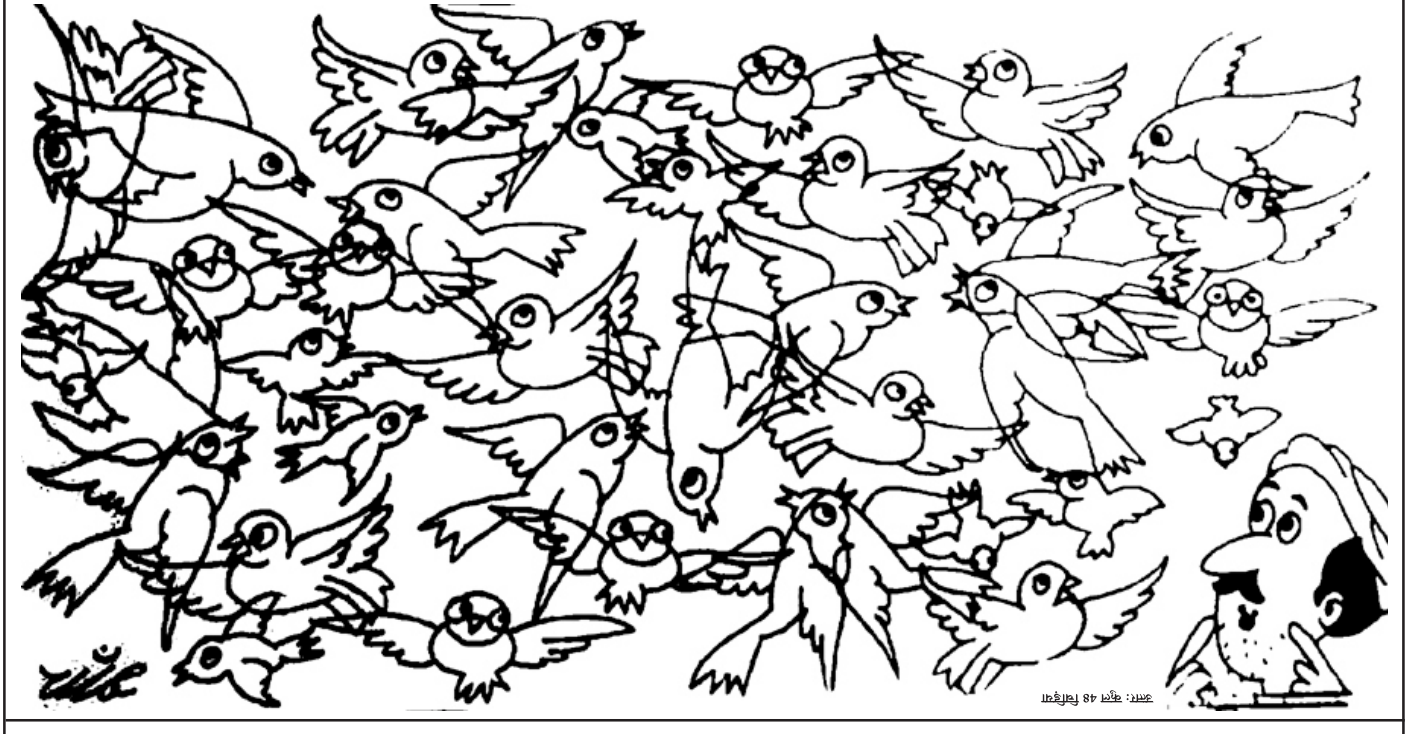

चांद मोहम्मद घोसी नन्हा बाजार मेड़ता सिटी, जिला नागौर (राजस्थान) मोबा. : 9252738487

सुरक्षित कुंभ को तैयार है उत्तराखंड की त्रिवेंद्र सरकार

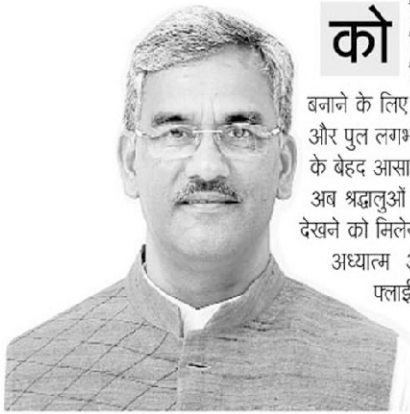

कोविड महामारी के बीच दिव्य और सुरक्षित कुंभ के लिए त्रिवेंद्र सरकार ने तैयारियां पूरी कर ली है। कुंभ स्नान के लिए हरिद्वार पहुंचने वाले श्रद्धालुओं की यात्रा को सुलभ बनाने के लिए बहुप्रतीक्षित दिल्ली-हरिद्वार फोर लेन हाइवे, फ्लाईओवर और पुल लगभग बनकर तैयार हो चुके हैं। श्रद्धालु बिना किसी अवरोध के बेहद आसानी से हर की पैड़ी पर पहुंच पाएंगे। सौंदर्यीकरण के बाद अब श्रद्धालुओं को विश्व प्रसिद्ध हर की पैड़ी का एक नया ही स्वरूप देखने को मिलेगा। धर्मनगरी की सीमा में प्रवेश करते ही श्रद्धालुओं को अध्यात्म और लोक संस्कृति का अलग ही अनुभव होगा। फ्लाईओवर, दीवारें और इमारतों को खास तरह से सजाया गया है। शाम ढलते ही शहर के पुल और चौराहे रोशनी से सराबोर नजर आ रहे हैं। रंगबिरंगी रोशनी के बीच निखर कर आया धर्मनगरी का रूप और अधिक लुभा रहा है। पहली बार यात्री गंगा के किनारे बैठकर शहर के सबसे बड़े पार्क में भजनों की मधुर ध्वनि के साथ गंगा दर्शन कर पाएंगे। नीलधारा तट के आस्था पथ पर गंगा की लहरों को निहारते हुए श्रद्धालु धारा के साथ चहलकदमी कर सकेंगे। श्रद्धालुओं को बेहतर स्वास्थ्य सुविधा देने के लिए दो हजार बेड का कोविड अस्पताल भी तैयार किया गया है। बसों और रेलगाड़ी से आने वाले श्रद्धालुओं के स्वागत के लिए बस अड्डा और रेलवे स्टेशन भी पूरी तरह सज चुके हैं। शाम को श्रद्धालुओं के सैर सपाटे के लिए एल प्वाइंट और सप्तऋषि बांध भी नए स्वरूप में ढल रहे हैं।

सुरक्षित कुंभ के लिए हरिद्वार पूरी तरह से तैयार है। कुंभ निर्माण कार्यों और व्यवस्थाओं में श्रद्धालुओं का विशेष ध्यान रखा गया है। श्रद्धालु महापर्व में स्नान के साथ एक कभी न भूलने वाली स्मृति अपने साथ लेकर जाएंगे। सरकार और मेला प्रशासन कुंभ के सफल आयोजन के लिए संकल्पित है।

– त्रिवेंद्र सिंह रावत, मुख्यमंत्री, उत्तराखंड

हर की पैड़ी का हुआ सौंदर्यीकरण

हर की पैड़ी भी सौंदर्यीकरण कार्यों के बाद पूरी तरह से बदली हुई नजर आ रही है। बेहतर ढंग से भीड़ प्रबंधन की दृष्टि से हर की पैड़ी का सौंदर्यीकरण कार्य किया गया है। नए स्वरूप में अब हर की पैड़ी में आगमन और निकासी के लिए कई द्वार बनाए गए हैं। रेलिंग और पुलों और टाइलों के सौंदर्यीकरण के दौरान पुराने स्वरूप को बनाए रखने का भी पूरा प्रयास किया गया है। यात्रियों की सुविधा के लिए हर की पैड़ी परिसर के बाहर नए निर्माण हुए हैं। इसके साथ तीर्थ पुरोहितों के नए तख्त और महिला श्रद्धालुओं के लिए नए चेंजिंग रूम भी बनाए गए हैं।

पवित्र कुंभ मेला देश विदेश के भक्तों को भारत की आध्यात्मिक, संस्कृतिक और सामाजिक विविधता का गवाह बनने के लिए एक विशेष अवसर प्रदान करता है। प्रयागराज कुंभ में आगंतुकों ने गंगा जी की पवित्रता का अनुभव किया, अब दिव्य और शानदार हरिद्वार कुंभ के दौरान, दुनिया भर के तीर्थ यात्री स्वच्छ गंगा में पवित्र डुबकी लगाने से अत्यंत आनंद का अनुभव करेंगे"

नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

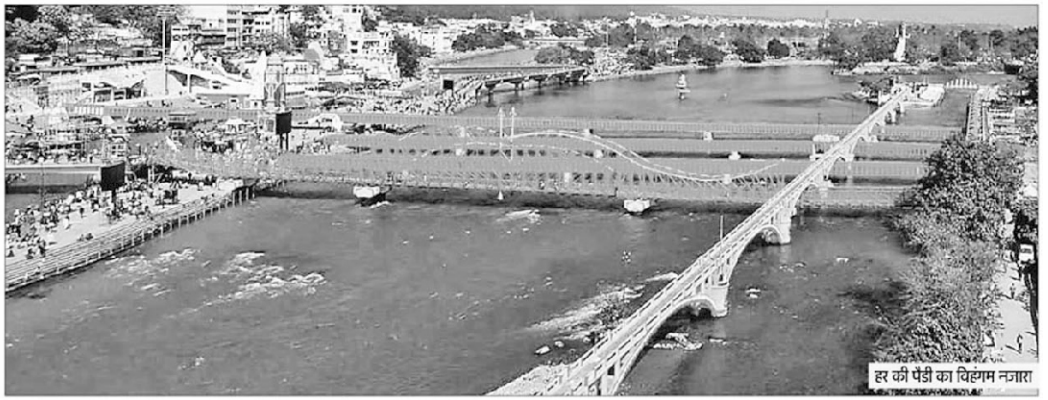

हर की पैड़ी का विहंगम नजारा

रंगबिरंगी रोशनी से जगमगा रहे हैं धर्मनगरी के पुल और चौराहे

सुरक्षित कुंभ के लिए मेगा अस्पताल

कोरोना संक्रमण नियंत्रण के लिए सरकार और

फोरलेन हाइवे और फ्लाईओवर बनने से अब नहीं लगेगा जाम

एक दशक के बाद हरिद्वार का फोर लेन

धर्मनगरी के पुलों, चौराहों और फव्वारों पर लाइट लगाई गई है। रात में पुल रंगबिरंगी रोशनी से जगमगाते हैं तो गंगा जल और रोशनी के मेल से एक अलग ही तिलिस्म पैदा होता है। लोग कई घंटों इस दृश्यों को निहारते रहते हैं।

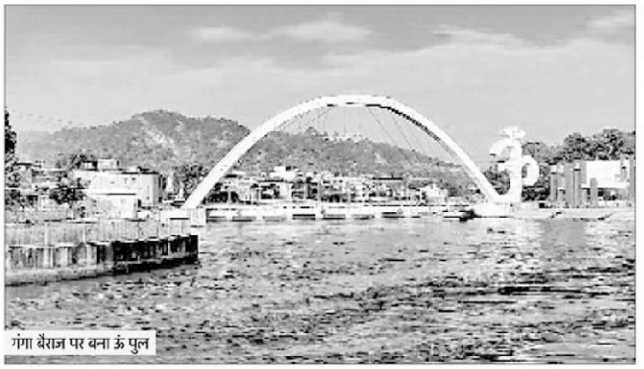

गंगा बैराज पर बना ऊं पुल

कुंभ में आने-जाने वाले यात्रियों के लिए किए हैं खास इंतजाम

बस अड्डे पर सुविधाओं के साथ संस्कृति की झलक

अध्यात्म और उत्तराखंड की संस्कृति के आधार पर बस अड्डे का सौंदर्यीकरण किया गया है। बस अड्डे के दोनों द्वारों में उत्तराखंड की लोक संस्कृति की झलक साफ तौर पर देखी जा सकती है। बस अड्डे के रंग रोगन के साथ पेयजल और शौचालय की व्यवस्था को और अधिक बेहतर बनाया गया है। यात्रियों के लिए धूप से बचाव को बस अड्डा परिसर में नए शेड बनाए गए हैं।

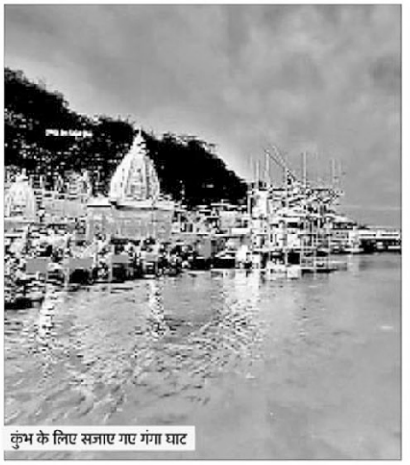

कुंभ के लिए सजाए गए गंगा घाट

रेलवे स्टेशन

कोरोना संक्रमण नियंत्रण के लिए सरकार और मेला प्रशासन ने ठोस योजना तैयार की है। धर्मनगरी में श्रद्धालुओं के लिए दो हजार बेड का अस्पताल तैयार किया जा रहा है। पावन धाम के पास भी एक उच्च स्तरीय सुविधा युक्त 150 बेड अस्पताल का निर्माण कार्य बड़ी तेजी के साथ चल रहा है। एक हजार बेड का अस्थाई कोविड केयर सेंटर भी बनाया जा रहा है।

प्रकृति का आनंद उठाने के लिए बना ग्रीन पार्क

अब पूरा रोड़ी बेलवाला मैदान क्षेत्र एक बड़े हरे भरे पार्क के रूप में नजर आ रहा है। पार्क में विशेष घास बिछाई गई। कुंभ में आने वाले श्रद्धालुओं के लिए ये पार्क भी आकर्षण का केंद्र होगा।

रामायण पथ बनेगा आकर्षण का केंद्र

मेला प्रशासन ने रोड़ी बेलवाला में रामायण पथ तैयार किया है। करीब 800 मीटर लंबी दीवार पर चित्रों के माध्यम से राम कथा दिखाई गई है। रामजन्म, वनवास और श्रीराम-रावण युद्ध के चित्र श्रद्धालुओं को आकर्षित करेंगे।

रेलवे स्टेशन पूरी तरह तैयार

कुंभ से पहले रेलवे स्टेशन परिसर की तस्वीर पूरी तरह से बदल गई है। रेलवे स्टेशन पर परिसर अब किसी मैट्रो सिटी के स्टेशन की तरह नजर आ रहा है। पेयजल, शौचालय और यात्रियों के आराम की सुविधाओं में अब ईजाफा किया गया है। स्टेशन परिसर को उत्तराखंड की लोक संस्कृति और देवी देवताओं की मूर्तियों से सजाने का काम किया जा रहा है। यात्रियों के लिए स्टेशन परिसर में एक विशेष सेल्फी प्वाइंट भी बनाया गया है। स्टेशन के सभी द्वारों को भी अध्यातमिक और सांस्कृतिक रंग दिया जा रहा है।

एक दशक के बाद हरिद्वार का फोर लेन हाइवे और फ्लाइओवर का इंतजार खत्म होने जा रहा है। हाइवे और फ्लाईओवर का करीब 80 फीसदी कार्य पूरा हो चुका है। वहीं हरिद्वार नए पुलों के निर्माण से जाम से समस्या से पूरी तरह से मुक्त हो गया है। बीते दो डेढ़ साल के दौरान हाइवे पर युद्धस्तर पर काम हुआ, जिसका नतीजा यह हुआ निर्धारित डेडलाइन तक सभी कार्य पूरे होते चले गए। ज्वालापुर, मायापुरी, चंडी चौक, सब्जी मंडी, पतंजलि फ्लाइओवर, कोर कॉलेज फ्लाइओवर का काम पूरा कर लिया गया है। वहीं प्रेमनगर और सिंहद्वार फ्लाइओवर का कार्य अंतिम चरण में है। ओल्ड सप्लाई, न्यू सप्लाई, भीमगोड़ा, डैम स्केप, रेलवे आरओबी पुल का काम पूरा हो चुका है।

फ्लाईओवर।

बैरागी कैंप तक की राह हुई आसान

तीन स्थाई पुलों के निर्माण से बैरागी कैंप क्षेत्र अब पहली बार कनखल क्षेत्र से जुड़ चुका है। अब दिल्ली और लक्सर-हरिद्वार हाइवे से आने वाले संत और श्रद्धालु बैरागी कैंप में पहुंच पाएंगे। दक्षद्वीप और बैरागी कैंप को जोड़ने वाल पुल भीड़ के नियंत्रण की दृष्टि से काफी कारगार साबित होगा। वहीं संत बहुल्य क्षेत्र भूपतवाला में सूखी नदी पर नए पुल का निर्माण भी पूरा होने जा रहा है। भेल मध्य मार्ग पर नए पुल का निर्माण होने के बाद श्रद्धालुओं को जाम की समस्या का सामना नहीं करना पड़ेगा। लंबे इंतजार के बाद धनौरी मार्ग पुल तैयार हो चुका है।

चौराहों का सौंदर्यीकरण

अब आस्था पथ में जीवनदायनी मां गंगा की लहरों के साथ कदमताल कर सकेंगे श्रद्धालु

आस्था पथ घूमने के लिए एक किलोमीटर ट्रेक बनाया गया है। विभिन्न स्थानों पर सेल्फी प्वांइट बनाए गए है। जिसमें यात्री गंगा दर्शन के दौरान अपनी सेल्फी भी क्लिक कर सकते हैं। आस्था पथ पर योग और ध्यान के स्थान बनाया गया है। आस्था पथ में श्रद्धालुओं के टहलने और आराम फरमाने के लिए एक पार्क है। आस्था पथ में कई स्थान ऐसे है जहां से श्रद्धालु मां मनसा देवी और मां चंडी देवी मंदिर के एक साथ दर्शन कर सकते हैं।

विज्ञापन

मामा

● सूबेदार कृष्णदेवप्रसाद सिंह

बच्चों का मामा, बंदर मामा,
बड़ों का मामा, चंदा मामा।
नचाता इसे डमरू पर मदारी,
किसी का कुर्ता, किसी का पैजामा।
बड़ों का मामा शांत और शीतल,
मामा बच्चों को, करे रोज हंगामा।
पीछे मामा के सारे बच्चे भागे,
मारे मामा को पत्थर, रामा-रामा।
बच्चे जैसे किया करते शरारत,
वैसा ही कारनामा, करता मामा।
बच्चों के मामा का पेट न भरता,
खाना पकाते मर जाए खानशामा।
नहीं मामा से अच्छा काना मामा,
जग में सबको प्यारा अपना मामा।

- फ्लैट नं.-2, मयुरेश अपार्टमेंट, आडके नगर-3,
जयभवानी रोड, नासिक (महाराष्ट्र)
मो.- 9011777572

बच्चे

● रतनसिंह किरमोलिया

फूलों सा महकेंगे,
चिड़ियों सा चहकेंगे।
हम भारत मां के बच्चे,
चांद सितारों सा चमकेंगे।
खेल खेल में करते हैं,
बड़ा-बड़ा दम भरते हैं।
काम कौन सा है बड़ा,
जो हम नहीं कर सकते हैं।
हम भारत के बच्चे हैं,
दिल दिमाग के सच्चे हैं।
निर्मल मन और सबल तन,
लेकर कितने अच्छे हैं।
प्यारे प्यारे राज दुलारे,
हम धरती के चांद सितारे।
अपनी मोहक मुस्कानों से,
सौ सौ बल्ब हुए उजियारे।

- अणां,गरूड़, बागेश्वर
मोबाइल- 7534007179

भालू की बारात

● विपिन जोशी 'कोमल'

बंदर लंगूर, हिरन देखो,
आई भालू की बारात।
ऊंट लोमड़ी सभी बाराती,
नाचे सारी रात,
आया चूहा बैंड बजाते,
ढोल बजाती बिल्ली आई।
लोमड़ी दीदी सीटी बजाए,
देख दुल्हन खूब मुस्काई।
खाने को व्यंजन बहुत थे,
छक कर सबने खाया।
सारे बाराती मस्त थे,
लंगूर ने नाच दिखाया।
चूहे का तो हाल बुरा था,
बैंड बजाना भूल गया।
दूध मलाई रबड़ी देख,
खाने पर वह टूट गया।
क्या-क्या खाया जाने उसने,
मुंह नाक से निकल गया।
आकर हाथी दादा ने,
सभी को ये समझाया।
पचा सको उतना ही खाओ,
मत समझो तुम माल पराया।

- थपलिया, अल्मोड़ा
मोबाइल-9105141329

मैं भी उड़ती काश!

● अनंतप्रसाद 'रामभरोसे'

बिल्ली बोली तोड़ गिरा दो,
सब खट्टे अंगूर।
कौआ भैया! चलो कहीं हम,
खाएं मोतीचूर।
कौआ बोला, समझ रहे हम,
तेरी सारी चाल।
यहां नहीं गलने वाली है,
मौसी तेरी दाल।
सुन कर कौए की ये बात,
बिल्ली बहुत उदास।
मुंह लटकाकर चली, सोचती,
मैं भी उड़ती काश।

- सागर पाली, बलिया,उ.प्र.
मोबाइल- 9838408017

मानव धर्म

● सरोजनी कुकरेती

हैं सारे मानव एक समान,
आते इक दूजे के काम।
रामू भय्या कपड़े धोता,
असलम प्रेस लगाकर लाता।
किशनू काका जोते खेत,
जॉनी छान रहा है रेत।
मरियम बीबी काढ़े शाल,
मीरा करती उसका मोल।
रहीम कुल्हड़ रोज बनाता,
अशरद उसे बेच कर आता।
सूरज चहुं दिश रोशन करता,
धरा सभी को अन्न जल दाता।
इनसे सीखें मिलकर जीना,
मन में स्वार्थ रहे कभी ना।
धर्म सभी करते ये गान,
मानव धर्म सब एक समान।

- कालीदास मार्ग, कोटद्वार,पौड़ी
मोबाइल-9756881338

पौधा

● शशि बाला श्रीवास्तव

मैं हूं पौधा एक निराला,
हरा भरा सुख देने वाला।
सबसे नीचे मेरी जड़ है,
बांधे मिट्टी का कण-कण है।
जड़ के ऊपर मेरा तना है।
वह मोटा मजबूत बना है।
तने से हैं शाखाएं निकलती।
उसमें फल, फूल पत्तियां रहती।
पानी सोखना जड़ों का काम।
ऊपर पहुंचाना तने का काम।
तने में होते विशेष ऊतक।
जो पहुंचाते हैं ऊपर तक।
धूप में पत्ती बनाती भोजन।
इससे निकलती है ऑक्सीजन।

- पूर्व मा.विद्यालय टांडा, रायबरेली,उ.प्र.
मोबाइल- 9451763149

कहानी :

सच्ची खुशी

● राजेश्वरी जोशी

गांव के प्राथमिक विद्यालय में तनु और उसका भाई दीपक पढ़ते हैं। तनु आठ साल व कक्षा तीन की छात्रा है। जबकि दीपक दस साल का कक्षा पांच का छात्र है। दोनों भाई-बहन आजकल बहुत प्यार से रहते हैं। तनु जब डेढ़ वर्ष की थी। तभी उसकी मां किसी बीमारी के कारण स्वर्ग सिधार गई थी। पिता ने दूसरी शादी कर ली थी। दूसरी शादी से भी एक लड़की थी। इसलिए तनु और दीपक नाना-नानी के पास ही रहते थे।

पिछले साल तनु और दीपक के पिताजी उन्हें अपने साथ ले गए। नानी से कहा कि, "मैं इन्हें अच्छे स्कूल में पढ़ाऊंगा।'' नानी ने भी सोचा चलो बच्चों की अच्छी पढ़ाई होगी। बाप है, शायद अपने बच्चों की याद आ गई होगी। अच्छी तरह से बच्चों को रखेगा। भेज दिया बच्चों को उसके पिता के साथ शहर में। शहर की एक फैक्ट्री में बच्चों के पिता काम करते थे। नाना-नानी गरीब थे आखिर कहां से बच्चों को पढ़ाते। बच्चे भी शहर जाने के नाम पर खुशी-खुशी पिता के साथ शहर चल दिए।

शहर में बच्चों को लाने के बाद सौतेली मां का व्यवहार बच्चों के प्रति अच्छा नहीं था। बच्चों को लेकर पति-पत्नी में रोज कलह होने लगी। इस पर उनके पिता ने दीपक को अपने पहाड़ के गांव, अपने बड़े भाई के पास भेज दिया। सौतेली तनु से झाड़ू लगाना, दो मंजिले घर में नीचे से पानी भरकर लाना, बर्तन मांजना व घर के सारे काम करती। सौतेली मां को उस पर तरस ना आता। तनु सारा दिन काम करती। उसे स्कूल भी नहीं भेजा जाता। तनु की सौतेली मां को मुफ्त में काम करने वाली मिल गई थी। छोटी से तनु को देखकर भी उसका दिल नहीं पसीजता। बस अपनी बेटी को ही प्यार करती।

एक दिन नानी बच्चों से मिलने शहर पहुंची। तनु को काम करता हुआ देखकर नानी का दिल बहुत दुःखी हुआ। नानी को देखकर तनु भी 'नानी-नानी' कहकर नानी के गले लग गई। नानी को जब पता चला कि तनु को स्कूल नहीं भेजा जाता तो उसे बहुत गुस्सा आया। वह तनु के पापा से खूब लड़ी और तनु को जबरदस्ती फिर अपने साथ गांव ले आई। दीपक के बारे में बताया गया कि वह एक अच्छे स्कूल में पढ़ रहा है। नानी थी गांव की भोली, फिर बूढ़ी उसने विश्वास कर लिया। शायद बुढ़ापे को ध्यान में रखकर बाप लड़के को पढ़ा दे। आखिर लड़का बुढ़ापे का सहारा बनेगा। यह सोचकर नानी ने अपने मन को समझाया। तनु को घर लाने के छः महीने बाद एक दिन दीपक रात के दस बजे घर आ गया। नाना-नानी कुछ समझ नहीं पाए कि अचानक दीपक घर कैसे आ गया? वह भी अकेला और फिर रात के दस बजे?

दीपक नाना-नानी से लिपट कर जोर से रो पड़ा। उसके कपड़े गंदे व फटे हुए थे। बाल भी बहुत बड़े हुए थे। नाना-नानी के पूछने पर उसने बताया कि चार महीने पहले उसके पिता, ताऊ जी के पास से उसे शहर ले आए थे। सौतेली मां रोज उसे पिता के नौकरी पर जाने के बाद कहती थी "भाग जा, घर में रहेगा तो मारूंगी।" आज वह घर से भाग आया। आधे रास्ते वह पैदल आया। रास्ते में उसका संपर्क एक ड्राइवर से हुआ। वह ड्राइवर नानी के गांव का था। उसको जानता था और भला भी था। वह बिना टिकट के ही दीपक को गांव ले आया। गांव के बाजार से घर आने तक उसे रात के दस बज गए।भाई को इतने दिन बाद देखकर तनु खुशी से दीपक से लिपट गई। दोनों जोर-जोर से रो रहे थे। नाना-नानी के पास पहुंच के तनु और दीपक बहुत खुश थे। अब वह अपनों के पास थे।

एक दिन की बात है। उनका पिता अचानक पुलिस को लेकर गांव आया। उसने पुलिस में शिकायत की कि नानी उसके लड़के का अपहरण कर गांव ले आई है। वरना इतना छोटा लड़का अकेले कैसे आ सकता है। लेकिन गांव वालों व बच्चों की बात सुनकर दरोगा ने उनके पिता को डांठ कर भगा दिया।

अब बच्चे बहुत खुश थे। अब वह अपने नाना-नानी के साथ थे। वह फिर से गांव के पहले वाले प्राइमरी स्कूल में पढ़ने लगे। अपने दोस्तों, अध्यापकों से मिलकर वे बहुत खुश हुए।

- शक्तिफार्म,
उधमसिंह नगर

कहानी :

पंचर मोटर साइकिल

● रघुराज सिंह 'कर्मयोगी'

रात के ढाई बजने को थे। बरसात का मौसम फिसलन भरा। सरसराती तेज हवा के झोंकों के साथ नन्हीं-नन्हीं फुहारें ठंडक का अहसास दिला रही थी। विजय जो रेलवे में अभियंता था, आज निश्चित हो कर नींद के आगोश में चला गया। अचानक उसके मोबाइल की घंटी टनटना उठी। ऐसे में उनींदे व्यक्ति को फोन अटेंड करने में काफी कष्टदायक लगता है। दूसरी घंटी भी न सुनी तो कंट्रोल रूम का बाबू भुनभुनाने लगा। किसी तरह विजय की नींद टूटी। उसने मोबाइल के स्क्रीन पर देखा तो ज्ञात हुआ नियंत्रण कक्ष से घंटी आ रही थी। वह चौकन्ना हो गया। मोबाइल कान से लगा कर 'हैलो' कहा तो दूसरी तरफ से आवाज आई -

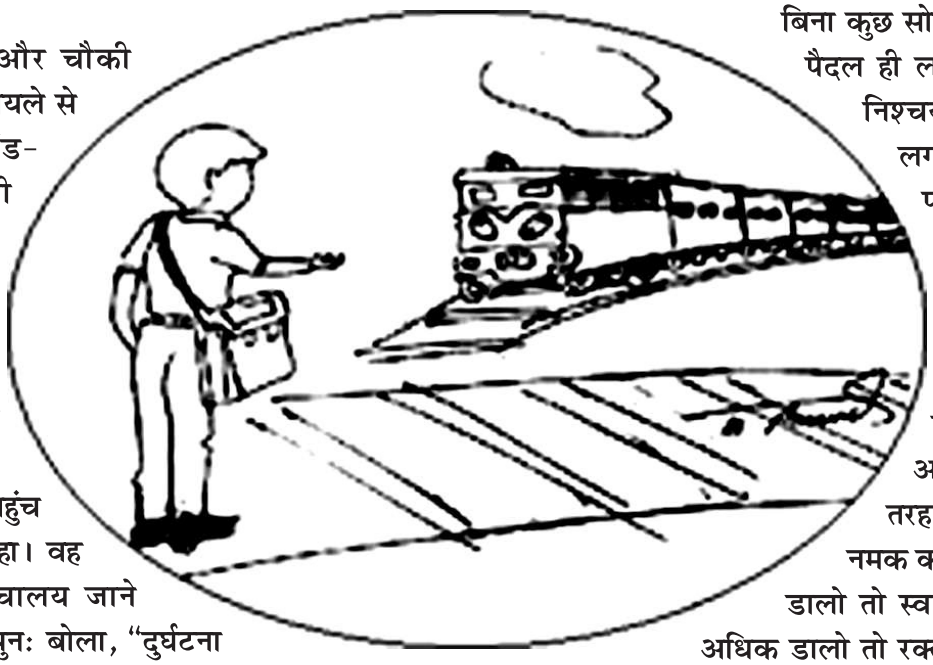

"सर, सालपुरा और चौकी मोतीपुर के बीच में कोयले से भरी मालगाड़ी, भिंड-ग्वालियर सवारी गाड़ी से टकरा गई है। बाहर निकल कर सुनिए रेलवे का साइरन बज रहा है। जान-माल की क्षति होने की संभावना है।"

"ठीक है, मैं शीघ्र पहुंच रहा हूं।'' विजय ने कहा। वह बिस्तर छोड़कर शौचालय जाने लगा। इधर नियंत्रक पुनः बोला, "दुर्घटना राहत गाड़ी और मेडिकल वैन दोनों ट्रेनें रवाना होने के लिए तैयार खड़ी हैं। शीघ्र आइए।"

"कह दिया न आ रहा हूं। पैंतालीस मिनट के नियत समय में मैं लोको शैड पहुंच जाऊंगा।"

लाइन पर कहीं भी पटरी से गाड़ी उतर जाती है या ट्रेनें भिड़ जाती हैं तो रेलवे का तीन बार साइरन बजता है। संबंधित कर्मचारियों और अधिकारियों को दिन में 30 मिनट और रात में 45 मिनट के अंदर राहत गाड़ी पर पहुंचना अनिवार्य होता है। अन्यथा लापरवाही के आरोप में विभाग द्वारा उन कर्मचारियों के विरूद्ध कार्यवाही की जाती है। दुर्घटना के प्रकरणों में लापरवाही कतई बर्दाश्त नहीं की जाती है।

विजय शौच के बाद बाहर निकला तो कानों को साइरन की ध्वनि सुनाई दी। जो कर्तव्य पथ पर शीघ्र अग्रसर होने का स्मरण करा रही थी। उसने कपड़े पहने और बिना कंघी किए ही चलने लगा। मोटर साइकिल चैक की तो पता चला कि पिछले पहिए कि हवा निकली हुई है। करेला और नीम चढ़ा। वह घबरा गया। सिर पकड़ कर बैठ गया। अब क्या होगा? वह लोको शैड कैसे पहुंचेगा? जब तक पहुंचेगा तब तक राहत गाड़ी चली जाएगी। क्या करे क्या न करे? असमंजस की स्थिति में 45 मिनट रेत की तरह हाथ से खिसकने लगे। रात का समय ऊपर से बरसात का संकट अलग।

बिना कुछ सोचे-समझे, विजय ने पैदल ही लोको जाने के लिए निश्चय किया और दौड़ लगा दी। उसे ऊपर से पानी की बूंदें भिगो रही थीं। नीचे से सड़क में जगह-जगह भरा हुआ पानी दौड़ने के कारण उसके ऊपर आ रहा था। पेंट पूरी तरह भीग गई। ड्यूटी भी नमक की तरह होती है। कम डालो तो स्वाद बिगड़ जाता है। अधिक डालो तो रक्तचाप बढ़ जाता है। दौड़ते-दौड़ते उसकी सांस फूल गई। हांफता-हूंफता वह किसी तरह कंट्रोल रूम पहुंचा। वहां मित्रों की मोटर साइकिल तैयार खड़ी थी। विजय ने दोस्तों को मदद करने के लिए कह दिया। मित्र उमेश शर्मा ने विजय को मोटर साइकिल पर बिठा कर लोको शैड पहुंचा दिया। वहां देखा तो इंजन सीटी देकर चल चुका था। राहत गाड़ी निकल न जाए, इसलिए विजय ने बिजली जैसी चपलता के साथ मोटर साइकिल से उतर कर यहां भी दौड़ लगा दी। अंततः भाग कर उसने गाड़ी का हेंडल पकड़ ही लिया। कोच में जो राहत कर्मचारी खड़े थे, उनमें से अनिल ने विजय को सहारा दे कर अंदर खींच लिया।

अब विजय ने राहत गाड़ी पर राहत की सांस ली। यदि ट्रेन

सद्चरित्र

● कालिका प्रसाद सेमवाल

खेलें-कूदें पढ़े-लिखें हम,
पढ़ लिखकर विद्वान बनें।
बबलू, बबली गुड़िया आओ,
सद्चरित्र का निर्माण करें।
पहले खोजें मंजिल अपनी,
फिर मुकाम तक पैर बढ़ाएं।
सकल विश्व में विचरण करके,
आओ हम अज्ञान हरें।
विकसित अपना भारत होगा,
विश्व गुरु फिर कहलाएगा।
अपने भारत के बच्चों की,
क्षमता का गुणगान करें।

- मानस सदन, अपर बाजार, रुद्रप्रयाग

बगुला

● डॉ. रामसहाय बरैया

बगुला नभ में उड़ि चले,
ज्यों अनुशासित फौज
दूर गांव तालाब में,
लगे मनाने मौज।
लगे मनाने मौज,
खा रहे मेढक, मछली।
साफ झील जल बीच,
प्रसन्न है बगुला-बगुली।
कहत बरैया राय,
गगन घन चमके चपला।
वर्षा ऋतु की घटा,
बढ़ाते हैं नभ बगुला।

- 35 पंचशीलनगर, मेला ग्राउंड,
आर.के .पुरी, ग्वालियर, म.प्र.
मोबाइल- 9009850298

दादी मां

● शकुंतला शर्मा

रोज सबेरे उठकर हमें जगा देती हैं दादी मां,
अपना सारा लाड़-दुलार लुटा देती है दादी मां।
कब सोती हैं, कब जगती हैं पता नहीं लग पाता है,
लोरी सुना-सुना कर हमें सुला देती हैं दादी मां।
परी कहानी, राजा-रानी, अच्छे बच्चे व हिरन,
सुना कहानी सबसे हमें मिला देती हैं दादी मां।
कभी-कभी जब बिना बात भी रूठ जाते हैं हम,
हंसकर प्यार जताकर हमें मना लेती हैं दादी मां।
कभी पिटाई करें न गुस्सा, न हमें डॉटती हैं,
मम्मा डांटे उनको डांट पिला देती है दादी मां।
होमवर्क हो अगर अधूरा, हमें याद दिला देती,
साथ बैठकर पूरा उसे करा देती है दादी मां।
भारी बस्ता लेकर जब थके-थके घर आते हैं,
मीठा सेब खिलाकर दूध पिला देती है दादी मां।

- 86 तिलकनगर, बाईपास रोड,फीरोजाबाद,उ.प्र.
मोबाइल- 9412316779

सुंदर घर

● राजेंद्र निशेश

राम, श्याम में कभी न भइया,
होती यहां लड़ाई जी।
नर्म धूप में दादी-अम्मा,
करती रोज कढ़ाई जी।
दादा जी मीठे फल लाते,
पीते दूध-मलाई जी।
प्यारा मुन्ना खिल-खिल हंसता,
मिलती उसे मिठाई जी।
सुबह काम पर पापा जाते,
जोड़ें पाई-पाई जी।
मम्मी गृह-कार्य सब करती,
रखती खूब सफाई जी।
सारे बच्चे मिलकर खेलें,
करते रात पढ़ाई जी।

- 2698, सैक्टर 40-सी, चंडीगढ़

व्यायाम

● केशरी प्रसाद पांडेय 'वृहद'

जैसे जामुन, लीची, आम,
वैसे खेल और व्यायाम।
मौसम में होते नीलाम,
मिल जाते हैं सस्ते दाम।
खेलो खेल करो व्यायाम,
तब तक नहीं दवा का काम।
जीवन में यदि फिट रहना है,
सब खेलों के लिख लो नाम।
कुश्ती और कबड्डी खेलो,
खो-खो खेल करो विश्राम।
बालीबाल और फुटबाल,
खेल के लो हरि का नाम।
खेल-पढ़ाई केवल काम,
होगा नहीं कभी व्यवधान।
मौसम चाहे बदले रंग,
खेल कभी ना हो बदरंग।
खेलो-पढ़ो तुम संग-संग,
मैत्री कभी न होवे भंग।
बचपन में केवल दो काम,
एक खेल दूजा व्यायाम।

- 527/25-ए, सृजन कुटी, आर्यननगर,
न्यू जगदंबा कालोनी, जबलपुर (म.प्र.)
मोबाइल-9424746534

छूट जाती तो उसका दंडित होना तय था। जांच कमेटी का कोई भी सदस्य यह मानने को तैयार नहीं होता कि उसे राहत गाड़ी तक पहुंचने के लिए कितने समंदर पार करने पड़े हैं। इसके बाद एक घंटे के अंतराल में यह ट्रेन सालपुरा स्टेशन पहुंच गई। उसे वहां खड़ा कर दिया गया। वहां खड़े-खड़े एक डेढ़ घंटा निकल गया। लाइन पर दुर्घटनाग्रस्त न तो कोई मालगाड़ी दिखाई दे रही थी और ना ही कोई यात्री गाड़ी की आपस में भिंडत। सभी लोग एक दूसरे को आश्चर्य से देख रहे थे। विजय इस दुर्घटना राहत गाड़ी का प्रभारी अधिकारी था। उसको कंट्रोल रूम से संदेश मिला।

"आज गाड़ियों की कोई भी भिंडत नहीं हुई है। यह एक मोकडिल थी। जो कर्मचारियों को बिना सूचना के अभ्यास कराया गया था।" उसके बाद सब लोग वापिस आ गए।

- 1059/बी, थर्ड एवेंन्यू, आदर्श कॉलोनी,डडवाड़ा,
कोटा जंक्शन, राजस्थान 324002
मोबाइल 8003851458

व्यक्तित्व:

सत्येंद्रनाथ बोस

● संतोष किरौला

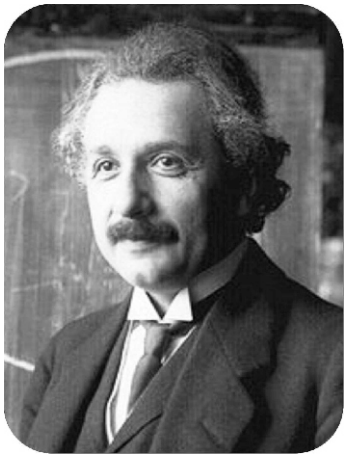

प्रसिद्ध वैज्ञानिक सत्येंद्रनाथ बोस का जन्म 1 जनवरी,1894 को कोलकाता के एक गांव में हुआ। उनकी प्रारंभिक शिक्षा घर के समीप के विद्यालय में ही हुई। सन् 1915 में उन्होंने गणित में स्नात्तकोत्तर की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। कोलकाता विश्व विद्यालय ने उन्हें तथा उनके सहपाठी मेघनाथ साहा को उनकी प्रतिभा के आधार पर प्राध्यापक पद पर नियुक्त किया। प्राध्यापक पद पर रहते हुए उन्होंने सोचा कि हमें कुछ नया करना चाहिए। वे दोनों वैज्ञानिकों के बारे में पढ़ते तथा वैज्ञानिक शोधों का अध्ययन करते ।

एक बार सत्येंद्रनाथ बोस ने एक शोध आलेख तैयार किया। किसी भी पत्रिका ने उनके शोध आलेख को नहीं छापा। इस पर उन्होंने अपना शोध आलेख आइंस्टीन को भेज दिया। आइंस्टीन ने उनके आलेख का जर्मनी में अनुवाद करके उसे एक पत्रिका में छपवा दिया। इस पर सत्येंद्रनाथ बोस को बहुत प्रसिद्धि मिली। आइंस्टीन ने उत्साहवर्धन करते हुए एक पत्र बोस को लिखा। जिससे सत्येंद्रनाथ बोस गदगद् हो गए। बाद में बोस ने आइंस्टीन को अपना गुरू मान लिया। बाद में वे ढाका विश्वविद्यालय में प्राध्यापक बने। उन्होंने ढाका विश्वविद्यालय से दो वर्ष की अवधि का अवकाश देने तथा यूरोप जाने की अनुमति मांगी। पहले तो विश्वविद्यालय तैयार नहीं हुआ। परंतु जब विश्वविद्यालय को उन्होंने आइंस्टीन का पत्र दिखाया तो उन्हें दो वर्ष यूरोप जाने का अवकाश मिल गया। इस पर वे एक साल तक पेरिस में रहे। वहां उन्होंने मैडम क्यूरी तथा दूसरे वैज्ञानिकों से एक्सरे की तकनीक को समझा। उसके बाद वे वर्लिन में आइंस्टीन से मिले। सन् 1926 में भारत लौटने के बाद वे ढाका विश्वविद्यालय में प्रोफेसर बन गए। शांति निकेतन में विश्व भारती विश्वविद्यालय के कुलपति रहते हुए उन्होंने शोध कार्यो को बढ़ावा दिया। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उनके कार्यो को देखते हुए सन् 1954 में भारत सरकार ने उन्हें पद्म विभूषण पुरस्कार से सम्मानित किया। 80 वर्ष की आयु में 4 फरवरी, 1974 को उनका निधन हो गया।

कोलकाता विश्वविद्यालय में बच्चों ने किसी मांग को मानने के लिए उनका घेराव किया। उन्होंने कहा कि मैं गलत नहीं कर सकता हूं।आप लोग नहीं मानते हैं तो मैं विश्वविद्यालय छोड़ने को तैयार हूं। एक बार विश्वविद्यालय के एक प्रश्न पत्र में एक सवाल को किसी बच्चे ने हल नहीं किया। कुलपति आशुतोष मुखर्जी ने स्वयं प्रश्न पत्र सैट किया था। इसलिए उन्होंने प्राध्यापकों की इस प्रश्न को लेकर बैठक बुलाई। बैठक में युवा प्राध्यापक ने कहा कि सर आपने गलत प्रश्न पूछा है। इस पर सारे प्राध्यापक भौचक्के रह गए। आखिर कुलपति को कौन गलत कह सकता है। वे युवा प्राध्यापक थे- सत्येंद्रनाथ बोस। उनमें गलत को गलत कहने का साहस जो था। एक बार उनके लड़के का प्रवेश इंजीनियरिंग कालेज में होना था। इंजीनियरिंग कालेज में सारे लोग उनके परिचित थे। उन्होंने अपने लड़के से योग्यता के आधार पर प्रवेश पाने का प्रयास करने को कहा। एक बार वायसरॉय लॉर्ड वैवेल ने उन्हें दिल्ली में रात्रि भोज के लिए आमंत्रित किया। उन्होंने आमंत्रण स्वीकार कर भी लिया। लेकिन उसी रात उनका एक दोस्त उनके पास पहुंच गया। उन्होंने वायसरॉय के आमंत्रण में जाने के बजाय अपने दोस्त के साथ रहने का मन बनाया।

- रानीखेत,अल्मोड़ा

खोजबीन

कु छी रा ली न गि लो
था ला स क चू प
टा र ल बे टो ल्हा

ऊपर दिए गए शब्दों में घर के किचन में काम आने वाले कम से कम 8 वस्तुओं के नाम छिपे हैं ढूंढ कर लिखिए।

संवाद:

बोलो देवीदा

● देवेंद्र मेवाड़ी

विज्ञान व वैज्ञानिक सोच को जन-जन तक पहुंचाने के लिए प्रयासरत बच्चों के प्रिय लेखक आदरणीय देवेंद्र मेवाड़ी जी ने बालप्रहरी के बच्चों द्वारा पूछे गए सवालों का जबाब हर अंक में देने की सहमति प्रदान की है। आप भी कोई सवाल पूछ सकते हैं। आपका उत्तर अगले अंके में आपके नाम/प्रश्न के साथ प्रकाशित किया जाएगा। आदरणीय मेवाड़ी जी का पता व फोन अंत में दिया है।आप उनसे सीधे भी संपर्क कर सकते हैं।

प्रश्न: गाय तो हरी घास खाती है, लेकिन उसका दूध सफेद क्यों होता है? (अनुभव चमोली, पौड़ी)

उत्तर : अनुभव! क्या तुमने गोमूत्र और गोबर भी देखा है? हरी घास खाकर उनका रंग भी हरा नहीं होता! दूध सफेद होता है, गोबर भूरा-पीला और गोमूत्र सुनहरा। यह इसलिए कि ये अलग-अलग ढंग से बनते हैं। घास खाने के बाद गाय खूब जुगाली करती है, खाना चबा-चबा कर अपने पेट में भेजती है। वहां से वह भोजन छोटी आंत में जाता है जो बहुत लंबी होती है। फिर वह आगे बढ़ कर बड़ी आंत में जाता है। जहां से गोबर के रूप में बाहर निकल जाता है। इस बीच आंतें भोजन के पोषक तत्व और पानी सोख लेती हैं। वे पोषक तत्व खून में चले जाते हैं। खून तो सारे शरीर में घूमता है इसलिए उन पोषक तत्वों से पूरे शरीर को ताकत मिलती है। खून में से जो फालतू पानी और बेकार तत्व होते हैं उन्हें गुर्दे मतलब किडनी अपनी छलनी में छान कर मूत्र के रूप में बाहर निकाल देते हैं। अब रही दूध की बात तो वह आंतों में नहीं बल्कि गाय के थनों वाले भाग में बनता है। वहां दूध बनाने वाली ग्रंथियां होती हैं। उनमें से दूध लंबी अंगुलियों जैसे थनों में आ जाता है। जब गाय की बछिया या बछड़ा थन मुंह में लेकर चूसता है तो उनसे दूध निकल कर उसके मुंह में आ जाता है। तुम्हें एक मजेदार बात बताऊं? गांव में जब मेरी भतीजी छोटी थी तो वह भी गाय के थन पर मुंह लगा कर दूध पी लेती थी। समझने की बात यह है कि गाय दूध अपने बच्चों के लिए बनाती है। जो ज्यादा दूध होता है उसे हम लोग पी लेते हैं। वह हमारे लिए भी बहुत पौष्टिक भोजन है। घास खाने और उसके हरे रंग का दूध से कोई संबंध नहीं है क्योंकि घास तो पेट में पच जाती है जबकि दूध थनों में बनता है। वहां घास का हरा रंग नहीं पहुंचता। इसीलिए दूध सफेद रंग का होता है। हम मनुष्यों की माताओं के दूध का रंग भी सफेद ही होता है।

प्रश्न: गंजापन पहले सिर के बीच से क्यों शुरू होता है? (आयुष चिन्यालीसौड़, उत्तरकाशी)

उत्तर: इसके कई कारण हैं आयुष! एक कारण तो यह है कि शायद यह विरासत में मिला हो। मतलब माता-पिता से जो जीन यानी आनुवांशिक गुण हमें मिले हैं। उनमें से कोई जीन गंजेपन का भी आ गया हो। इसके अलावा पौष्टिक भोजन न करने, तनाव में रहने या बीमार पड़ने से भी सिर के बाल गिर जाते हैं। प्रकृति ने पहले से ही यह तय कर रखा है कि किसके सिर के बाल कैसे गिरेंगे। अक्सर वे सिर के बीच में से पहले गिरते हैं और फिर उसके बाद कनपटियों के पास से गिरने लगते हैं। पुरुषों में अक्सर इसी तरह बाल गिरते हैं। वैसे भी हमारे सिर से हर रोज करीब 100 बाल गिरते हैं और उनकी जगह पर नए बाल आ जाते हैं। उम्र बढ़ने के साथ-साथ बाल हल्के और पतले हो जाते है। उसके बाद तो बालों का उगना ही बंद हो जाता है।

प्रश्न : किसी-किसी की अंगुलियां दस से ज्यादा क्यों होती हैं? (हिमांशु .....)

उत्तर: कभी-कभी प्रकृति से गलती भी हो जाती है हिमांशु! हमारे हाथ-पैरों में दस-दस अंगुलियां होती हैं लेकिन इस गलती के कारण कई बार एक या दो अंगुलियां और बन जाती हैं। एक मजेदार बात बताऊं? जब सागरों में जीवन का विकास हो गया तो कुछ जीव वहां से बाहर जमीन पर आने लगे। उनमें से कई प्राणी अपने बच्चों को दूध पिलाने लगे। वे स्तनपोशी प्राणी कहलाते हैं। तुम्हें यह जानकर आश्चर्य होगा कि तब उनमें से कई प्राणियों की सात या आठ अंगुलियां होती थी। लाखों-करोड़ों वर्षों के दौरान विकास होने पर हम मनुष्यों के हाथ-पैरों में दस-दस अंगुलियों का हिसाब बन गया। चार अंगुलियों के साथ एक अंगूठा बन गया। अंगुलियों और अंगूठे से हम चीजों को अच्छी तरह पकड़ और जकड़ सकते हैं।

प्रश्न: मेरा प्रश्न आलू से संबंधित है, जिसकी मजेदार कहानी आप सुनाते हैं। हम कक्षा में एक पाठ पढ़ रहे थे- यूरोप में राष्ट्रवाद। तब उसी पाठ में एक नाम आया था गैरी बालदी जिसने इटली के एकीकरण में बहुत बड़ा योगदान दिया था। अंत में वह अपना जीता हुआ साम्राज्य एक राजा को सौंपकर सिर्फ एक थैला आलू लेकर चला गया। उसने ऐसा क्यों किया होगा उतना बड़ा राज्य जीता हुआ सिर्फ एक थैला आलू के लिए?

(डौली भट्ट,जी आई सी, देवलथल, पिथौरागढ़)

उत्तर : डौली! यह बात सच है कि गुसिपे गारबाल्डी ने इटली के एकीकरण में प्रमुख भूमिका निभाई। यह उसका लक्ष्य था और वह इस लक्ष्य को पूरा करना चाहता था। कई बार लक्ष्य किसी भी पुरस्कार या सम्मान से बड़ा होता है। उसने भी अपने लक्ष्य को बड़ा माना और कोई भी पुरस्कार या सम्मान स्वीकार नहीं किया। इसलिए केवल एक बोरी आलू का बीज लेकर चला गया। वहां तब यह एक बिल्कुल नई फसल थी।

ज्यां पॉल सार्त्र को ही ले लो। साहित्य के नोबेल पुरस्कार के लिए उनके नाम की घोषणा की गई। तब जानती हो, उन्होंने नोबेल पुरस्कार को अस्वीकार करते हुए क्या कहा? उन्होंने कहा, मेरे लिए किसी भी पुरस्कार का कोई महत्व नहीं है, फिर चाहे वह नोबेल पुरस्कार हो या एक बोरा आलू !

जहां तक लक्ष्य की बात है तो राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का लक्ष्य था देश को आजाद करना। उनके पास क्या था? एक धोती, खड़ाऊं, चश्मा और लाठी। बस तो जीवन में लक्ष्य और संतोष बड़ा है। लेकिन, यह विशेषता दुर्लभ होती है और बिरले ही लोगों के पास होती है।

प्रश्न : नमक से बाल सफेद क्यों हो जाते हैं? (शिवशरण, हरिद्वार)

उत्तरः तुम्हारी बात सही है प्रिय शिवशरण! वैज्ञानिकों का कहना है कि ज्यादा नमक खाने से बाल जल्दी सफेद हो जाते हैं। इतना ही नहीं ज्यादा नमक खाने से ब्लड प्रैशर भी बढ़ जाता है और गुर्दों की बीमारी भी हो सकती है। लेकिन, नमक ही नहीं बल्कि पौष्टिक आहार की कमी, अधिक चीनी या मांस आदि से मिलने वाला अधिक प्रोटीन खाने से, कोल्ड ड्रिंक पीने और बालों में नकली रंग लगाने से भी सफेद हो जाते हैं।

- सी-22, शिव भोले अपार्टमेंट्स, प्लाट नं. 20,
सैक्टर-7 द्वारका फेज-1, नई दिल्ली- 110075
फोन: 9818346064

अंक पहेली

नीचे चित्र में जोड़ व घटाने के आधार पर अंक भरे भरे गए हैं। खाली स्थान में अंक भरिए।

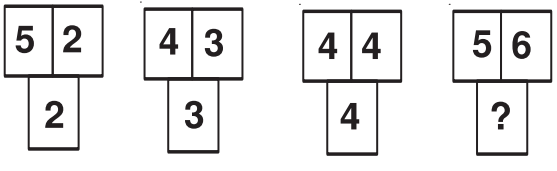

उत्तर: चित्र में बने ऊपर के दो वर्गो को जोड़ा गया है। उसमें से बाएं वर्ग की संख्या को घटाकर लिखा गया है। पहले चित्र को देखो इसमें पांच व दो को जोड़कर सात आया। उसमें से पांच घटा दिया। इसी प्रकार अंत के चित्र में पांच और छः को जोड़ा जाएगा। उसमें से बाएं की संख्या 5 को घटाएंगे तो 6 बचेगा। इस प्रकार खाली स्थान पर 6 भरा जाएगा।

सभी का महत्व

● इंद्रा तिवारी 'इंदु'

प्रहरी वन का राजा शेर प्रजा की भलाई में लगे रहता था। जंगल के सभी जानवर उसके राज्य में सुख से रहते थे। एक दिन दूसरे जंगल के जानवरों ने सुंदर वन पर आक्रमण कर दिया। सुंदरवन के सभी जानवरों ने एकता और बहादुरी दिखाते हुए उन जानवरों को हरा दिया। उसके बाद कुछ दिन शांतिपूर्ण ढंग से बीते।

एक दिन जासूस मिट्ठू तोता ने राजा से कहा, ''महाराज! मैंने कुछ जानवरों को लड़ाई की बात करते हुए सुना है।'' शेर ने खतरा भांपते हुए तुरंत सभी जानवरों की सभा बुलाई। सभी जानवरों को सुरक्षा के काम सौंप दिए। केवल गीचू गधा, कोको कौआ और चीनी खरगोश ही ऐसे थे जिन्हें कोई काम नहीं सौंपा गया। यह तीनों मुंह लटकाए कोने में खड़े थे। गब्बू हाथी ने गीचू गधे का मजाक बनाते हुए कहा, ''युद्ध में बुद्धिमान लोगों की जरूरत होती है। तुम तो महामूर्ख हो। तुम्हें ढेंचू-ढेंचू के अलावा कुछ नहीं आता।

मेकू भेड़िया ने चिल्लाते हुए कहा, ''चीनी खरगोश तो इतना डरपोक है। इसलिए उसे कुछ भी काम नही दिया गया है।'' मीठी कोयल भी पीछे क्यों रहती। उसने कोको कौए की कर्कश आवाज का मजाक बनाया। कई जानवरों ने भी मीठी की हां में हां मिलाई।

अचानक शेर जोर से दहाड़ा और बोला, ''मित्रो! आप लोगों ने गधे, खरगोश और कौए की बुराई तो बतादी। आप इनकी अच्छाईयां बताना भूल गए। चलो मैं बताता हूं। चीनी खरगोश बेशक छोटा है। मगर इसके बराबर फुर्तिला जानवर अन्य कोई नहीं है। कोको कौए की आवाज इतनी तेज है कि आकाश में दूर तक गूंजती रहती है। ये आवाज लोगों को खतरे का संकेत देती है। गीचू गधे की आवाज के सामने तो मेरी दहाड़ भी कम है। इसलिए मैं खरगोश को अपनी सेना में संदेश वाहक का काम, कौए को आकाश मार्ग के डाकिए का काम तथा गधे को उद्घोषणा करने का काम सौंपता हूं। हर किसी के अंदर एक खूबी जरूर होती है। इसलिए किसी को भी बेकार नहीं समझना चाहिए।'' सभी जानवर राजा शेर की बात सुनकर शर्मिंदा हुए। सभी ने कसम खाईकि अब से किसी की मजाक नहीं बनाएंगे।

- हरगोविंद सुयाल सरस्वती विद्या मंदिर इंटर कालेज
कुसुमखेड़ा, हल्द्वानी, नैनीताल (उत्तराखंड)

कहानी:

पालक की करामात

● सीताराम गुप्त

गांव के एक स्कूल में पढ़ती थी तान्या। तान्या के मम्मी-पापा और उसका छोटा भाई शहर में रहते थे। एक दिन उसकी मम्मी उसे शहर ले जाने के लिए आई। नानी उसे भेजना नहीं चाहती थी। पर उसकी पढ़ाई के बारे में सोच कर उसे भेजने को राजी हो गई। भेजने से पहले नानी ने तान्या से वचन लिया कि वह छुट्टियों में यहां आकर रहेगी।

"तो क्या अब में छुट्टियों में भी नहीं आऊंगी?" तान्या ने अपना अधिकार जताते हुए नानी से कहा। नानी ने बहुत ही भारी मन से तान्या को विदा किया। नानी को अगले साल गर्मी की छुट्टियों का इंतजार था। पहले ही दिन नानी ने तान्या और उसके छोटे भाई को बुलवा लिया।

तान्या नानी के घर आई तो उसे देखकर सब हैरान थे। उसकी सुंदर सी आंखों पर चश्मा चढ़ा हुआ था। नानी ने चश्मा देखा तो कहा, "अरे चश्मे में लगती तो बड़ी अच्छी है। पर क्या तुम्हें चश्मा पहनना अच्छा लगता है?"

"नहीं नानी! मुझे कोई शौक थोड़े ही है चश्मा लगाने का। पर बिना चश्मे के काम ही नहीं चलता।" तान्या ने कहा।

"अब चश्मे को एक तरफ रख दे। जैसा मैं कहती हूं वैसा कर।'' तान्या ने किंचित अविश्वास से चश्मा एक तरफ रखते हुए नानी से पूछा, "अच्छा नानी! मुझे अब क्या करना होगा?"

नानी ने कहा, "अरे करना कुछ भी नहीं। बस खेलो-कूदो, खाओ-पीओ और मौज-मस्ती करो। हां आज से रोज हरी पत्तेदार सब्जियां जरूर खानी हैं। खास तौर से पालक।"

उसके बाद रोज दोनों समय हरी पत्तेदार सब्जियां बनने लगी। कभी दाल-पालक तो कभी आलू-पालक, कभी पालक-पनीर तो कभी पालक कढ़ी। नानी रोटियों के आटे में भी पालक और एक चुटकी नमक मिला लेती। पालक के परांठे तो तान्या को बहुत अच्छे लगते। नानी पूरियां तलती तो भी उसके आटे में पालक जरूर होता।

रविवार का दिन था। गांव में अस्पताल वालों ने कैंप लगाया। सारे लोग अलग-अलग डॉक्टरों को अपनी बीमारी बता रहे थे। आंखों के डॉक्टर सभी की आंखों का देख रहे थे। आंखों के डॉक्टर ने तान्या की आंखों का भी परीक्षण किया। डॉक्टर ने कहा, ''देर तक मोबाइल देखने से आंखों पर जोर पड़ता है। जो लोग घर पर बहुत नजदीक से टेलीविजन देखते हैं। उनकी आंखें भी खराब हो जाती हैं। उन्होंने कहा सूर्यग्रहण के समय सूर्य को नंगी आंखों से नहीं देखना चाहिए। इससे भी आंख की रोशनी जा सकती है।''

तान्या ने पूछा,'' सर जी! मेरी नानी कहती है। पालक की सब्जी खाने से चश्मे से छुटकारा मिल जाएगा। क्या वास्तव में मेरा चश्मा हट जाएगा।'' डॉक्टर साहब ने कहा, ''तान्या जी! तुम्हारी नानी ठीक कहती है। हम मोबाइल का इस्तेमाल कम करें। टेलीविजन को दूर से देखें। पालक, पत्ता गोभी, गाजर, पपीता तथा संतरे आदि का नियमित सेवन करेंगे। तब हमारी आंखों की ज्योति बढ़ सकती है। हमें सलाद के तौर पर भी गाजर आदि इस्तेमाल करनी चाहिए। अगर आप अपने खान-पान में बदलाव करें तो आपका चश्मा कुछ ही दिन में हट सकता है। लेट कर किताब पढ़ने या कम रोशनी में पढ़ने पर भी आंखों पर दबाव पढ़ता है। इसलिए कम रोशनी में कभी भी किताब न पढ़ें।'' डॉक्टर साहब की बातें सुनकर तान्या के मन में एक नई उमंग जाग्रत हुई। अब उसने टेलीविजन दूर से देखने तथा मोबाइल का इस्तेमाल कम करने की ठान ली। बकायदा उसने अपने लिए नियम स्वयं ही बना लिया।

एक दिन तान्या को अपना चश्मा नहीं मिल रहा था। वह यूं ही बैठी-बैठी पुस्तक के पन्ने पलटने लगी। उसने देखा कि वह बिना चश्मे के भी साफ-साफ पढ़ पा रही है। उस दिन के बाद उसने फिर कभी चश्मा लगाया ही नहीं।

- ए डी-106 सी,पीतमपुरा,दिल्ली
मोबाइल-9555622323

जानकारी:

विश्व धरोहर दिवस : 18 अप्रैल

● प्रो. जीवनसिंह खर्कवाल

18 अप्रैल को पूरे संसार में धरोहर दिवस मनाया जाता है। धरोहर दो प्रकार की होती हैं। प्राकृतिक धरोहर तथा सांस्कृतिक धरोहर। प्राकृतिक धरोहर के रूप में धरती मां, पहाड़, जंगल, चट्टानें, धातुएं, खनिज, जड़ी-बूटी, नदियां, हिमालय, समुद्र व रेगिस्तान आदि शामिल किए जा सकते हैं।

सांस्कृतिक धरोहर उसे कहते हैं जो हमारे पूर्वजों ने बनाई। जैसे मंदिर, किले, महल, जलाशय, बांध, बावड़ियां, नौले, प्राचीन बस्तियों के अवशेष, मूर्तियां, ताम्रपत्र, अभिलेख, शिलालेख, सिक्के, भाषा, लोकगीत, लोकनृत्य आदि।

यूनेस्को की एक संस्था है-आइकोम। जिसे अंगरेजी में इंटरनेशनल काउंसिल आफ मोन्यूमेंटस कहा जाता है। इस संस्था का प्रधान कार्यालय पेरिस(फ्रांस) में है। यह संस्था विश्व के विभिन्न भागों में ऐसी प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक धरोहर जो आने वाली मानव पीढ़ियों के लिए उपयोगी हों, को संरक्षित करने का कार्य करती है। इस संस्था की पहली बैठक सन् 1982 में टयूनीशिया में हुई। इस संस्था द्वारा किसी सुंदर प्राकृतिक स्थल या किसी पुरातात्विक स्थल को विश्व धरोहर स्थल घोषित करने पर उस स्थल की सूचना विश्व भर में सभी सदस्य देशों के नागरिकों तक पहुंच जाती है। जिससे बड़ी संख्या में ऐसे स्थलों पर पर्यटक आने लग जाते हैं। उस स्थल का संरक्षण सरकार द्वारा तेजी से किया जाता है। कभी-कभी आइकोम भी संरक्षण के लिए आर्थिक सहायता प्रदान करता है।

विश्व में सबसे अधिक प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक स्थल चीन तथा फ्रांस में संरक्षित हैं। विश्व धरोहर में भारत के कई सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक स्थल शामिल हैं। जिनमें उत्तर प्रदेश में आगरा फोर्ट, फतेहपुर सीकरी, ताजमहल, महाराष्ट्र में अजंता, छत्रपति शिवाजी रेलवे स्टेशन, मुंबई, एलिफेंटा की गुफाएं, एल्लोरा गुफाएं, विक्टोरिया गोलिक आर्ट, बिहार में नालंदा, महाबोधि (बोध गया), मध्य प्रदेश में सांची, खजुराहो, भीमबीथिका, गुजरात-चंपानेर-पावागढ़, अहमदाबाद शहर, रानी की वाव, गोवा में चर्चो का समूह तमिलनाडू में चोलों के मंदिर, महाबलिपुरम, पहाड़ी रेलवे, कर्नाटक में हांपी, पद्दक्कल, राजस्थान में राजस्थान के पहाड़ी किले, जयपुर शहर, जंतर मंतर (जयपुर), दिल्ली में हुमायूं का मकबरा, कुतुबमीनार, लालकिला, चंडीगढ़ में ली कोरवसिया का स्थापित कार्न, पश्चिम बंगाल व हिमाचल प्रदेश में पहाड़ी रेल, उड़ीसा में कोर्णाक का सूर्य मंदिर प्रमुख हैं।

इसके अतिरिक्त केरल का पश्चिमी घाट, उत्तराखंड में नंदादेवी फूलों की घाटी, आसाम में काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान, मानस वाइल्ड लाइफ सेंचुरी, हिमाचल प्रदेश के महाहिमालय राष्ट्रीय उद्यान संरक्षित क्षेत्र, पंश्चिम बंगाल का सुंदरवन, राजस्थान का केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान, कर्नाटक का पश्चिमी घाट, तमिलनाडू का पश्चिमी घाट, गुजरात का पश्चिमी घाट, गोवा का पश्चिमी घाट तथा महाराष्ट्र का पश्चिमी घाट विश्व के प्राकृतिक धरोहरों में शामिल हैं। कुल मिलाकर भारत में 32 प्राचीन सांस्कृतिक स्थल तथा 6 प्राकृतिक स्थल विश्व धरोहर की सूची में शामिल हैं।

हमारे देश में प्राकृतिक स्थल तथा पुरातात्विक कई स्थल हैं। परंतु आइकोम अपनी शर्तो पर नए धरोहरों को शामिल करता है। भारत का संस्कृति मंत्रालय तथा पुरातत्व विभाग इसके लिए पहल करते हैं। विश्व धरोहर के लिए आइकोम संस्था प्रत्येक वर्ष एक निश्चिम थीम या क्षेत्र तय करती है । इस वर्ष का विषय complex pasts Diverse future रखा गया है। इस विषय पर व्याख्यान,रैली, जागरूकता अभियान चलाया जाता है।

- निदेशक, साहित्य संस्थान, जे आर एस राजस्थान विद्यापीठ,
- निदेशक, साहित्य संस्थान, जे आर एस राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर, राजस्थान, मोबाइल- 8003636352

कहानी:

मोहब्बत की दुनिया

● सुधा भार्गव

एक थी बिल्ली, एक था बिलौटा। बिल्ली का नाम चमेली, बिलौटे के नाम गेंदा। गेंदा अपनी बहन को बड़ा प्यार करता। एक दिन चमेली बड़ी सुस्त थी। उसे देख गेंदा परेशान हो उठा।

बोला-"म्याऊं--म्याऊं मेरी नाजुक सी बहना! तेरा मुंह सूखा-सूखा क्यों?"

"मऊ--मूं--बहुत भूखी हूं।"

"तू भूखी! विश्वास नहीं होता। तेरा वश चले तो दुनिया भर का दूध सपासप सपासप गटक जाए।"

"सच बोल रही हूं। पड़ोस में जो मसखरा चूहा घूमता रहता है। उसकी तरफ सुबह मैं धीरे-धीरे बढ़ रही थी कि वह बेहोश हो गया। इतने में चुहिया आईऔर उसे देख रोने लगी। मैंने तो भैया उसे छुआ भी नहीं था। न जाने कैसे बेहोश हो गया। तभी फटाफट पेंदने से गुलाबी-गुलाबी दो बच्चे उछलते आए और उसे उठाकर ले गए। उनका बिल पास ही था। मसखरा तो ऐसा चालक निकला कि बिल में घुसते ही उठ बैठा। मुंह चिढ़ाते हुए मुझे टिल्ली--टिल्ली करने लगा।"

"हा--हा--हा तो उस मसखरे ने हमारी बहना को ठग लिया।" गेंदा जोर से हंस पड़ा।

"भैया तुम्हें हंसी सूझ रही है---मेरी जान निकले जा रही है। मैं तो कल भी भूखी रह गईथी।"

"क्या कहा--दो दिन से भूखी है।"

"सच्ची मुच्ची! कल एक रसोई में घुसी। खौलते दूध की खुश्बू आ रही थी। मैंने देखा मेज पर एक मेजपोश बिछा है और उस पर बड़े से कटोरे में दूध ठंडा होने को रखा हैं। मेरी खुशी का ठिकाना न था। सोच रही थी कल कुछ नहीं खाया तो क्या हुआ। आज तो छक कर दूध पीऊंगी। तभी एक बच्चा घुटने के बल चलकर बड़ी फुर्ती से मेजपोश पकड़ कर खड़े होने की चेष्टा करने लगा। मेरे तो होश उड़ गए। मैंने जोर से छलांग लगाई और झटके से कटोरे को दूर फ़ेंक दिया। बच्चा तो जलने से बच गया पर भूखा था। गिरे दूध को देखकर रोने लगा। उसकी मां ने आकर बच्चे को कलेजे से लगा लिया। मुझे देखकर उसका पारा चढ़ गया। जोर से चिल्लाई, "इस बिल्ली ने जीना हराम कर दिया है। डंडा मारकर इसे भगाओ तो।"

"गेंदा! बता मेरी क्या गलती थी जो उसने मुझे गाली दी। अगली बार उस मैया को छोड़ूंगी नहीं। उसके पैर पर अपने पंजे जरूर चुभो कर रहूंगी।"

"उस मैया का क्या दोष, न हम उसकी भाषा जाने न वह हमारी। सच्च बताता कौन? चल कुछ खा ले। कल से तेरा पेट खाली है। कैसी मुरझा गई है।"

"कल से नहीं रे परसों से भूखी हूं।"

"ऐं --अब तू मुझसे ही मसखरी करने लगी।"

"मैं एकदम सुच्ची-सुच्ची बोल रही हूं। वो नुक्कड़ पर मोटू हलवाई की दुकान है न। परसों दूध से भरी बड़ी सी लोहे की कड़ाई रखी थी। उसके चारों तरफ मोटी मलाई की परतें एक के ऊपर एक जमी थी। क्या चमकदार मलाई--मोटी सी चमचम। उसकी खुशबू अलग नथुनों में घुसी जा रही थी। मोटू तो मुझे कहीं दिखलाई न दिया। इधर-उधर नजर घुमाती सबकी आंखों से बचती दुकान में तो घुस गई। जैसे ही मैंने मलाई पर पंजे जमाकर उसे खाना चाहा ठक-ठक की आवाज से चौंक पड़ी। देखा-दुबली-पतली

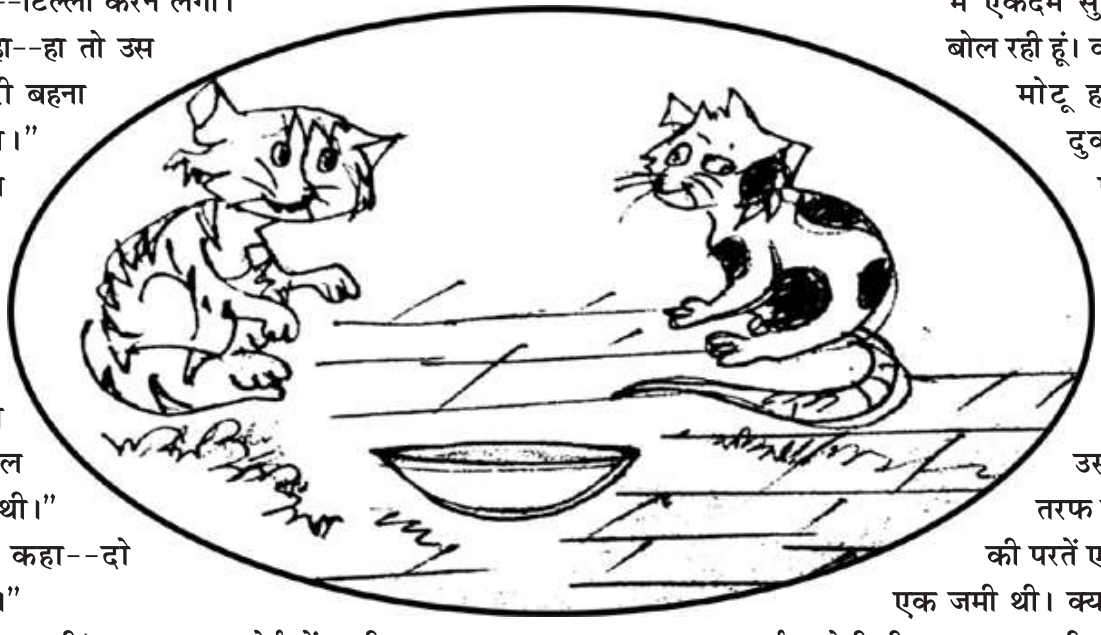

मच्छर

● दामोदर जोशी 'देवांशु'

कानों में शोर मचाता ये,
मामा मामा कहता मच्छर।
सुई सी चुभा देता है,
खून चूस जाता है मच्छर।
दिन में चैन को लाले पड़े,
रात की नींद उड़ाता मच्छर।
पंख फैलाकर आता है ये,
बेसुर राग सुनाता मच्छर।
मलेरिया डेंगू साथ लिए,
काल रूप आता है मच्छर।
सफाई जहां भी रहती है,
वहां नहीं आता है मच्छर।

-संपादक 'कुमगढ',
पश्चिमी खेड़ा, काठगोदाम,नैनीताल
मोबाइल- 9719247882

खादी और बापू जी

● डॉ. वेद मित्र शुक्ल

सूत कातता चरखा बच्चो!
बापू जी को गीत सुनाता।
घर्र-घर्र की आवाजें कर,
अपनी धुन में ही वह गाता।
बापू जी ने इसको इक दिन,
'चरखे का संगीत' कहा था।
उपयोगी सामानों से यों,
बापू जी का प्यार रहा था।
दूजे विश्व युद्ध में बापू-
ने जब चरखा चलवाया था।
खादी के असली बल का,
गोरों को भान कराया था।
लड़े न तोप-तलवारों से,
खादी का अस्त्र चलाया था।
गोरों के कपड़ों के मिल पर
दुःख का बादल छाया था।

- दिल्ली
मोबाइल-9599798727

हमारा विश्वास

● डॉ. नरेंद्र नाथ लाहा

हम भारत माता के बच्चे,
हम आगे बढ़ते जाएंगे।
विश्व शांति का नारा लेकर,
जग में शांति लाएंगे।
हम भारत माता के बच्चे,
बल है हमारी बांहों में।
यदि कोई हमें ललकार दे,
शौर्य गाथा दोहराएंगे।
हम भारत माता के बच्चे,
देश की शान बढ़ाएंगे।
महान देशभक्तों की,
गाथा सबको सुनाएंगे।
हम भारत माता के बच्चे,
यही हमारा पूर्ण विश्वास।
आगे जाता देश हमारा,
पुनः शिखर पर बिठाएंगें।

- 27 ललितपुर कॉलोनी, डॉ. पी.एन लाहा मार्ग,
ग्वालियर (म.प्र.) फोन- 07512322777

कमजोर सी बुढ़िया लाठी के सहारे दुकान में पीछे की ओर से घुस रही है। मलाई देख उसकी आंखों में चमक आ गई लगा जैसे उसने कभी मलाई खाई ही नहीं। मुझे उस पर बड़ा तरस आया। अपनी भूख तो भूल ही गई और मैं परात के पीछे छुप कर उसे देखने लगी। वह तो लपलपालप खाने लगी। उसे खाता देख मुझे बड़ा अच्छा लगा। इतने में मोटू हलवाई आ गया और अपनी बूढ़ी मां को घसीटते ले जाने लगा। मुझे बड़ा गुस्सा आया। मैं परात के पीछे से निकली और मार की परवाह न करते हुए मलाई खाने लगी। मुझे देख मोटू हलवाई बौखला गया और मां को छोड़ मेरे पीछे भागा। मैं तो एक छलांग में ही बाहर हो गई पर गुस्से में अंधा वह मेरे पीछे भागता ही गया--भागता ही चला गया। भला मैं क्या उसके हाथ आने वाली थी। हांफता हुआ लौट गया होगा --बेचारा। ह --ह ।"

"तुझे कब से दूसरों पर दया आने लगी है?"

"जब से यह कोरोना चुड़ैल आन बसी है। ठकुरा धोबी को यही चुड़ैल तो निगल गई। उसके दोनों बच्चों से उनका पिता छीन लिया। बेचारे भूखे प्यासे घूम रहे हैं। कल तो हिना मौसी ने उन्हें अपने हिस्से की रोटी खिलाई। अच्छा गेंदा एक बात बता-जब मौसी बच्चों को रोटी दे सकती है तो मोटू हलवाई अपनी मां को दूध मलाई क्यों नहीं खाने देता।"

"क्योंकि वह भी भूखा है।"

"ओह अब समझ में आया। उसका पेट इतना बड़ा क्यों हैं। भूख लगने पर पूरी कढ़ाई की मलाई चाट जाता होगा।"

"अरे! ये बात नहीं है। कोई रोटी का भूखा है तो कोई पैसे का भूखा। यह हलवाई पैसे का भूखा है। अपनी मां को मलाई खाने को देगा तो उसका पैसा कम हो जाएगा। उसे बेचकर वह ज्यादा पैसा कमाएगा।"

"मोटू एकदम अच्छा नहीं है। लगता है वह ऊपर से गिरा और जमीन पर आते ही बड़ा हो गया। भूल गया मां ने कितनी मेहनत से उसकी देखरेख की। मां को वह थोड़े सी मलाई भी नहीं खिला सकता! मुझे तो यह सोच सोचकर रोना आ रहा है।"

"बात ही कुछ ऐसी है। मुझे सुनकर भी बड़ा कष्ट हो रहा है। चल बहना चल। हम अपनी ही दुनिया में भले। जहां प्यार और मोहब्बत का अब भी झरना बहता है।" दोनों कलाबाजी दिखाते जंगल पहुंच गए। बिल्ली मां, गेंदा और चमेली के आने का बेसब्री से इंतजार कर रही थी। उसको देखते ही वे उसकी गोद में छिप गए और मां प्यार से उन्हें चूमने-चाटने लगी।

-जे ब्लाक-703 स्प्रिंगफील्ड अपार्टमेंट,सरजापुरा रोड,
बैंगलौर-560102

कहानी :

समुद्र में गहरी बातें

● सीमा जैन 'भारत'

समुद्र के गहरे पानी के भीतर भी एक सुंदर सी दुनिया है। जिसमें मछलियां, तरह-तरह की वनस्पतियां पाईजाती हैं। वहां का हर जीव अपने आप में अनूठा है। किसी की कोई विशेषता है तो किसी की कोईदूसरी। आज वैसे ही समुद्री घोड़ा अपनी मां से नाराज़ हो रहा था। वह गुस्से से बोला, ''मुझे अच्छा नहीं लगता कि हम पानी में खड़े हो कर तैरते हैं। बांकी मछलियां कैसे आराम से लेटे-लेटे पानी के मजे लेती हैं।''

''अरे! पर इसमें हमारी क्या गलती है? हमें प्रकृति ने जैसा बनाया हम वैसे ही हैं।" मां ने नन्हे से कहा।

''हमको भी सबके जैसा बनाना था ना? हमें क्या खड़े होकर तैरने की सजा मिली है? वह भी इतने धीरे, एक घंटे में पांच फीट! दूसरी मछलियां तो मुझे छोड़कर आगे निकल जाती हैं।''

''अरे नहीं मेरे बच्चे, ये हैं ना!''

''हां, साथी तो साथ में ही रहते हैं। वो भी मेरे जैसे ही धीरे-धीरे। पर मां! मुझे बताओ बांकी मछलियों में ऐसा क्या अलग होता है?''

''अब देखो ना! गोल्ड फिश सबसे ज्यादा भुल्लकड़ होती है। सिर्फ 3 सेकेंड के लिए ही उसे कुछ याद रहता है।"

''अरे ये तो बड़ी मुश्किल है। वह तो कुछ भी याद नहीं रख पाती! ऐसे तो वह रास्ता भटक जाती होगी।"

''यही ना, सबकी अलग-अलग कमजोरी होती है।" एक मछली उनके सामने से तैरती हुएनिकल गई। उसे देख कर नन्हा बोला ''इसकी क्या विशेषता होती है?''

''यह मडस्किपर मछली है। यह पानी के बाहर भी जीवित रह सकती है। और अपने पंखों के साथ चल भी सकती है।"

''अरे यह तो जादू ही हो गया।'' नन्हा खुश होते हुए बोला। सामने की ओर इशारा करते हुए उसकी मां ने कहा, ''देखो! वह सेलफिश है। तेज दौड़ती है। और वह देखो शार्क मछली मस्ती में तैर रही है। जिसकी आंखों पर पलकें होती हैं।"

''अच्छा! मां, यह पत्ते जैसा क्या तैर रहा है?''

''यह बैट फिश है। खतरे का आभास होते ही स्थिर हो जाती है। पानी के अंदर पत्ते की तरह दिखने लगती है। और यह रोहू है। इसका शरीर नाव जैसा होता है जिसके कारण वह आसानी से तैर सकती है।"

''मां, तुम सच ही कहती थी। यहां सब अलग अलग हैं।" उसकी बात सुनकर मां मुस्कुरा कर बोली, ''देखो ना, अपने बच्चों को यहीं समुद्र में जन्म देते हैं। पर सालमन मछली समुद्र से नदी तक का लंबा सफर तय करती है। अंडे देती है फिर वापस समुद्र में आ जाती है। और यह भी नहीं वोफिन मछली अंडे देने के बाद उन्हें खाने का प्रयास करती है। नर अंडों को बचाने के लिए संघर्ष करता है और यदि जीत जाता है तो वह उनकी देखभाल करता है।"

''मां भी बच्चों को खाती है?"सुनकर नन्हा घबरा गया। ''अरे, घबराओ मत! जिसको प्रकृति ने जो सिखाया और दिया है वह सब वैसे ही जीते हैं। इसमें न तो दुखी होने की बात है और न ही डरने की। अब हम चाहे खड़े पानी में तैरते हैं तो क्या हुआ। हमारा तो नाम ही जमीन पर सबसे बहादुर जानवर घोड़े के नाम पर पड़ा है। घोड़ा जो युद्ध में भाग लेता है। बहादुर और ताकतवर होता है।" मां ने अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए कहा, ''हमारी विशेषता है कि हम अपनी दोनों आंखों को अलग-अलग दिशा में घुमा सकते हैं।

कहानी :

चिंटी की कहानी

● निर्मला अनिल सिंह

चिंटी एक छोटी सी चींटी थी। एक दिन कक्षा में अध्यापिका ने सभी चींटियों से कहा कि वे कोई कहानी सुनाएं। चिंटी में आत्मविश्वास था। उसने कहा कि एक दिन जब वह बाजार जा रही थी तो उसकी मुलाकात पिंकू से हुई। पिंकू उसकी सहेली थी और बहुत ज्ञानी और समझदार थी।

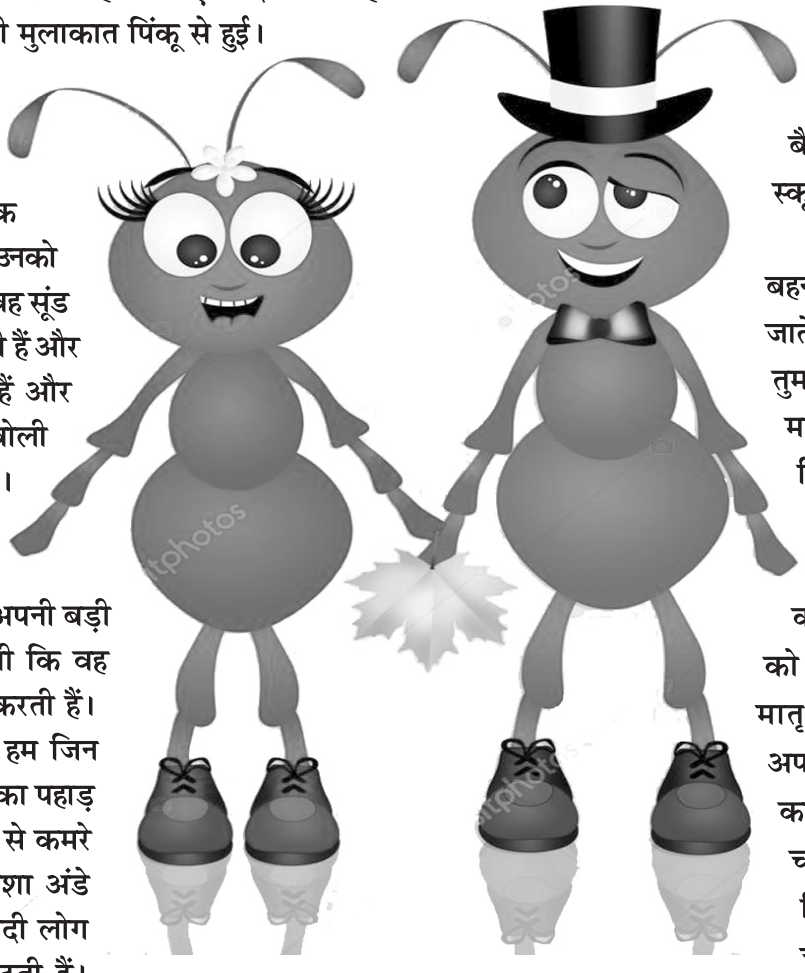

पिंकू ने बताया कि चींटियां बहुत मेहनती होती हैं। उनको बहुत से लोग पालते भी हैं। वह सूंड से अपने एंटीना से बातें करती हैं और एक दूसरे को संदेश देती हैं और आगे बढ़ती जाती हैं। चिंटी बोली अरे! तुम क्या कह रही हो। मेरी तो बहुत सी बहनें हैं। कुछ काली हैं कुछ लाल हैं। जब मैं और छोटी थी तो मैं अपनी बड़ी बहनों को गौर से देखती थी कि वह अपना जीवन कैसे व्यतीत करती हैं।

चिंटी ने बताया कि हम जिन घरों में रहती हैं उसे चींटियों का पहाड़ कहते हैं। हमारे घरों में बहुत से कमरे होते हैं। हमारी रानी मां हमेशा अंडे देती रहती हैं। और सभी दीदी लोग हमें तरह-तरह के काम बांटती हैं। सभी चींटियां चिंटी की बातों को ध्यान से सुन रही थी। चिंटी ने कहा, ''मेरी रानी मां पंद्रह वर्ष की हैं। वे सभी की देखभाल करती हैं। रानी मां कुछ को खाना खोजने को कहती हैं, तो कुछ घर की पहरेदारी करती हैं। हमारे घर पर दुश्मन आसानी से आक्रमण नहीं कर सकता है। अब चिंटी उदास हो गई। उसकी आंखों में आंसू आ गए। वह बोली अब वह बड़ी हो रही है और रानी मां उसे कठिन से कठिन काम देंगी। उसे छोटे बच्चों की देखभाल करनी होगी, उन्हें नहलाना, धुलाना पड़ेगा। उन्हें धूप में बैठाना होगा और अब वह स्कूल में नहीं आ पाएगी।

उसने कक्षा की सभी बहनों से विदा ली और जाते जाते उन्हें एक संदेश दिया, " तुम सभी रानी मां का कहना मानना, मेहनत करना। अपनी जिम्मेदारी को निष्ठा से करना, अनुशासन का पालन करना, स्वच्छता का ध्यान रखना और छोटों को प्यार करना तथा अपनी मातृभूमि से प्यार करना।" अपने मिट्टी के घर से प्यार करना। अध्यापिका ने सभी चींटियों से कहा, "तुम लोग चिंटी की तरह वफादार चींटी बनना और जो भी संदेश दो वह जीवंत संदेश हो।" तभी घंटी बज गई। सभी चींटियां अपना बस्ता उठा कर अपने घर की ओर चल पड़ीं। आज दो बातें पता चली कि रानी मां की उम्र पंद्रह वर्ष होती है और रानी मां ही घर की नेता होती है।

- रीना चिन्ड्रन एकैडमी रानीखेत,अल्मोड़ा

और वातावरण के हिसाब से हम अपना रंग बदल सकते हैं जो हमें सुरक्षा भी देता है।"

''ऐसा सबके साथ नहीं होता है न मां! यह तो सच में हमारी विशेषता है।"

''देखो! तुम्हारे कितने दोस्त आ गए हैं। जाओ उनके साथ खेलो।''

''हां मां! मैं खेलने जा रहा हूं और बहुत खुश भी हूं।'' उसने अपनी आंखें मटकाते हुए कहा और वह गहरे सागर में अपने दोस्तों के साथ खेलने लगा।

- 201 संगम अपार्टमेंट, माधव नगर,
विजया नगर के पास,ग्वालियर, म.प्र. 474002
मोबा. : 8817711033

कहानी:

बूढ़ापे की लाठी

● डॉ. महावीर रवांल्टा

एक थी अशरफी। गरीब परिवार में जन्मी, पली और रूप गुण में सुंदर। बड़ी होने पर उसका विवाह धर्मपाल से हुआ। धर्मपाल भी साधारण किसान परिवार में जन्मा था और बचपन में ही अनाथ हो गया था। वह बहुत परिश्रमी था। विवाह के बाद उसका जीवन हंसी खुशी बीतने लगा।

एक दिन वह जंगल में लकड़ी लेने गया था। लकड़ी काटने वह चीड़ के पेड़ पर चढ़ा ही था कि एकाएक उसका संतुलन बिगड़ा और जमीन पर गिर पड़ा। एक आह उसके मुंह से निकली और फिर वह वहीं बेहोश हो गया। जंगल में उसके साथ लकड़ी लेने गए लोग उसे उठाकर घर ले आए। उस दिन से धर्मपाल ने ऐसा बिस्तर पकड़ा कि फिर उठ न सका। कुछ ही दिनों में उसकी मृत्यु हो गई।

पति की मौत से अशरफी पर जैसे मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा। वह दूसरों के साथ खेतों में काम करने जाती। बदले में उनसे अपनी खेती के काम करवा लेती। कभी कभार गांव की कोई बेटी बहू उसके साथ रात बिताने आ जाती तो कभी वही किसी घर की शरण ले लेती।

एक दिन शाम को जब वह खेतों से लौटी। घर के पास दस बारह वर्ष का बालक था। बालक हाफ पैंट व कमीज पहने हुए था। वह रो रहा था। उसने छूकर देखा बच्चे का शरीर तप रहा था। वह ठंड में कांप रहा था। उसके दांत किटकिटा रहे थे। उसका बुखार देखकर उसका ममत्व जागा।

''कौन है तू?'' अशरफी ने बच्चे से पूछा। तब बजाय जबाब देने के वह रो पड़ा था। ''चल उठ'' उसने जैसे-तैसे बच्चे को उठाया और उसे बरांडे में ले गई। वहां उसे बिस्तर पर लिटाया और उसके सिर पर पानी से भीगी पट्टियां रखती गई। सारी रात बच्चा बुखार में तपता और बड़बड़ाता रहा। अशरफी उसकी पट्टियां बदलती रही। सुबह तक बच्चे का बुखार उतर चुका था। अशरफी ने उसे एक गिलास दूध पिलाया। उसके सिर पर स्नेह से हाथ फेरती हुई उससे उसके बारे में पूछने लगी। तब बच्चे ने बताया, ''मेरा नाम पानू है। मेरे मां-बाप ईश्वर को प्यारे हो चुके हैं। इसलिए इस दुनिया में उसका अब कोई नहीं है। उसका एक रिश्तेदार उसे पढ़ाने के बहाने कस्बे में ले गया।वहां किसी होटल वाले के हवाले उसे कर दिया। होटल वाला उससे होटल के जूठे बर्तन धुलवाता था। गलती होने पर उसके साथ मार पीट करता था। परसों वह मौका पाकर वहां से सीधे इधर भाग आया।'' नन्हे पानू की दर्दभरी कहानी सुनकर अशरफी ने कहा, ''चिंता न कर, आज से तू मेरा बेटा हुआ। यहीं मेरे पास रहेगा।'' कहते हुए उसने पानू को अपने सीने से लगा लिया।

पानू अशरफी के साथ ही रहने लगा। अशरफी को बेटे के रूप में पानू मिल गया था। पानू को बेहद प्यार करने वाली मां। अब पानू मां के साथ खेतों में भी काम करने जाता और स्कूल पढ़ने भी चला जाता। सुबह शाम व छुट्टी के दिन वह घर के काम करता और दिन में स्कूल पढ़ने चला जाता। घर के काम काज में उसकी जितनी रुचि थी। पढ़ने लिखने में भी उतना ही मेहनत करता था और हर कक्षा में अब्बल रहता।

इंटरमीडिएट की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद आगे की पढ़ाई के लिए शहर जाना जरूरी था। इसके लिए धन की भी आवश्यकता थी। इसलिए पानू ने फैसला किया था कि वह आगे पढ़ने के बजाए शहर जाकर किसी नौकरी के लिए प्रयास करेगा। उसने मां को बताया तो पहले वह राजी नहीं हुई लेकिन बाद में उसकी बात मान गई।

पानू को शहर के लिए विदा करते हुए मां का रो-रोकर बुरा हाल था। एक बार फिर वह अकेली होने जा रही थी। पानू ने उसे समझाया। अपनी कसम दी तब कहीं मां का रोना थमा।

शहर में पानू को किसी फैक्ट्री में नौकरी मिल गई। तब उसकी खुशी का ठिकाना न रहा। वह मन लगाकर फैक्ट्री में काम करता और हर महीने मिलने वाली अपनी तनख्वाह से मां के खर्चे के लिए रुपए भेज देता। शहर से भेजी पानू की चिट्टियां पाकर मां का मन प्रफुल्लित हो उठता।

शहर में ही पानू का सरस्वती के साथ विवाह हो गया। सरस्वती के पिता उसी फैक्ट्री में काम करते थे। जहां पानू की नौकरी लगी थी। परिश्रम और ईमानदारी से काम करने वाला पानू उन्हें अच्छा लगा था। बात ही बात में उन्होंने उसके बारे में जानकारी ली। एक दिन उसे अपने घर लाए और फिर अपनी बेटी के साथ विवाह का प्रस्ताव सामने रख दिया। रूप गुण में सुंदर सरस्वती को देखकर पानू इंकार नहीं कर सका। उसका विवाह हुआ और सरस्वती की दादी की अंतिम इच्छा भी पूरी हो गई थी। वर बधू को आशीर्वाद देने के बाद उन्होंने सदा के लिए आंखें मूंद ली थी। अपने विवाह के बारे में पानू मां को नहीं बता सका। इसका उसे दुख हो रहा था। उन्हें पता चलेगा तो वह कितनी दुखी होंगी। सोचता हुआ वह बेहद उदास हो जाता। सरस्वती ने उसकी उदासी का कारण पूछा। तब पानू ने उसे सारी बात बता दी थी। उसकी बात सुनकर सरस्वती उसे समझाती हुई बोली, ''बस इतनी सी बात पर आप चिंता करने लगे। मां के साथ रहकर भी आप मां को कहां समझ पाए।

बरसात में रखें अपने स्वास्थ्य का ध्यान

कोरोना काल में हम सब डरे हुए हैं। इधर बरसात में तो और भी सावधानी बरतने की जरूरत है। बरसात से जहां गरमी से राहत, वायु प्रदूषण में कमी होती है। वहीं बरसात में डायरिया,पीलिया,मलेरिया, चिकनगुनिया, सर्दी, जुकाम, फ्लू,जैसी कई बीमारियां होने की आशंका रहती है। बरसात में जल जनित रोग अधिक होते हैं। इसका मुख्य कारण बारिश का पानी है। हमारे घर के अंदर नल में भी गंदा पानी आता है। आपने कभी ध्यान दिया होगा। छत पर रखी टंकी में भी काफी मिट्टी व रेता आ जाता हैं

बारिश में भीगना विशेषकर बच्चों को अच्छा लगता है। बारिश में भीगने या गीले वस्त्र अधिक देर तक पहनने से पित्त जैसी समस्या हो सकती है। जिसे 'शीत पित्त ' भी कहा जाता है। बरसात में गंदे पानी व कीचड़ से कई लोगों को एलर्जी व खुजली जैसी बीमारी होने का खतरा बना रहता है। इसलिए जरूरी है कि हमेशा फिल्टर किया हुआ पानी ही पीएं। संभव हो तो बरसात में उबला पानी पीएं। जहां तक संभव हो कोल्ड ड्रिंक, मिर्च मसाले तथा फास्ट फूड खाने से बचें। घर के आस-पास साफ सफाई रखें। पानी की निकासी की व्यवस्था अवश्य करें। मच्छरों से बचाव जरूरी है। इसके लिए मच्छरदानी के साथ ही मच्छर भगाने के लिए धुएं वाली अगरबत्ती आदि का इस्तेमाल जरूर करें। सेनेटाइजर का इस्तेमाल जरूर करें। कुछ भी खाने से पहले हाथों को साबुन से देर तक धोएं। बगैर हाथ धोए मुंह, नाक व आंख को न छुएं। पारंपरिक व्यंजनों का इस्तेमाल करते हुए मौसमी फल व तरल पदार्थों का सेवन करके अपने शरीर में रोग प्रतिरोधात्मक क्षमता विकसित करें।

● डॉ. महेंद्रप्रताप पांडेय 'नंद', खटीमा, ऊधमसिंहनगर

उसका दिल तो सागर जैसा विशाल होता है। वह हमें माफ ही नहीं करेंगी, बल्कि गले से भी लगा लेंगी। इस बार आप उन्हें खर्चा बिल्कुल नहीं भेजना। क्योंकि इस बार हम उनसे मिलने गांव जाएंगे। पत्नी की बात सुनकर थोड़ी देर के लिए उसकी आंखें फटी सी रह गई।

एक दिन वे दोनों मां से मिलने गांव की ओर चल पड़े। वहां पहुंचकर उन्होंने देखा मां कमरे में बैठी तकली पर ऊन कात रही है। वह कोई गीत भी गुनगुना रहीं है। वहीं गीत जिसे वह उसे बचपन में सुनाया करती थी। ''मां!'' उसने पुकारा।

''कौन'' वह इधर-उधर देखती हुई बोली। ''मैं'' कहते हुए वह मां के पैरों पर गिर पड़ा। ''अरे अपना पानू!'' कहते हुए खुशी से मां ने उसे सीने से लगा लिया। उसकी आंखों से आंसूओं की धारा अविरल बहने लगी थी। तभी सरस्वती ने भी आगे बढ़कर सास के पैर छू लिए थे। उसे देख पलभर को मां सकपका गई थी।

''ये तुम्हारी बहू है सरस्वती।'' पानू ने सकुचाते हुए मां को बताया। हैं ई और फिर मां ने उसे भी अपने सीने से लगा लिया। उसने बच्चों की तरह उसे चूमा, सहलाया। बहू को देखकर उसकी खुशी का ठिकाना न रहा। उसने पलकें बिछाकर अपने बेटे व बहू का स्वागत किया। रात को खाना खाने के बाद देर तक वे आपस में बातें करते रहे। एक दूसरे के दुख-सुख के बारे में पूछते रहे। मां ने पानू के बचपन के अनेक किस्से भी बहू को सुनाए।

अगले दिन दोनों ने अपनी इच्छा मां के सामने रखी। उन्होंने मां से कहा कि वह भी उनके साथ शहर चलकर रहे। नौकरी के कारण पानू को शहर में रहना ही है। ऐसे में वह नहीं चाहता कि मां यहां गांव में अकेली बैठी रहे। उनकी बात सुनकर अशरफी ने कहा, ''अकेलेपन की बात तो ठीक है। पर मैं अपनी थाती नहीं छोड़ सकती। मैं चाहती हूं कि मेरे प्राण भी इसी स्थान पर निकलें। जहां से पानू के पिता विदा हुए।''

मां की बात सुनकर अब बात आगे बढ़ाने की कोई गुंजाइश नहीं थी। ''ठीक है मां! सदा के लिए नहीं तो कम से कम कुछ दिन के लिए तो हमारे साथ चल सकती हो?'' पति-पत्नी दोनों ने निवेदन किया। तब मां शहर चलने को राजी हो गई।

तीसरे दिन दोनों पति-पत्नी मां अशरफी को लेकर शहर के लिए चल पड़े। शहर को जाते समय अशरफी को रह रहकर वह दिन याद आने लगा था। जब पानू उसे मिला था। उस दिन उसने पानू को उठाकर अपने सीने से लगाया था। आज वही पानू उसके बुढ़ापे की लाठी बनकर उसे अपने साथ ले जा रहा था। सोचते हुए मां की आंखें नम हो गई। चाह कर भी वह अपने आंसू नहीं रोक सकी।

- महरगांव, मोल्टाड़ी, पुरोला, उत्तरकाशी
मोबाइल- 8894215441

कहानी :

मटके का पानी

● टीकेश्वर सिन्हा 'गब्दीवाला'

रूपाली और दिनेश को अपने घर की ओर आते देख कर भारती समझ गई कि वे दोनों प्रदीप के घर जाने के लिए उसे बुलाने आ रहे हैं। उसे पता था कि आज प्रदीप का बर्थडे है। रूपाली व दिनेश कईबार भारती को प्रदीप के घर ले जाने की कोशिश कर चुके थे। हर बार वे नाकाम रहे, पर आज सफल होने की चाह में वे कमर कसे हुए आ रहे थे। सभी बच्चे प्रियदर्शिनी पब्लिक स्कूल के विद्यार्थी थे। कक्षा नवमी में पढते थे। अच्छे विद्यार्थियों के रूप में इनकी गिनती होती थी । इनमें अच्छी दोस्ती भी थी। एक-दूसरे को मदद करने के लिए हमेशा तैयार रहते थे।

अपने घर के नजदीक दोनों को आते देख भारती घर के अंदर चली गई। रूपाली व दिनेश भी समझ गए कि भारती अपने संकोची स्वभाव के चलते फिर मना करेगी। दरवाजे पर पहुंचते ही दोनों बच्चों ने आवाज लगाई, ''भारती...!''

''हां जी...कौन ? अरे ! तुम लोग आओ...आओ... अंदर आओ।'' रूपाली और दिनेश को दरवाजे से ही भारती की मम्मी की आवाज सुनाई दी ।

''नमस्ते आंटी!'' घर के अंदर आते ही रूपाली और दिनेश ने हाथ जोड़ते हुए कहा। उन्हें भारती की मम्मी ने बिठाया। कुछ समय तक इधर-उधर की बातें हुई। चाय-पानी का दौर चला। फिर मुद्दे पर आए । ''देख भारती ! न मत कहना... इस बार तू जरूर जाएगी हम लोगों के साथ । हम तुम्हें लेने ही आए हैं।'' दिनेश ने भारती की मम्मी की ओर देखते हुए कहा, ' हां न आंटी ! हर बार ऐसे ही करती है भारती। भेजो न जरूर इसे इस बार।''

'' हां... हां....भेजो ना आंटी भारती को हमारे साथ। भारती तू चल... जल्दी तैयार हो। अभी चलना है।'' रूपाली सोफे पर सरकती हुई भारती के पास गई । आखिर ना-नुकुर करती भारती को रूपाली और दिनेश ने मना ही लिया। रूपाली, दिनेश और भारती प्रदीप के घर पहुंचे । प्रदीप अपने बर्थडे की पूरी तैयारी कर चुका था । सभी एक-दूसरे को देखकर बहुत खुश हुए । यहां अन्य सहपाठियों से भी मुलाकात हो गई। सबको और अच्छा लगा। प्रदीप बहुत खुश लग रहा था। उसके मम्मी-पापा ने टी टेबल पर केक को रखा। दीये जलाए, प्रदीप की आरती उतारी,टीका लगाया। फिर जैसे ही प्रदीप ने केक की जलती हुई मोमबत्तियां बुझाईसभी बच्चों ने'' हैप्पी बर्थ डे टू यू प्रदीप...हैप्पी बर्थडे टू यू पप्पू... प्रदीप...।'' कहकर तालियां बजाई। प्रदीप के चेहरे पर प्रसनन्ता थी। सबके गिफ्ट लेते हुए प्रदीप का ''थैंक्स...! थैंक यू...'' चलता रहा । फिर प्रदीप की मम्मी ने सब को केक दिया। सभी केक का आनंद लेने लगे। सबको चाक्लेट्स मिले। चाय की चुस्कियां चली। फ्रुट्स भी मिले सब को। कमरे भर मुस्कान, हंसी व ठहाके पसर गए। अंत में अंत्याक्षरी की बारी आई।सभी बड़े आनंदित थे। तभी अचानक भारती को खांसी आई। प्रदीप की छोटी बहन वंदना पानी लेकर आई। पानी पीते ही भारती बोली, ''अरे वाह ! बड़ा स्वाद है पानी का। मस्त ठंडा है इतनी गर्मी में । कहां का पानी है छुटकी ? ''

''नल का है दीदी...!'' वंदना तपाक से बोली। वंदना की बात सुन कर सभी हंस पड़े। ''नहीं... वंदू...!

दीदी के पूछने का मतलब किसमें रखा हुआ पानी से है ? " प्रदीप की मम्मी बोली, ''भारती बिटिया! वंदू गिलास में जो पानी लाई है जिसे तूने पीया, वह मटके का पानी है।"

''मटके का पानी...! " भारती का अचंभित स्वर उभरा, ''हां बिटिया! " प्रदीप की मम्मी ने सर हिलाया।

''इतना बढ़िया ठंडा पानी, और मस्त मीठा। फ्रिजर का पानी जैसा जी।" भारती की बात पर सबने पानी पीया। बोले ''इतना मस्त ठंडा कैसे हो सकता है एक मटके का पानी? "

''और क्यों ठंडा होता है आखिर इसका पानी? " सहसा सभी के मुंह से सिर्फ एक ही प्रश्न निकला।अब बच्चों के जिज्ञासापूर्ण प्रश्न का उत्तर देना प्रदीप-वंदना के पापा के लिए बहुत जरूरी था। उनके पास इस प्रश्न का उत्तर था भी, आखिर वे साइंश के अध्यापक जो थे। उन्होंने कहा, '' बच्चों !असल में होता क्या है कि मिट्टी के मटके की दीवार पर बहुत ही छोटे-छोटे छेद होते हैं। जिससे हमेशा पानी रिसता रहता है। इन छिद्रों से निकले पानी का वाष्पीकरण होता है और जिसके कारण मटके की दीवार हमेशा गीली रहती है और वाष्पीकरण की प्रक्रिया चलती रहती है, इसीलिए मटके के अंदर का पानी ठंडा रहता है। अब तुम सब समझ गए ना, मटके का पानी क्यों ठंडा होता है।" सबने हां में सर हिलाया। आज बच्चे बहुत खुश थे और क्यों न होंगे...आखिर उन्हें विज्ञान की एक अच्छी जानकारी मिली थी।

रंग भरो

- चांद मोहम्मद घोसी,
नन्हा बाजार, मेड़ता सिटी
(राज.)

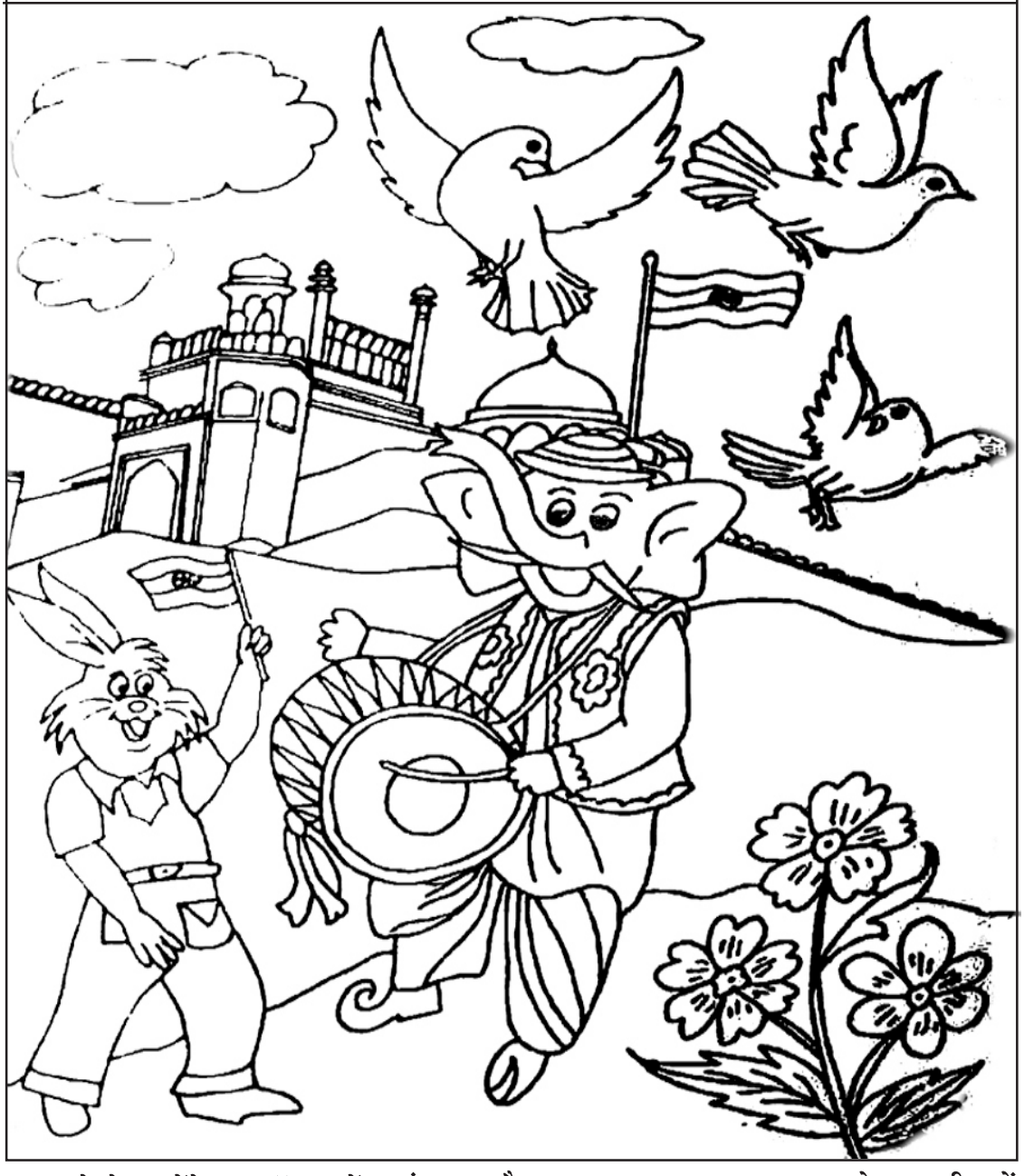

- गंजपारा,वार्ड 11, स्टेडियम गली, बालोद, छत्तीसगढ़
मोबाइल -9753269282

कहानी :

मेला

● कमलेशकुमार मिश्र

एक गांव था सिताबपुर। महादेवपुरम की दूरी इस गांव से सात-आठ किलोमीटर थी। पहाड़ी रास्तों और पगडंडियों से होते हुए दो घंटे का समय लगता था महादेवपुरम पहुंचने में। इस गांव के बच्चे टोलियां बनाकर मेले में आया करते थे। कम से कम दस-बारह बच्चों का दल होता था। किसी टोली का नायक किसी बच्चे का पिता तो किसी टोली का नायक किसी बच्चे का चाचा होता था। गांव की किशोरियों और महिलाओं की भी टोलियां होती थी।

ऐसी ही एक टोली गांव में सचिन और साथियों की भी बनी थी। उनकी टीम का लीडर था विवेक। विवेक उस समय महादेवपुरम में बारहवीं में पढता था और वहीं कमरा लेकर रहता था। आजकल बोर्ड परीक्षाएं शुरू होने से पहले छुट्टियां पड़ी हैं इसलिए विवेक गांव में ही है। उसने पांच-छह बार मेला देखा था। इसलिए उसके पास अनुभवों का खजाना था। इस टीम में सचिन, पूजा, गीता, आरती, राहुल, रोहित, सपना, मोहित, कल्पना और सौरभ थे। इनमें सचिन सबसे छोटा था। वह अभी तीसरी में ही पढ़ता था।

विवेक ने पहले दिन ही बता दिया था कि हम सुबह आठ बजे चलेंगे। सब गांव के चौक पर आठ बजे पहुंच जाना। सभी बच्चे गांव के चौक पर नहा-धोकर साढ़े सात बजे तक पहुंच गए थे। पर रोहित का अभी कोई पता नहीं था। आधे घंटे तक सबने रोहित का इंतजार किया। मोहित और सौरभ उसे लेने उसके घर गए। तब जाकर रोहित आठ बजे अपने पिताजी के साथ चौक पर पहुंचा। उसके आंखों में आंसू थे। उसके घर वालों ने उसे आने के लिए बहुत रोका था। पर बाल हठ के सामने उन्हें हार मानना पड़ा।

सचिन की मां ने उन्हें बहुत सी हिदायतें दी। सब हाथ पकड़कर चलना। आपस में लड़ाई मत करना। गाड़ी आएगी तो किनारे लग जाना। चार बजे से पहले घर पहुंच जाना। मेले में कुछ खा पी लेना। विवेक ने सब बच्चों को कहा था कि वे कम से कम सौ रुपए लेकर अवश्य आना। सचिन की मम्मी और रोहित के पापा ने तो सौ रुपए विवेक को पकड़ा दिए। पूजा और आरती ने भी अपने पैसे विवेक को दे दिए। सुबह विवेक के साथ दस बच्चों की टोली मेला देखने को चली। जिसमें 8 साल के सचिन से लेकर 18 साल के विवेक तक शामिल थे। ऐसी ही टोलियां आगे और पीछे भी चल रही थी। जिसमें बड़े-बूढ़े, महिलाएं और किशोरियां शामिल थे। सबने अपने लिए कुछ न कुछ सोच रखा था। सौरभ ने कहा मैं तो सर्कस में जाऊंगा। मोहित ने कहा मैं चरखी में बैठूंगा। सौरभ बोला सर्कस के जोकर की नाक इतनी लंबी होती है और इतनी लाल होती है जितना कि टमाटर। सौरभ की बात सुनकर सचिन तो कल्पनाओं में ही खो गया। इसी तरह की कल्पनाओं में खोई हुई सपना एक जगह ऐसी फिसली कि उसका पीले रंग का पैजामा मटमैला हो गया। रास्ते में एक नदी आई। और कुछ घराट भी दिखाई दिए। फिर एक धारा भी आया जहां का पानी पीकर सबकी थकान मिट गई। 10 बजे के आस-पास सभी बच्चे हंसते-खेलते, कूदते-फांदते मेले में पहुंच गए। जहां वे सबसे पहले मंदिर गए। मंदिर में बहुत भीड़ थी। इसलिए मंदिर का घंटा बजाकर वे वापस आ गए। मंदिर के बाहर चूड़ियों की दुकानें लगी थी।

कल्पना ने कहा, ''अरे रंग बिरंगी चूड़ियां।'' पूजा, आरती, सपना और गीता वहीं पर रुक गए। कल्पना ने हरे रंग की चूडियों को देखते हुए पूछा, '' ये कितने रुपए दर्जन हैं।''

दुकानदार ने कहा, ''दस रुपए दर्जन।''

पूजा और आरती ने अपने लिए तो गीता और कल्पना ने अपनी मां के लिए चूडियां खरीदी। सपना ने अपने लिए कड़े खरीदे। वहां मेहंदी की दुकानें भी सजी थी, कई बच्चे वहां अपने हाथों में अपना नाम गुदवा रहे थे। सौरभ ने भी अपना नाम गुदवाया।

एक जगह बहुत भीड़ लगी थी। विवेक भी वहीं पर रूक गया। वहां पर एक आदमी के हाथ में एक पैन और कपड़े का फीता था। और वह बीस का चालीस, पचास का सौ कह रहा था। वह फीते को मोड़ता था। उसके अंदर पैन फंसानी होती थी। अगर पैन फंस गई तो बीस के चालीस रुपए और पचास के सौ रुपए मिल रहे थे। मोहित ने देखा कि कभी पैन फंस रही थी

और कभी बाहर जा रही थी। उसको यह आसान लगा। उसने पचास रुपए लगाने चाहे तो विवेक ने उसे रोक दिया। विवेक ने उसे बताया, ''जो जीत रहा है। वह उसी का आदमी है और जो हार रहे हैं, वे अलग-अलग लोग हैं। अगर तुम दांव लगाते तो हार जाते। क्योंकि वह जैसे फीता खींचेगा, वैसा ही होगा।''

उसी के आगे एक चरखी वाला था। वहां पर दो प्रकार की चरखी थी। एक गोल वाली और एक ऊंची वाली। लड़के ऊंची वाली चरखी में बैठे और लड़कियां गोल वाली चरखी में बैठी। चरखी वाला दस चक्कर के पांच रुपए ले रहा था। भीड़ बहुत थी। इसलिए वह फटाफट बैठा और झूला रहा था। आगे जलेबियों की और मिठाई की दुकानें थी। बच्चों ने जलेबियां और मिठाई भी खाई। आगे की दुकान पर समोसे, पकौड़ी और आलू के गुटके बने थे। कुछ बच्चों ने उनका भी स्वाद लिया। बारह बज चुके थे। इसलिए भीड काफी बढ़ चुकी थी।

अब वे आगे एक दुकान पर गए। वहां दुकानदार माइक पर कह रहा था, ''हर माल दस रुपए। आइए! आइए! हर पर्ची के साथ इनाम पाइए।'' दुकान में बहुत सारी चीजें सजी हुई थी। दस रुपए देकर एक झोले में हाथ डालना होता था। उसमें से एक पर्ची निकालनी होती थी। पर्ची में जिस सामान का नाम लिखा होता था। वह आपको मिल जाती थी। मोहित को एक बच्चे ने बताया कि सुबह एक आदमी के पर्ची में टेलीविजन निकला था। वहां घड़ी, पंखे, रेडियो और टेपरिकार्डर भी रखे हुए थे। थोड़ी देर में मोहित का सब्र जवाब दे गया। उसने दस रुपए देकर एक पर्ची निकाली तो उसकी पर्ची में गेंद निकली। जिसकी कीमत पांच रुपए रही होगी। इतने में सौरभ को भी जोश आ गया। उसने पर्ची निकाली तो उसकी पर्ची में बिंदी का पत्ता आया। सब बच्चे जोर-जोर से हंसे। अब वहां से निकले तो विवेक ने बताया कि यहां भी मिली भगत है। जिस आदमी का टेलीविजन निकला वह उन्हीं का आदमी होगा। जब उसने झोले में हाथ डाला तो उसके हाथ में पहले से पर्ची रही होगी। मोहित और सौरभ को अब ठगी का एहसास हो रहा था।

उन्होंने देखा कि कुछ लोग गांव से गन्ना लाकर मेले में बेच रहे थे। उन्हीं के साथ कुछ लोग बर्फ भी बेच रहे थे। एक जगह प्याऊ लगा हुआ था। वहां पर कुछ लोग सबको फ्री के माल्टे का जूस पिला रहे थे। सब बच्चों ने जूस पीकर अपनी प्यास बुझाई। अब वे आगे बढ़े। वहां बड़े परदे पर फिल्म दिखाई जा रही थी। वे फिल्म देखने गए तो फिल्म एक घंटे से कम समय में खत्म हो गई। यहां भी उन्हें ठगी का एहसास हुआ। क्योंकि पिक्चर वाला पैसे कमाने के चक्कर में दो-ढाई घंटे की फिल्म को एक घंटे में ही खत्म कर दे रहा था। दिन भर में उन्होंने एक ही फिल्म के सात-आठ शो चलाए। मेले में कोई कपडे खरीद रहा था। तो कोई चश्मे पहनकर घूम रहा था।

इसके बाद वे सर्कस देखने गए। वहां उन्होंने बहुत से करतब देखे। करतब देखकर उन्होंने दांतों तले उंगली दबा दी। सर्कस में एक गधा भी था। उसका नाम पन्नालाल था। वह अपने मालिक द्वारा पूछे जा रहे सवालों का सटीक जवाब दे रहा था। कौन नहाकर नहीं आया है। कौन अपनी बीबी से पिटता है। कौन औरत मां बनने वाली है। कौन बच्चा सबसे ज्यादा झूठ बोलता है। कौन बच्चा सबसे ज्यादा चोरी करता है।सवाल सुनने के बाद पन्नालाल उस आदमी के सामने जाकर खडा हो जाता था।

बच्चे सर्कस देखकर बाहर निकले तो झमाझम बारिश शुरू हो गई। समय भी बहुत तेजी से बीत रहा था। शाम के चार बज चुके थे। सभी बच्चों ने बचे-खुचे पैसों से खरीददारी की। और थके हारे घर की और चले। सब बच्चे घर के लिए कुछ न कुछ ले जा रहे थे। घर जाने और शाम ढलने का सबको बड़ा दुःख हो रहा था। पर आज सबके पास अनुभवों का ढेर सारा खजाना था। घर पहुंचते -पहुंचते रात हो गई। रोहित और सचिन की मम्मी उन्हें लेने रास्ते में आई थी। तो पूजा और आरती की दादी आई थी। सपना के पिताजी भी आए थे। बच्चों को देखते ही सबके जान में जान आ गई।

सचिन को उसकी मां ने गोदी में लिया तो उसके हाथ में पिन का एक पैकेट था। कई बार खेतों में काम करते हुए हाथ या पैरों में कांटे चुभ जाते थे तो पिन कांटा निकालने के काम आते थे। बच्चे के हाथ में पिन देखकर सचिन की मां के आंखों में आंसू आ गए और उन्होंने नन्हें सचिन को कसकर गोदी से लिपटा दिया।

- पौड़ी गढ़वाल,
मोबाइल-8126983743

कोरोना को हराएंगे

● नीलम शर्मा

जंगल में फैल न जाए,
कहीं कोरोना महामारी।
ये सोच कर राजा ने,
फरमान किया ये जारी।
कोई मिलाए न हाथ,
मास्क अब होगा जरूरी।
भीड़-भाड़ पर पाबंदी हो,
जरूरी दो गज की दूरी।
सेनेटाइज होगा जंगल,
साबुन घर घर पहुंचाएंगे।
बचाव यदि सभी करें,
कोरोना को हम हराएंगे।

-सेंट मेरी कांवेंट स्कूल के पास
विकासनगर,देहरादून
मोबाइल- 9897759583

पुस्तक समीक्षा :

ऐसा था नानी का बचपन

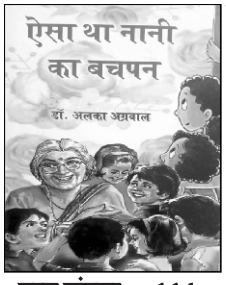

बच्चों से सीधे संवाद करते हुए इस पुस्तक में 10 अध्याय हैं। चित्रों ने पुस्तक को आकर्षक बना दिया है। पुस्तक बड़े बच्चों यानी किशोरों के लिए प्रेरणादायक तो है ही बड़ों के लिए भी उपयोगी है। पुस्तक पढ़कर बड़े लोगों को भी अपने बचपन की स्मृतियां संजोने की ललक जाग्रत होगी, ऐसा हमारा मानना है।

पृष्ठ संख्या : 114 मूल्य- 225/- रुपए

रचनाकार : डॉ. अल्का अग्रवाल

संपर्क : साहित्यागार, धामाणी मार्किट की गली, चौड़ा रास्ता, जयपुर- 302003

लजीज पुलाव

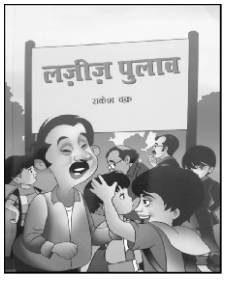

प्रकाशन विभाग भारत सरकार द्वारा प्रकाशित कहानी संग्रह में 16 कहानियां संग्रहीत हैं। कहानियां बच्चों को आपसी सद्भाव, देश प्रेम, राष्ट्रीय एकता के साथ ही सामाजिक मूल्यों एवं आशावादी दृष्टिकोण से जोड़ती हैं। रंगीन चित्रों ने पुस्तक को बहुत आकर्षक बना दिया है। बच्चे चित्रों को देखकर सारी कहानियों को एक साथ पढ़ जाएंगे, ऐसा हमारा मानना है।

पृष्ठ संख्या : 74 मूल्य- एक प्रति- 110/-रुपए

रचनाकार : राकेश चक्र

संपर्क : 40 शिवपुरी, डबल फाटक, मुरादाबाद, उ.प्र.

नन्ही टोली

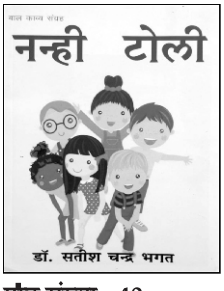

बाल काव्य संग्रह में 21 कविताएं बाल मनोविज्ञान के अनुरूप दी गई हैं। बच्चों को प्रकृति, अपनी संस्कृति से जोड़ने की दिशा में पुस्तक महत्वपूर्ण है। 'चूता छप्पर छानी' जैसी कविताएं गरीब बच्चों की बात को बयां करती है तो सम-सामयिक कोरोना को भी कविता मे पिरोकर बच्चों के लिए दिया गया है। प्रत्येक कविता के लिए एक पृष्ठ चित्र के लिए रखा गया है।

पृष्ठ संख्या- 48 मूल्य- 80/- रुपए

रचनाकार : डॉ. सतीशचंद्र भगत

संपर्क : हिंदी बालसाहित्य शोध संस्थान बनौली, दरभंगा, बिहार

बच्चों की दुनिया

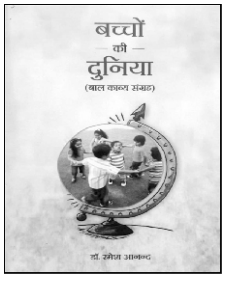

बाल कविता संग्रह में 57 कविताएं संग्रहीत की गई हैं। शिशु, बच्चे और किशोरों के मनोविज्ञान को समझते हुए कविताएं दी गई हैं। लोरी गीत को भी संग्रह में शामिल कर लोरी विधा को आगे बढ़ाने का प्रयास किया गया है। बच्चों की तर्क शक्ति को बढ़ाने के लिए पहेली बतौर कविताएं भी दी गई हैं। पुस्तक बच्चों के लिए बहुत उपयोगी है।

पृष्ठ संख्या : 58 मूल्य- 100/-रुपए

रचनाकार : डॉ. रमेश आनंद

संपर्क : 2/305 बघेल कुंज, नामनेर, आगरा, उ.प्र. 282001

फूल और पत्ते

कविता संग्रह में 40 कविताएं बच्चों और किशोरों के लिए संग्रहीत की गई हैं। रचनाकार ने प्रकृति, संस्कृति, राष्ट्रीय एकता, सफलता का राज, से लेकर वर्तमान सम सामयिक कोरोना जैसे विषयों के माध्यम से बच्चों में संस्कार एवं जाग्रति लाने का प्रयास किया है। पारिवारिक बच्चों के साथ दादा का रोल निभा रहे रचनाकार ने दादा जी कविता के माध्यम से बाल मनोविज्ञान को उकेरा है।

पृष्ठ संख्या : 82 मूल्य : 125/- रुपए

रचनाकार : अश्वनीकुमार पाठक

संपर्क : ब्राहमणपुर, विष्णुदत्त वार्ड-8 सिहोरा, जबलपुर, म.प्र. 483225

सप्तऋषि

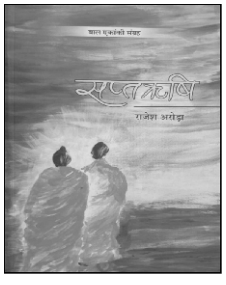

बाल एकांकी संग्रह में सच्चा देशभक्त, श्रम का सम्मान, मेरा देश मेरा गौरव, सेवा का प्रकाश, चमत्कार, कौन कहता है तुम महान बनोगे, इंसान बनो महान बनो जैसे 7 बाल एंकाकी बच्चों के लिए तैयार किए गए हैं। स्कूल के बच्चे अपने स्कूल में इन शिक्षाप्रद नाटकों को आसानी से तैयार कर मंचन कर सकते हैं।

पृष्ठ संख्या : 76 75/- रुपए

संपादक : राजेश अरोड़ा

संपर्क : भारतीय डाक विभाग गजसिंहपुर, श्रीगंगानगर, राजस्थान-335024

पोते ने पूछा

'आ बैल मुझे मार' जैसे 43 मुहावरों पर कविताएं देकर बच्चों को मुहावरे का अर्थ समझाने का प्रयास उल्लेखनीय है। नई विधा बतौर यह प्रयोग बालसाहित्य की अमूल्य धरोहर के रूप में बच्चों तथा साहित्यकारों के लिए पठनीय तथा संग्रहणीय होगा। कविताएं बहुत ही सरल भाषा में दी गई हैं। बच्चे इन्हें आसानी से याद करके गुनगुनाएंगे। ऐसा हमारा मानना है।

पृष्ठ संख्या : 48 मूल्य- 30/- रुपए

रचनाकार : डॉ. सतीशचंद्र शर्मा 'सुधांशु'

संपर्क : बाबू कुटीर, ब्रहमपुरी, पिंदारा रोड, बिसौली, बदायूं, उ.प्र.- 243720

प्रकृति के रंग बच्चों के संग

बालगीत संग्रह के अध्याय-एक में प्रकृति से संबंधित 27 कविताएं बच्चों के लिए तैयार की गई हैं। प्रकृति के जलचर, थलचर व नभचर जीवों के साथ ही पालतु पशुओं का ज्ञान बच्चों को देने का सार्थक प्रयास हुआ है। अध्याय-दो में हिंदी भाषा के स्वर, व्यंजन तथा पहाड़े दिए गए हैं।

पृष्ठ संख्या : 32 मूल्य- 60/- रुपए

रचनाकार: डॉ. मनोरमा गुप्ता (पिपरसानिया)

संपर्क : 250 दक्षिण मिलौनीगंज, पोस्ट आफिस की गली, जबलपुर

समीक्षक :
रतनसिंह किरमोलिया
मो.7534007179

बालप्रहरी समाचार

बैनोली (रुद्रप्रयाग)। बालप्रहरी तथा भारत ज्ञान विज्ञान समिति के संयुक्त तत्वावधान में राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय बैनोली भरदार में 27 तथा 28 फरवरी को दो दिवसीय बाल विज्ञान मेले का आयोजन किया गया। कार्यशाला में 29 बच्चों को विज्ञान आधारित कई गतिविधियां कराई गई। सर्वश्री कालिकाप्रसाद सेमवाल, बलिराम नौटियाल, हेमंत चौकियाल, माधवसिंह नेगी, कुसुम भट्ट, अमृता नौटियाल, अश्विनी गौड़, पुरूषोत्तम दत्त काला, सिमरन, अजीतराम नौटियाल, अजीतराम सेमवाल आदि ने बच्चों का उत्साह बढ़ाया। कार्यक्रम की स्थानीय संयोजक डॉ. गीता नौटियाल ने सहयोग के लिए सभी का आभार व्यक्त किया।

अल्मोड़ा। बालप्रहरी तथा भारत ज्ञान विज्ञान समिति के संयुक्त तत्वावधान में विज्ञान दिवस के अवसर पर राजकीय इंटर कालेज बसर में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं मे किरन जोशी, चंद्रशेखर कांडपाल, राशि भट्ट, आरती आर्या, भव्या तिवारी सहित 30 बच्चों को पुरस्कार में बालसाहित्य प्रधानाचार्य श्री डी डी तिवारी के हाथों दिया गया।

द्वाराहाट (अल्मोड़ा)। बालप्रहरी तथा भारत ज्ञान विज्ञान समिति के संयुक्त तत्वावधान में 13 अप्रैल को स्याल्दे बिखोती मेले के अवसर पर आयोजित कवि सम्मेलन में बालप्रहरी के संरक्षक डॉ.डी.पी.चौधरी, रमेशचंद्र पंत, लोकेश जोशी, परितोष पांडे, नवीनचंद्र मैनाली, राजेंद्रसिंह बिष्ट, प्रकाश जोशी, लक्ष्मीचंद्र त्रिपाठी, सी.पी.जोशी, उदय किरौला आदि ने कविता पाठ किया। अध्यक्षता लोक कलाकार जसीराम आर्या तथा संचालन भूपालसिंह अधिकारी ने किया।

अगस्त्यमुनि (रुद्रप्रयाग)। बालप्रहरी तथा भारत ज्ञान विज्ञान समिति रुद्रप्रयाग के संयुक्त तत्वावधान में 6 मार्च को राजकीय इंटर कालेज अगस्त्यमुनि तथा राजकीय बालिका इंटर कालेज अगस्त्यमुनि में बच्चों के साथ संवाद किया गया। बालप्रहरी संपादक उदय किरौला ने बच्चों को सुनाई 'आदमी की कहानी'। भारत ज्ञान विज्ञान समिति के गजेंद्र रौतेला ने भारत ज्ञान विज्ञान समिति की अवधारण रखते हुए वैज्ञानिक सोच से जुड़ने का आह्वान किया।

बालसाहित्य सम्मान

अल्मोड़ा। बालसाहित्य संस्थान अल्मोड़ा द्वारा जारी विज्ञप्ति के अनुसार जून 2021 में होने वाली राष्ट्रीय बालसाहित्य संगोष्ठी इस बार भी स्थगित की गई है। गंगा अधिकारी स्मृति बाल कहानी प्रतियोगिता तथा पुष्पलता जोशी स्मृति बाल कहानी प्रतियोगिता के पुरस्कार शीघ्र ही समारोह आयोजित कर दिए जाएंगे। कोरोना में हालात सही नहीं होने पर उक्त पुरस्कारों की धनराशि चैक से साहित्यकारों को भेजने की योजना भी बनाई जा रही है। जब कि बालसाहित्य सम्मान के लिए आमंत्रित पुस्तकों के पुरस्कार आगामी जून माह में आयोजित कार्यक्रम में दिए जाने का प्रस्ताव है।

बालप्रहरी ने ऑनलाइन की 140 कार्यशालाएं

अल्मोड़ा। बालसाहित्य संस्थान एवं बालप्रहरी द्वारा कोरोना काल में बच्चों के लिए किए जाने वाले ऑनलाइन कार्यशालाओं का सिलसिला जारी है। 'संचार प्रौद्योगिकी और बच्चे' विषय पर आयोजित 100 वीं कार्यशाला को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि प्रख्यात बालसाहित्यकार डॉ. शकुंतला कालरा ने कहा कि कोरोना काल में मोबाइल बच्चों का दोस्त बनकर उभरा है। सत्र की अध्यक्षता डॉ. विमला भंडारी ने की। इस सत्र को उत्तराखंड शिक्षा विभाग के उप निदेशक आकाश सारस्वत, प्रख्यात साहित्यकार डॉ.प्रत्यूष गुलेरी, भगवतीप्रसाद द्विवेदी, डॉ. शील कौशिक, श्यामपलट पांडे आदि ने संबोधित किया।

बालसाहित्य संस्थान अल्मोड़ा के अध्यक्ष श्री रतनसिंह किरमोलिया जी के अनुसार अभी तक संस्थान ने 140 कार्यशालाएं आयोजित की हैं। जिसमें देश के प्रतिष्ठित बालसाहित्यकारों, लेखकों तथा वैज्ञानिकों ने बच्चों से सीधे संवाद किया है। उन्होंने बताया कि बालप्रहरी व बालसाहित्य संस्थान से देश के विभिन्न राज्यों के लगभग 490 बच्चे जुड़े हैं। जिनमें से वर्तमान में लगभग 150 बच्चे सक्रिय हैं। उन्होंने बताया कि बच्चों की कार्यशालाओं का संचालन व अध्यक्षता बच्चे ही कर रहे हैं। मुख्य अतिथि बतौर हर कार्यशाला में एक साहित्यकार बच्चों का मार्गदर्शन करते हैं। उन्होंने कहा कि अभी तक लगभग 120 बच्चों को संचालन करने का अवसर मिल चुका है। उन्होंने बताया कि बाल कवि सम्मेलन में जहां बच्चे स्वरचित कविताएं प्रस्तुत करते हैं। वहीं कविता वाचन कार्यशाला में बच्चे देश के प्रतिष्ठित कवियों की रचनाओं का पाठ उनके परिचय के साथ प्रस्तुत करते हैं। त्वरित भाषण के माध्यम से बच्चों का आत्मविश्वास बढ़ रहा है। इसके अतिरिक्त लोक कथा, लोकगीत, देश भक्ति गीत पहेली, चुटकुले, आचंलिक भाषा की पहेलियां, परिचर्चा, आत्मकथा वाचन आदि कार्यशालाएं बच्चों के लिए आयोजित की जा रही हैं। कहानी व कविता वाचन सत्र में बच्चे वरिष्ठ कवियों तथा कहानीकारों की रचनाओं पर टिप्पणी प्रस्तुत कर रहे हैं।

उन्होंने कहा कि ऑनलाइन कार्यशालाएं आयोजित करने में शिक्षकों, अभिभावकों तथा शुभचिंतकों का सहयोग मिल रहा है। उन्होंने कहा कि प्रतिभाग करने वाले बच्चों को ऑनलाइन प्रमाण पत्र भी दिए जा रहे है। जिन बच्चों की रचनाएं बालप्रहरी में प्रकाशित हो रही हैं। उन्हें बालप्रहरी का अंक नि:शुल्क डाक से भेजा जा रहा है। उन्होंने कहा कि इन कार्यशालाओं में जहां बच्चों को लेखन के लिए प्रेरित किया जा रहा है। वहीं पठन-पाठन की संस्कृति से जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है।

बच्चों की लेखन कार्यशाला

नौकुचियाताल(नैनीताल)। बालसाहित्य संस्थान अल्मोड़ा द्वारा 12 से 16 मार्च तक यू कास्ट के सहयोग से राजकीय इंटर कालेज नौकुचियाताल में आयोजित बच्चों की लेखन कार्यशाला में 53 बच्चों ने अपनी-अपनी हस्तलिखित पुस्तकें तैयार की। कार्यशाला का उद्घाटन प्रधानाचार्य श्री स्वरूप कोहली ने किया। बालप्रहरी संपादक एवं बालसाहित्य संस्थान अल्मोड़ा के सचिव उदय किरौला, प्रदीपकुमार जोशी, प्रदीप सनवाल, गोपाल प्रसाद, नीरज पंत, प्रमोद तिवारी, अनिल पुनेठा, कला पंत, अरूणा साह आदि ने संदर्भ व्यक्ति बतौर सहभागिता की। समापन समारोह को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि नेहरू युवा केंद्र के पूर्व महानिदेशक दयानंद आर्य ने बच्चों द्वारा प्रस्तुत नुक्कड़ नाटक 'कुदरत का विज्ञान' की सराहना करते हुए कहा कि बच्चों के अंदर छिपी प्रतिभा को उजागर करने के लिए इस प्रकार की कार्यशालाएं महत्वपूर्ण होती हैं। कार्यशाला में बच्चों ने छांस बनाने, कंपोस्ट खाद बनाने, फल संरक्षण आदि की परंपरागत विधियों को अपने प्रोजक्ट में शामिल किया। समारोह के अध्यक्ष श्री रघुवरदत्त पंत ने बच्चों की प्रस्तुति की सराहना करते हुए कहा कि विज्ञान के आज के युग में हमें वैज्ञानिक सोच जाग्रत करने के लिए क्यों कैसे जैसे सवाल उठाने तथा तर्क-वितर्क करने की क्षमता को विकसित करना होगा। समापन समारोह में विद्यालय के शिक्षक तथा अभिभावक सहित विद्यालय के सभी बच्चों ने सहभागिता की। अंत में कार्यशाला के स्थानीय संयोजक प्रदीप जोशी ने सभी का आभार व्यक्त किया। प्रधानाचार्य श्री स्वरूप कोहली ने बच्चों को प्रमाण पत्र दिए।

104 बच्चों ने बनाई हस्तलिखित पुस्तकें

कोटबांगर(रुद्रप्रयाग)। उत्तराखंड राज्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद देहरादून के सौजन्य से बालसाहित्य संस्थान अल्मोड़ा द्वारा राजकीय इंटर कालेज कोटबांगर में आयोजित बच्चों की 5 दिवसीय कार्यशाला में 104 बच्चों ने अपनी-अपनी हस्तलिखित पुस्तकें तैयार की। कार्यशाला का उद्घाटन प्रधानाचार्य विजय सिंह ने किया। उन्होंने कहा कि बच्चों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण जाग्रत करने तथा क्या, क्यों व कैसे जैसे सवाल उठाने के लिए बच्चों को प्रेरित करने की दिशा में यह कार्यशाला महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि विज्ञान के प्रयोग हम सब सुबह से शाम तक करते हैं। परंतु विज्ञान को कठिन समझकर बच्चे उसमें रुचि नहीं लेते हैं। 5 दिवसीय कार्यशाला में सर्वश्री कालिकाप्रसाद सेमवाल, हेमंत चौकियाल, जे.के.पैन्यूली, अमृता नौटियाल, नमदीप बेहरा, प्रियंका थपलियाल, उषा राणा, मनोज कुमार, महिपालसिंह विनीत श्रीवाल आदि ने संदर्भ व्यक्ति बतौर बच्चों को कई गतिविधियां कराई। समापन समारोह में 104 बच्चों द्वारा तैयार हस्तलिखित पुस्तकों की प्रदर्शनी विशेष आकर्षक थी। बच्चों ने नुक्कड़ नाटक तथा समूह गीत तथा लोकनृत्य प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के अंत में राजकीय इंटर कालेज कोटबांगर के वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी साहित्यकार एवं कार्यशाला के स्थानीय संयोजक बलिराम नौटियाल ने सभी का आभार व्यक्त किया।

जानकारी:

शिमला का सफर

● डॉ. उमा भट्ट

पहाड़ों की रानी मसूरी और पहाड़ों का दिल शिमला कहा जाता है। आज मैं तुम्हें कालका से शिमला के सफर की कहानी बताने जा रही हूं। हिमाचल प्रदेश की राजधानी शिमला आज पर्यटकों का सबसे पसंदीदा पर्यटन स्थल बना हुआ है। शिमला जितना आकर्षक है उससे ज्यादा सम्मोहन उस रेल यात्रा में है। जिससे सफर करके सैलानी इस अनूठे शहर तक पहुंचते हैं। शिमला तक पहुंचने वाली रेलगाड़ी के सफर का रोमांच जिंदगी भर न भूलने वाला होता है। आज जब मैं इस रोमांचक सफर के बारे में आपसे अपने अनुभव बांटने जा रही हूं तो मेरे जेहन में वे सभी अविस्मरणीय यादें ताजा हो गई हैं। जब मैं अपने पापा की अंगुली पकड़े गढ़वाल से हिमाचल प्रदेश के इस खूबसूरत रोमांचक सफर पर रवाना होती थी।

तुम्हें पता है पहले भारत की राजधानी कोलकाता हुआ करती थी। कहते हैं सन् 1857 के विद्रोह के बाद प्रथम वायसराय लार्ड लारेंस ने यह तय किया कि गरमियों में भारत की राजधानी कलकत्ता से हटाकर शिमला होनी चाहिए। कुछ लोगों का यह भी मत है कि लार्ड लारेंस बीमार रहते थे और उन्हें डॉक्टरों ने यह राय दी थी कि वे ठंडे स्थानों पर रहेंगे। तभी स्वास्थ्य लाभ होगा। तब उन्होंने अपने सेक्रेटरी ऑफ स्टेट मिस्टर चार्ल्स को पत्र लिखा कि शिमला देश की राजधानी के लिए सर्वथा उपयुक्त स्थान है और उनकी बात मान ली गई। 1870 में कालका से शिमला रेलमार्ग निर्माण प्रारंभ हुआ। पहाड़ी मार्ग होने के कारण इसमें छोटे-छोटे मोड़ और 102 सुरंगे हैं। जिनकी कुल लम्बाई 8 किमी है। इस यात्रा मार्ग में कई पुलों और सुरंगों से गुजरना एक रोमांच पैदा करता है। जैसे ही सुरंग आती है सभी बच्चे चिल्लाने और ताली बजाने लगते हैं। पहाड़ी रास्तों पर दौड़ती यह छोटी सी गाड़ी खिलौने की तरह लगती है और आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि इस रेलमार्ग के निर्माण में मुख्य भूमिका गांव के अनपढ़ व्यक्ति 'भलखू' की थी। क्योंकि भलखू आगे-आगे अपने कुदाल से निशान लगा कर बढ़ता जाता था और पीछे-पीछे अंगरेज इंजीनियर चलते थे। शिमला के खूबसूरत पहाड़ों पर सरपट भागती इस गाड़ी से संसार के कोने कोने से करोड़ों पर्यटक शिमला की खूबसूरत वादियों में निरंतर आते हैं। गर्मी में ठंडक का और सर्दी में बर्फ में खेलने का मजा लेते हैं। कभी आप भी शिमला की सैर जरूर करें।

- भारत ज्ञान विज्ञान समिति देहरादून

सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता-67

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर नीचे कूपन में गोला भरकर **15 अगस्त, 2021** तक संपादक बालप्रहरी, अल्मोड़ा-263601 उत्तराखंड के पते पर (कूपन काटकर) भेजना है। प्रतियोगिता में 14 साल तक के बच्चे भाग ले सकते हैं। अधिक बच्चों के सही उत्तर होने पर ड्रा से नाम निकाला जाएगा। सर्वोत्तम आने वाले बच्चे का नाम पत्रिका में छापा जाएगा। उपहार में 200 रुपए की पुस्तकें/पत्रिकाएं भेजी जाएंगी। सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता-66 में **पलक गुप्ता कक्षा 7 आर एम पी स्कूल सहारनपुर,उ.प्र.** का चयन किया गया है। इन्हें पुरस्कार में पुस्तक/पत्रिकाएं भेजी जा रही हैं।

1. **चंद्रशेखर आजाद का जन्म दिन है।**
   (a) 23 जुलाई,1906 (b) 27 फरवरी,1931
   (c) 27 जुलाई,1931 (d) 1 जुलाई, 1931
2. **ऊधमसिंह को फांसी की सजा दी गई।**
   (a) 31 जुलाई,1940 (b) 13 अप्रैल,1940
   (c) 13 मार्च,1940 (d) 26 दिसंबर,1899
3. **2020 में राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार कितने बच्चों को मिला?**
   (a) 32 (b) 12
   (c) 22 (d) 42
4. **फूलदेई का त्यौहार मनाया जाता है।**
   (a) केरल (b) पंजाब
   (c) तमिलनाडू (d) उत्तराखंड
5. **ऊधमसिंहनगर जनपद किस राज्य में है?**
   (a) उत्तर प्रदेश (b) हिमाचल प्रदेश
   (c) उत्तराखंड (d) मध्य प्रदेश

बालप्रहरी सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता-66 का सही उत्तर

1. (b), 2. (a), 3. (c), 4. (b) 5. (b)

बालप्रहरी सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता-67

नाम : ..... **कक्षा** .....

पता : .....

.....

फोन (कोड सहित)..... **मो.** .....

	(a)	(b)	(c)	(d)
प्रश्न सं. 1	○	○	○	○
2	○	○	○	○
3	○	○	○	○
4	○	○	○	○
5	○	○	○	○

नोट : सही उत्तर वाले गोले को पेंसिल या काले पैन से (इस प्रकार (●) काला करना है।

शुभचिंतकों से

- बालप्रहरी केवल एक पत्रिका ही नहीं बच्चों के मन में वैज्ञानिक सोच जाग्रत करने, उन्हें साहित्यिक मंच प्रदान करने तथा रचनात्मक कार्यों व पठन-पाठन की संस्कृति से जोड़ने का एक सामूहिक प्रयास भी है।
- बालप्रहरी के लिए रचनाएं भिजवाकर सहयोग करें। पारिवारिक व परिचित बच्चों को बालप्रहरी के लिए रचनाएं लिखने के लिए प्रेरित कीजिएगा। एक कागज पर एक ही रचना लिखी हो।
- बार-बार शुल्क भेजने की परेशानी से बचने के लिए आजीवन /संरक्षक सदस्यता भिजवाएं। धनराशि पंजाब नेशनल बैंक अल्मोड़ा स्थित बालप्रहरी के खाता सं. 0962000101357002 (IFSC Code : PUNB 0096200) में सीधे भी जमा की जा सकती है। धनराशि बैंक में जमा करने पर कृपया सूचना वाट्सअप/मेल/ एस.एम.एस./पोस्टकार्ड या पत्र से देकर सहयोग करें।
- बालप्रहरी के लिए शुल्क/ मनीआर्डर व रचना भेजते समय अपना नाम, पूरा पता एवं फोन न. अवश्य भेजें। पता बदलने तथा पत्रिका नियमित नहीं मिलने पर वाट्सअप/ पोस्ट कार्ड /पत्र/एस.एम.एस. से सूचित करें।

बालप्रहरी को बालोपयोगी बनाने के लिए आप सबसे सहयोग एवं मार्गदर्शन की अपेक्षा है। - संपादक

बालप्रहरी

(बच्चों की त्रैमासिक पत्रिका)

संपादकीय कार्यालय

दरबारीनगर, अल्मोड़ा, उत्तराखंड - 263601

मो.: 9412162950

सदस्यता फार्म

मैं 'बालप्रहरी' की सरंक्षक सदस्यता 5000/-, आजीवन सदस्यता 2,000/-, 3 वर्ष का शुल्क 300/-रु. मनीआर्डर / ड्राफ्ट/चैक सं0 .....दिनांक .....द्वारा भेज रहा/रही हूं। कृपया मुझे पत्रिका की प्रति नियमित रूप से डाक से भिजवाएं।

नाम .....

पता .....

.....

.....

.....पिन.....

मोबाइल/ फोन .....

पुस्तक प्राप्ति

पुस्तक : **हौसले की उड़ान**
रचनाकार : सुशीला शर्मा
संपर्क : 64-65 विवेक विहार,न्यू सांगानेर रोड, सोडाला,जयपुर 302019

पुस्तक : **छू लो आसमान**
रचनाकार : लक्ष्मी शर्मा
संपर्क : 1020 शक्तिनगर, गुप्तेश्वर रोड, जबलपुर,म.प्र. 482001

पुस्तक : **बुद्धिमता**
रचनाकार : होशियार सिंह यादव
संपर्क : मोहल्ला मोदीका,वार्ड 1,कनीना,महेंद्रगढ़,हरियाणा 123027

पुस्तक : **बचपन की गलियां**
रचनाकार : मीरा सिंह 'मीरा'
संपर्क : महारानी उषा रानी बालिका उ.वि.डुमरांव,बिहार

पुस्तक : **किरण-किरण रोशनी**
रचनाकार : रूबी शर्मा
संपर्क : अमित दीप,जोहवाशर्की, रायबरेली,उ.प्र.- 229303

पुस्तक : **भारतीय नेपाली बालसाहित्य**
संपादक : टीका ढुंगेल
संपर्क : गांतोक,सिक्किम,737101

पुस्तक : **पढ़ो कहानी मिले सफलता**
संपादक : श्यामकृष्ण सक्सेना
संपर्क : उ.प्र.हिंदी संस्थान,हजरतगज,लखनऊ,उ.प्र. 226003

पुस्तक : **चाबी वाला भूत**
रचनाकार : ओमप्रकाश क्षत्रिय 'प्रकाश'
संपर्क : पोस्ट आफिस के पास,रतनगढ़, नीमच,म.प्र. 458226

पुस्तक : **किशोर उत्सव**
रचनाकार : के. पी. पांडेय 'वृहद'
संपर्क : 527/25-ए,अर्पणनगर,न्यू जगदंबा कॉलोनी,जबलपुर,म.प्र.

पुस्तक : **मां की रोटी गोल-गोल**
रचनाकार : सुधांशुकुमार चक्रवर्ती
प्रकाशक : स्टेशन रोड, हाजीपुर,वैशाली, बिहार- 844101

पुस्तक : **छेना और रसगुल्ला**
रचनाकार : राजकुमार सचान
संपर्क : 421 गुंजन विहार,वर्रा 6 कानपुर नगर,उ.प्र. 208027

पुस्तक : **तेरे चरणों में**
रचनाकार : डॉ. सुधा शर्मा 'पुष्प'
संपर्क : सुर सदन, डब्ल्यू जैड-1987, रानीबाग,नई दिल्ली 110034

पुस्तक : **लिल्ली घोड़ी**
रचनाकार : डॉ. अजीतसिंह राठौर 'लुल्ल कानपुरी'
संपर्क : 36 एम आई जी, एस बी आई कॉलोनी, जनता नगर,वर्रा- 3 कानुपर,उ.प्र.

पुस्तक : **फरियाद बेजुबानों की**
रचनाकार : सीताराम अहिरवार 'मनमौजी'
संपर्क : रविदास कॉलोनी,वार्ड 4 गंज बासौदा,विदिशा,म.प्र. 464221

पुस्तक : **डिजाइनर घोंसला**
रचनाकार : शिखर चंद जैन
संपर्क : 67/49 स्ट्रांड रोड, थर्ड फ्लोर, कोलकाता- 700007

पुस्तक : **बालोपयोगी लोक पद्य कथाएं**
रचनाकार : सुरेश चंद्र 'सर्वहारा'
संपर्क : 3 फ-22 विज्ञान नगर कोटा, राजस्थान-324005

पुस्तक : **खिलते फूलों से**
रचनाकार : कृष्णकुमार अष्ठाना
संपर्क : 40 संवादनगर,इंदौर, म.प्र.

पुस्तक : **मेरू उत्तराखंड महान**
रचनाकार : डॉ. राजेश्वर उनियाल
प्रकाशक : रावत डिजीटल,131-132ए न्यायखंड-2 इंदिरापुरम,गाजियाबाद, उ.प्र.

बालप्रहरी बाल क्लब

अभिश्री जोशी
हल्द्वानी

नितिन पाठक
गंगोलीहाट, पिथौरागढ़

काव्यांजलि
चौखुटिया, अल्मोड़ा

अभिज्ञान जोशी
कठायतबाड़ा,बागेश्वर

आयुष रौतेला
गंगोलीहाट, पिथौरागढ़

खुशी बिष्ट
चौखुटिया, अल्मोड़ा

स्मिता कुंवर
गोपेश्वर, चमोली

आयुष डंगवाल
जखोली, रुद्रप्रयाग

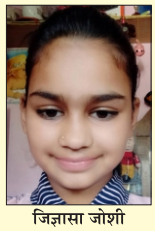
जिज्ञासा जोशी
सोमेश्वर, अल्मोड़ा

स्नेही सिंह
खटीमा

आराधना पंत
गंगोलीहाट, पिथौरागढ़

सान्वी सिंह
दिल्ली

नीलेश भट्ट
अल्मोड़ा

तन्मय शर्मा
दुगालखोला, अल्मोड़ा

कनिका जोशी
चनौदा, अल्मोड़ा

वरेण्य साह
बागेश्वर

चित्रांश लोहनी
चंपावत

सुनिधि सोराड़ी
नानकमत्ता, ऊ.सिं. नगर

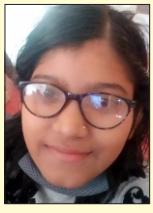
अक्षरा भट्ट
काठगोदाम,नैनीताल

प्रखर बहुगुणा
देहरादून

एकाग्रता पंत
मुक्तेश्वर, नैनीताल

शांभवी
देहरादून

आयुष्मान जोशी
बागेश्वर

प्रांजलि लोहनी
चंपावत

मयंक कांडपाल
रानीधारा, अल्मोड़ा

काव्य पटेल
बागेश्वर

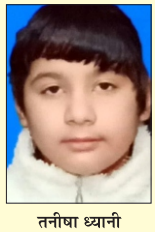
तनीषा ध्यानी
स्याल्दे, अल्मोड़ा

नए संरक्षक : डॉ. डी.पी. चौधरी

गंगादेवी इंटर कालेज हरदोई उत्तर प्रदेश से प्रधानाचार्य पद से सेवानिवृत्त डॉ. डी.पी. चौधरी उत्तराखंड बाल कल्याण परिषद देहरादून के कार्यक्रमों में सक्रिय रहे हैं। आपने 'स्वातंत्रोत्तर गीति काव्य का अध्ययन' विषय पर शोध कार्य किया है। उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान के तत्वावधान में निर्माणाधीन जनपदीय कोष योजना में भी आप संपादक मंडल में रहे हैं। अल्मोड़ा जनपद में संचालित संपूर्ण साक्षरता/उत्तर साक्षरता अभियान में आपने बतौर मुख्य संदर्भ व्यक्ति समूचे जनपद में प्रशिक्षण कार्यों में भागीदारी की है। इंटर कालेज पनुवानौला में आपने 22 वर्ष तक प्रवक्ता हिंदी पद पर रहते हुए

बच्चों को साहित्य के प्रति प्रोत्साहित किया। द्वाराहाट इंटर कालेज, इंटर कालेज नौगांव के साथ ही प्रारंभ में आपने राजकीय पालीटैक्निक द्वाराहाट में भी व्याख्यान दिए हैं। सेवानिवृत्ति के बाद आप अपने पैतृक गांव में रह रहे हैं। आपकी पत्नी श्रीमती गीता चौधरी अल्मोड़ा नगर पालिका की सदस्य तथा बूंगा की प्रधान भी रही। युवा काल में आपने अपने गांव बूंगा में हरिश्चंद्र नाटक आदि जागरूकता के नाटक प्रस्तुत किए। बालप्रहरी के आयोजनों में आपकी सक्रिय भूमिका रही है। आप कई सांस्कृतिक, साहित्यिक तथा सामाजिक संगठनों से जुड़े हैं।

सपंर्क: ग्राम-बूंगा पोस्ट-छतीना,द्वाराहाट,अल्मोड़ा-263653
मोबाइल- 9628278731

नए संरक्षक : हेम पंत

आज का युवा अपनी संस्कृति से नहीं जुड़ पा रहा है। प्रायः ये बात सुनने तथा पढ़ने को मिलती है। सही भी है। परंतु युवाओं का एक वर्ग ऐसा भी है जो अपने समाज, संस्कृति तथा साहित्य के लिए प्रयास कर रहा है। इसका जीता जागता उदाहरण रुद्रपुर,ऊधमसिंहनगर में एक बहुराष्ट्रीय कंपनी में कार्यरत भड़कटिया, पिथौरागढ़ निवासी हेम पंत जी हैं। अपने काम के साथ वे उत्तराखंड के परंपरागत बालगीतों के संकलन का कार्य कर रहे हैं। ई बुक के तौर पर उनके दो संकलन आ चुके हैं। पुस्तकाकार में बाल गीतों की पुस्तक प्रकाशनाधीन है। आप सामाजिक -सांस्कृतिक संगठन 'क्रिएटिव उत्तराखंड के सक्रिय सदस्य हैं। ऑनलाइन कुमाउनी साक्षात्कार श्रंखला 'म्योर पहाड़ मेरि पछ्याण' के माध्यम से आपने कुमाउनी भाषा को युवाओं तथा बच्चों को व्यवहार में लाने के लिए प्रेरित किया है। उत्तराखंड तथा उत्तराखंड से बाहर उच्च पदों पर कार्यरत कुमाउनी साहित्यकारों, अधिकारियों, जन प्रतिनिधियों तथा वरिष्ठ नागरिकों का ऑनलाइन कुमाउनी भाषा में साक्षात्कार करवाकर आपने युवा पीढ़ी को ये संदेश देने का कार्य किया है कि यह हमारी थाती है। बड़े-बड़े लोग भी इस बोली में बात करते हैं। अभी तक समूचे देश के 100 से अधिक प्रतिष्ठित कुमाउनी/प्रवासी कुमाउनी लोगों का साक्षात्कार कुमाउनी शब्द संपदा के माध्यम से आपने करवाया है।

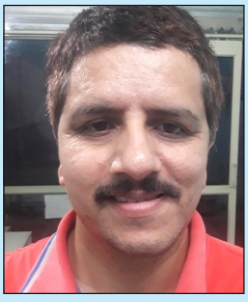

सपंर्क: ई 68, ग्रीन पार्क कालोनी, काशीपुर रोड, रूद्रपुर, ऊधमसिंह नगर
मोबाइल -9720454001

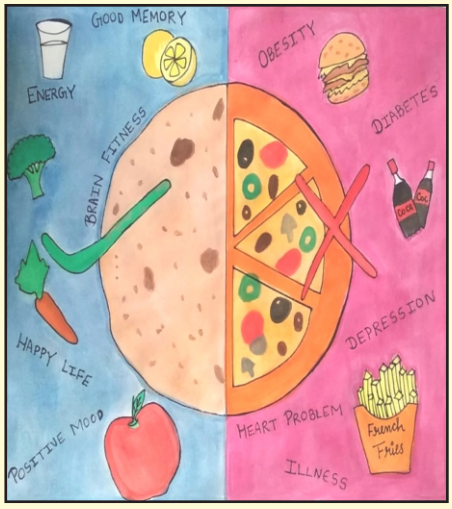

अर्ज रागिनी सारस्वत, कक्षा - 7
पिल्यूड पब्लिक स्कूल आगरा (उ.प्र.)

कुमारी देव रक्षित नेगी, कक्षा - 5
चौखुटिया, अल्मोड़ा

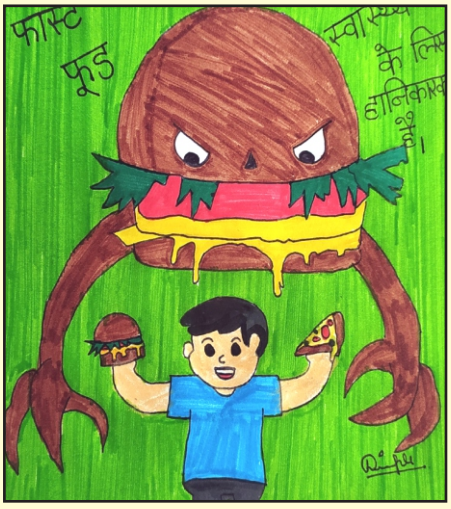

डिंपल पाठक, कक्षा - 9
द एसियन पब्लिक स्कूल, पिथौरागढ़

निरवी चावला, कक्षा - 4
सेक्टर -7, करनाल (हरि.)

नेहल जोशी, कक्षा - 2
राकवुड हाईस्कूल, उदयपुर (राज.)

वसुधा पंत
कोलंबस स्कूल, रूद्रपुर

तन्मय शर्मा, कक्षा - 5
तव एकेडमी दुगालखोला, अल्मोड़ा

श्रीमन भट्ट, कक्षा - 9, केन्द्रीय विद्यालय पौड़ी

अरूणिमा जैन, कक्षा - 7, बुडब्रिज स्कूल भवाली, नैनीताल

सेवा में,

प्रेषक : संपादक बालप्रहरी, अल्मोड़ा, उत्तराखंड। मो. 9412162950

RNI No. UTTHIN/2004/18604

मुद्रक : प्रकाश पब्लिकेशन, हल्द्वानी। मो. : 9412092336, 9761464264